वर्ष 08 अंक 03 माह जून, 2023 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

पीएम मोदी ने साबित किया झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए

16

आओ पर्यावरण की रक्षा कर धरती को स्वर्ग बनाएं

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - 2166/57 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2022-24

Make your life more Comfortable

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

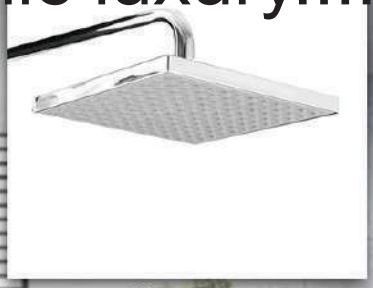

Mathura

Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 07, अंक - 3, जून 2023

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेन्द्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट (सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी,
आगरा-282004, उत्तर प्रदेश

पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**

लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com

जरूर पढ़ें
सुर्खियों में

22 | **मोदी ने साबित किया झुकती है दुनिया...**

नौ फरवरी 2014 को चेन्नई में कट्टनकुलाथुर में एसआरएम विश्वविद्यालय के डॉ. टीपी गणेशन ऑडिटोरियम में छात्रों को संबोधित करते हुए आज के देश के प्रधानमंत्री और उस समय के भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुनिया झुकती है, लेकिन इसे झुकाने वाला चाहिए। और ये आज उन्होंने साबित करके दिखा दिया। 2005 में नरेंद्र मोदी के गुजरात के सीएम थे। गुजरात दंगों को तीन साल हुए थे; गुजरात दंगों को लेकर उनके खिलाफ मामला भी चल रहा था।

विशेष
जीवन

06 | **कबीर ने गृहस्थी में संतता को जीना सिखाया**

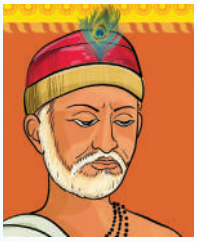

जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप रूढ़ियों एवं आडम्बरों में जकड़ा एवं अधंकारमय था तब कबीर एक रोशनी बनकर समाज को दिशा दी। वे अध्यात्म की सुदृढ़ परम्परा के संवाहक थे। एक तरफ मुसलमान शासकों की धर्मांधता...

जरूर पढ़ें
विशेष

18 | **शिक्षा देने के साथ बच्चों को जीने की कला...**

आज हमारा ध्यान बच्चों की शिक्षा पर है। उन्हें योग्य बनाने पर है। योग्य भी इतना की 100 में 95 अंक पाना भी स्वीकार नहीं। पेपर के निर्धारित पूरे अंक चाहिए। इन सबके बीच हम बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान नही दे पा रहे। बच्चों की शिक्षा पर माता-पिता का ध्यान ज्यादा है। बच्चों के शारीरिक विकास पर नहीं। बच्चों के मानसिक विकास पर नहीं, जबकि जरूरी है कि बच्चों को जीवन जीना सिखाया जाए। विपरीत समय में कैसे बचे, सुरक्षित रहे, या कोई नही बता रहा।

विशेष
चिंताजनक

30 | **लव जेहाद जैसी कुरीतियों के पक्ष में क्यों खड़े...**

अफसोस की बात यह है कि अक्सर यह देखने को मिलता है कि मुसलमानों का बड़ा तबका इस्लाम पर थोपी गईं कुरीतियों का विरोध करने की बजाए उसके साथ खड़ा रहता है। राजीव गांधी की सरकार के समय सुप्रीम कोर्ट ने एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला को गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया तो इन लोगों ने इतना बवाल काटा कि वोट...

विधानसभा
प्रेरणा

08 | **पैदा हों भारत में नंदन नीलेकणि जैसे दर्जनों...**

इंफोसिस टेक्नोलॉजीज के सह - संस्थापक नंदन नीलेकणि ने देश के धन कुबेरों के समक्ष एक अद्भुत मिसाल कायम की है। उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) बॉम्बे को 315 करोड़ रुपए दान कर दिये हैं। ये भारत में किसी भी पूर्व छात्र...

46 | कहानी

50 | कविता

सम्पादकीय

भारत ने दुनिया को दिया मानवता की भलाई का वरदान 'योग'

योग मानवता की भलाई का सबसे बड़ा वरदान है। इसे भारत ने दुनिया को दिया है। शारीरिक और मानसिक संतापों से वियोग के सर्वोत्तम माध्यम योग की शुरूआत भारत में हुई थी। यह ऐसी प्राकृतिक तकनीक है, जिसे मुफ्त में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व है। 2014 से योग वह सेतु बनकर उभरा है, जिसने भारतीय दर्शन से पूरी दुनिया को परिचित कराया।

आज पूरी दुनिया योग के माध्यम से भारत को विलक्षण शक्ति और सॉफ्ट पॉवर के रूप में देख रही है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का लोगो पंचतत्व का प्रतीक है। मुड़ा हुआ हाथ प्रस्तुत करता है मन और शरीर तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच के सामंजस्य को। सूर्य प्रतीक हैं ऊर्जा और प्रेरणा के। हरा पत्ता बताता है कि प्रकृति के बगैर दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए हर कोई प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन करते हुए हरियाली फैलाए। भूरा पत्ता प्रतीक है पृथ्वी का तो नीला अग्नि को इंगित करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरगामी सोच और अथक प्रयास का परिणाम है कि दुनिया अब भारत को योग गुरु के रूप में स्वीकार कर चुकी है। भारत ने अपने सॉफ्ट पॉवर योग से न सिर्फ देश के नागरिकों के कल्याण, बल्कि विश्व के कल्याण की भावना से दुनिया को परिचित कराया। यही कारण है कि भारत के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र में दुनिया के सर्वाधिक देशों के समर्थन और रिकॉर्ड से कम समय में 21 जून को योग के अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाने की स्वीकृति दी। योग पहले भी दुनिया में लोकप्रिय था। लेकिन संयुक्त राष्ट्र ने जब से योग को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दी है, यह जन आंदोलन बन गया और योग ने घर-घर दस्तक दे दी। आज दुनिया का शायद ही कोई देश होगा जहां पर योग के संबंध में कोई कार्यक्रम नहीं होता हो। योग ने दुनिया को 'इलनेस से वेलनेस' का रास्ता दिखाया है। हमारे ऋषियों-मुनियों ने योग के लिए 'समत्वम योग उच्यते' की परिभाषा दी थी। उन्होंने सुख-दुःख में समान रहने, संयम को एक तरह से योग का पैरामीटर बनाया था। इस पैरामीटर पर वैश्विक आपदा कोरोना के दौरान योग खरा उतरा। वसुधैव कुटुम्बकम प्राचीन काल से ही भारतीय विरासत के लिए मार्गदर्शन कराने वाला प्रकाश रहा है। हमारे लोकाचार एवं सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने इसके चारों ओर बुने गए हैं। भारत को उम्मीद है कि योग अभ्यास के माध्यम से वैश्विक समुदाय विभिन्न स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान खोजने में सक्षम होगा। इस वर्ष एक पृथ्वी एक परिवार एक भविष्य का वर्णन करती 'वसुधैव कुटुम्बकम के लिए योग' थीम पर आधारित नौवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारी पूरी कर ली गई है। इस साल दुनिया कई अनोखे कार्यक्रमों का साक्षी बनेगा। सबसे बड़ी बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयॉर्क में सामूहिक योग प्रदर्शन का नेतृत्व करेंगे। यहीं नौ वर्ष पहले 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव दिया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया। योग आज जन आंदोलन बन गया है। योग दिवस के हर गुजरते साल में योग की बढ़ती पहुंच देखी जा रही है। 2022 के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस में सामूहिक रूप से करीब 25 करोड़ लोगों ने योग किया था। इस साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस ओशन रिंग ऑफ योगा जैसे कई अद्वितीय कार्यक्रमों का साक्षी बनने जा रहा है। भारतीय नौसेना के जहाजों को दुनिया के नौ बंदरगाहों पर तैनात किया जाएगा और कॉमन योगा प्रोटोकॉल (सीवाईपी) के प्रदर्शन में भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। बंदरगाहों, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय भी उन देशों में सीवाईपी प्रदर्शन आयोजित करेगा। इस दिवस के नौवें संस्करण की एक और विशेषता है 'आर्कटिक से अंटार्कटिका तक योग।' 'योग भारतमाला' भी विशेष आकर्षणों में से एक है। इसमें भारतीय थल सेना, जल सेना और वायुसेना आईटीबीपी एवं बीएसएफ के साथ बीआरओ यूनिसन में योग प्रदर्शन की शृंखला बनाएगी। योग सागरमाला भारतीय तट रेखा पर योगाभ्यास का साक्षी बनेगा। आईएनएस विक्रांत की फ्लाइट डैक पर भी योगाभ्यास किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी ग्राम प्रधानों को पत्र लिखा है कि अपने निकटतम आंगनवाड़ी, स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों एवं स्कूलों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रमों में शामिल हों। इसके अलावा लगभग दो लाख आम सेवा केंद्र, राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत आयुष स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र, आयुष ग्रामों एवं अमृत सरोवरों में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को व्यापक स्तर मनाया जाएगा। योग इहलोक में मन को शांति कैसे मिले, शरीर स्वस्थ कैसे रहे, समाज में एकसूत्रता कैसे बनी रहे, उसकी ताकत देता है। यह परलोक का विज्ञान नहीं, इसी इहलोक का विज्ञान है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत के साथ मिलकर मोबाइल योग की परियोजना शुरू की है। इसमें 2030 तक सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का लक्ष्य संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों के तहत 'स्वस्थ रहें-गतिशील रहें' की अवधारणा पर रखा गया है। योग हमें स्ट्रेस से स्ट्रेंथ की ओर, नेगेटिविटी से क्रिएटिविटी का रास्ता दिखाता है। यह अवसाद से उमंग और प्रमाद से प्रसाद तक ले जाता है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने आयुष और योग को बढ़ावा देने के लिए ना सिर्फ आयुष मंत्रालय बनाया। बल्कि देश में आयुष आधारित आहार और जीवनशैली को बढ़ावा भी दे रही है। ■

> ***विज्ञान ने भी यह साबित किया है कि योग के माध्यम से हृदय, मस्तिष्क और अंतःस्रावी ग्रंथियों सहित शरीर में कई अंगों के कार्यों पर नियंत्रण करना संभव है। स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए बड़ी संख्या में महिलाएं योग की ओर रुख कर रही हैं। अब दिव्यांग भी समग्र व्यक्तित्व विकास, तनाव को दूर करने, मन को स्थिरता प्रदान करने के लिए योग का सहारा ले रहे हैं। स्वस्थ और खुशहाल मानवता के लिए योग के संबंध में समझ को और अधिक विकसित बनाना हमारी जिम्मेदारी है। इसलिए अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए हम सब प्रयास तेज करें, विभिन्न गतिविधियों में भाग लें।***

डॉ. वंदना पालीवाल

हमारा लक्ष्य

बेहतर सुविधा
बेहतर कनेक्टिविटी

6 एक्सप्रेसवे संचालित

डबल इंजन की सरकार
विकास की दोगुनी रफ़्तार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

संत कबीर जन्म जयन्ती
04 जून, 2023 के उपलक्ष्य में

कबीर ने गृहस्थी में संतता को जीना सिखाया

ललित गर्ग

जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप रूढ़ियों एवं आडम्बरों में जकड़ा एवं अधंकारमय था तब कबीर एक रोशनी बनकर समाज को दिशा दी। वे अध्यात्म की सुदृढ़ परम्परा के संवाहक थे। एक तरफ मुसलमान शासकों की धर्मांधता से जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी और दूसरी तरफ हिंदूओं के कर्मकांडों, विधानों एवं पाखंडों से धर्म-बल का ह्रास हो रहा था, ऐसे समय में कबीर धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाया। कबीर ने सगुण-साकार भक्ति पर जोर दिया है, जिसमें निर्गुण निहित है। हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और सम्प्रदाय का सामान्य से सामान्य व्यक्ति हो या कोई विशिष्ट व्यक्ति हो -सभी में विशिष्ट गुण खोज लेने की दृष्टि उनमें थी। गुणों के आधार से, विश्वास और प्रेम के आधार से व्यक्तियों में छिपे सद्गुणों को वे पुष्प में से मधु की भाँति उजागर करने में सक्षम थे। परस्पर एक-दूसरे के गुणों को देखते हुए, खोजते हुए उनको बढ़ाते चले जाना कबीर के विश्व मानव या वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन का द्योतक है।

कबीर ने मन, चेतना, दंड, भय, सुख और मुक्ति जैसे सूक्ष्म विषयों पर भी किसी गंभीर मनोवैज्ञानिक की तरह विचार किया था और व्यक्ति को अध्यात्म की एकाकी यात्रा का मार्ग सुझाया था। कबीर ने लोगों को एक नई राह दिखाई। घर-गृहस्थी में रहकर और गृहस्थ जीवन जीते हुए भी शील-सदाचार और पवित्रता का जीवन जिया जा सकता है तथा आध्यात्मिक ऊंचाइयों को प्राप्त किया जा सकता है। एक तरह से कबीर ने गृहस्थी में संतता को जीना सिखाया। वे किसी भी सम्प्रदाय और रूढियों की परवाह किये बिना खरी बात करते थे। कुछ लोगों का कहना है कि वे जन्म से मुसलमान थे और युवा अवस्था में स्वामी रामानंद के प्रभाव से उन्होंने हिन्दू धर्म की विशेषताओं को स्वीकारा। कबीर ने हिन्दु, मुसलमान का भेद मिटाकर हिन्दू भक्तों तथा मुसलमान फकीरों के साथ सत्संग किया और दोनों की अच्छी बातों को आत्मसात किया। उनके जीवन में कुरान और वेद ऐसे एकाकार हो गये कि कोई भेदरेखा भी नहीं रही। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे पर उनकी बोली बातों को उनके अनुयायियों ने लिपिबद्ध किया जो लगभग 80 ग्रंथों के रूप में उपलब्ध है। कबीर ने भाईचारे, प्रेम और सद्भावना का संदेश दिया है। उनके प्रेरक एवं जीवन निर्माणकारी उपदेश उनकी साखी, रमैनी, बीजक, बावन अक्षरी, उलट बासी में देखे जा सकते हैं। महात्मा कबीर ने स्वयं को ही पग-पग पर परखा और निथारा। स्वयं को भक्त माना और उस परम ब्रह्म परमात्मा का दास कहा। वह अपने और परमात्मा के मिलन को ही सब कुछ मानते। शास्त्र और किताबें उनके लिये निरर्थक और पाखण्ड था, सुनी-सुनाई तथा लिखी-लिखाई बातों को मानना या उन पर अमल करना उनको गंवारा नहीं। इसीलिये उन्होंने जो कहा अपने अनुभव के आधार पर कहा, देखा और भोगा हुआ ही व्यक्त किया, यही कारण है कि उनके दोहे इंसान को जीवन की नई प्रेरणा देते थे। कबीर शब्दों का महासागर है, ज्ञान का सूरज हैं। उनके बारे में जितना भी कहो, थोड़ा है, उन पर लिखना या बोलना असंभव जैसा है। सच तो यह है कि बूंद-बूंद में सागर है और किरण-किरण में सूरज। उनके हर शब्द में गहराई है, सच का तेज और ताप है। संत शिरोमणि कबीर सर्वधर्म सद्भाव के प्रतीक थे, साम्प्रदायिक सद्भावना एवं सौहार्द को बल दिया। उनको हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही संप्रदायों में बराबर का सम्मान प्राप्त था। दोनों संप्रदाय के लोग उनके अनुयायी थे। यही कारण था कि उनकी मृत्यु के बाद उनके शव को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। हिन्दू कहते थे कि उनका अंतिम संस्कार हिन्दू रीति से होना चाहिए और मुस्लिम कहते थे कि मुस्लिम रीति से। किंतु इसी छीना-झपटी में जब उनके शव पर से चादर हट गई, तब लोगों ने वहाँ फूलों का ढेर पड़ा देखा। यह कबीरजी की ओर से दिया गया बड़ा ही चमत्कारी और सशक्त संदेश था कि इंसान को फूलों की तरह होना चाहिए- सभी धर्मों के लिए एक जैसा भाव रखने वाले, सभी को स्वीकार्य। बाद में वहाँ से आधे फूल हिन्दुओं ने ले लिए और आधे मुसलमानों ने तथा अपनी-अपनी रीति से उनका अंतिम संस्कार किया।

अध्यात्म के महासूर्य कबीर ने कहा है, बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय। जो मन खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय। इस दोहे में कबीर ने बताया है कि व्यर्थ में हम किसी दूसरे में दोष क्यों ढूंढ़ने लगते हैं? हमें अपने अंदर झांक कर देखना चाहिए कि कहीं मुझमें कोई गलती तो नहीं। हमारी सबसे बड़ी गलतफहमी हमारी यह सोच होती है कि हम ही सही हैं, हमसे कभी भूल नहीं हो सकती। दरअसल, यह हमारा अहं है, जो हमें इस तरह सोचने पर मजबूर करता है। अपनी गलतियों के कारण ही हम दूसरों में दोष खोजते हैं। कबीर ने मानव चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। श्रीकृष्ण, श्रीराम, महावीर, बुद्ध, जीसस के साथ-ही-साथ भारतीय अध्यात्म आकाश के अनेक संतों-आदि शंकराचार्य, नानक, रैदास, मीरा आदि की परंपरा में कबीर ने भी धर्म की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य किया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके दोहों-विचारों से अस्पर्शित रहा हो। अपनी कथनी और करनी से मृतप्रायः मानव जाति के लिए कबीर ने संजीवनी का कार्य किया। इतिहास गवाह है, इंसान को ठोंक-पीट कर इंसान बनाने की घटना कबीर के काल में, कबीर के ही हाथों हुई। शायद तभी कबीर कवि मात्र ना होकर युगपुरुष और युगस्रष्टा कहलाए। मसि-कागद छुए बगैर ही वह सब कह गए जो श्रीकृष्ण ने कहा, नानक ने कहा, ईसा मसीह ने कहा और मुहम्मद साहब ने कहा। आश्चर्य की बात, अपने साक्ष्यों के प्रसार हेतु कबीर सारी उम्र किसी शास्त्र या पुराण के मोहताज नहीं रहे। न तो किसी शास्त्र विशेष पर उनका भरोसा रहा और ना ही उन्होंने जीवन भर स्वयं को किसी शास्त्र में बाँधा। कबीर ने समाज की दुखती रग को पहचान लिया था। वे जान गए थे कि हमारे सारे धर्म और मूल्य पुराने हो गए हैं। नई समस्याएँ नए समाधान चाहती हैं। नए प्रश्न, नए उत्तर चाहते हैं। नए उत्तर, पुरानेपन से छुटकारा पाकर ही मिलेंगे। कबीर ने धरती और धरती के लोगों की धड़कन को सुना। धड़कनों के अर्थ और भाव को समझा। इन धड़कनों को वे जितना आत्मसात करते चले, उतना ही उनका जीवन ज्ञान एवं संतता का ग्रंथ बनता गया। यह जीवन ग्रंथ शब्दों और अक्षरों का जमावड़ा मात्र नहीं, बल्कि इसमें उन सच्चाइयों एवं जीवन के नए अर्थों-आयामों का समावेश है, जो जीवन को शांत, सुखी एवं उन्नत बनाने के साथ-साथ जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। उनके अनुभवों और विचारों ने एक नई दृष्टि प्रदान की। इस नई दृष्टि को एक नए मनुष्य का, एक नए जगत का, एक नए युग का सूत्रपात कहा जा सकता है। कबीर भारत की उज्ज्वल गौरवमयी संत परंपरा में सर्वाधिक समर्पित एवं विनम्र संत हैं। वे गुरुओं के गुरु थे, उनका फक्कड़पन और पुरुषार्थ, विनय और विवेक, साधना और संतता, समन्वय और सहअस्तित्व की विलक्षण विशेषताएं युग-युगों तक मानवता को प्रेरित करती रहेगी। ■

इंफोसिस टेक्नोलॉजीज के सह - संस्थापक नंदन नीलेकणि ने देश के धन कुबेरों के समक्ष एक अद्भुत मिसाल कायम की है। उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) बॉम्बे को

315

करोड़ रुपए दान कर दिये हैं।

पैदा हों भारत में नंदन नीलेकणि जैसे दर्जनों दानवीर

अजय शर्मा

इंफोसिस टेक्नोलॉजीज के सह - संस्थापक नंदन नीलेकणि ने देश के धन कुबेरों के समक्ष एक अद्भुत मिसाल कायम की है। उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) बॉम्बे को 315 करोड़ रुपए दान कर दिये हैं। ये भारत में किसी भी पूर्व छात्र की ओर से अपने इंस्टीट्यूट या कॉलेज को किया गया सबसे बड़ा दान है। इससे पहले भी, उन्होंने आईआईटी बॉम्बे को 85 करोड़ रुपए दान किया था। यानी अब तक वो आईआईटी बॉम्बे को 400 करोड़ रुपये का दान कर चुके हैं। वे इसी संस्थान के छात्र रहे हैं। दरअसल देश के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के सफल छात्रों को अपने शिक्षण संस्थानों की आर्थिक मदद करनी भी चाहिए। इन संस्थानों को सरकार की मदद के सहारे पर नहीं छोड़ा जा सकता है। सरकार की अपनी सीमाएं हैं। अमेरिका में पूर्व छात्र अपने कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की भरपूर मदद करते हैं। पूर्व छात्रों की मदद से ही उनके शिक्षण संस्थानों में रिसर्च और दूसरी सुविधाएं बढ़ाई जा सकती हैं। आगे बढ़ने से पहले बता दें कि नीलकेणी की सबसे बड़ी कामयाबी आधार कार्ड है। देश के हर नागरिक को एक विशिष्ठ पहचान संख्या या यूनिक आइडेंटीफिकेशन नम्बर को उपलब्ध करवाने की योजना को उन्होंने ही सफलतापूर्वक लागू करवाया। तो हम पहले बात कर रहे थे कि समाज के सफल लोगों, जिनमें उद्यमी, कारोबारी, नौकरशाह आदि शामिल हैं, उनको शिक्षा के मंदिरों का साथ देना चाहिए जहाँ से वे पढ़े हैं और आज सफल उद्यमियों में शुमार हैं।

देखिए, नंदन नीलेकणि सिर्फ मुनाफा कमाने वाले उद्यमियों में से नहीं हैं। वे बार-बार साबित करते हैं कि वे अलग तरह के उद्यमी हैं। भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के आईटी सेक्टर में अपनी खास पहचान रखने वाली इंफोसिस टेक्नोलॉजी ने अपनी स्थापना के 30 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए अपने हजारों कर्मियों को ई-सोप्स के तोहफे से नवाजा था। कंपनी के कर्मियों को उनके कार्यकाल के साल के आधार पर ई-सॉप्स दिया गया था। इंफोसिस ने ही देश में ई-सॉप्स की परम्परा चालू की थी। भारत के आईटी सेक्टर के पितृ पुरुष यानी एन. नारायणमूर्ति और नंदन नीलेकणि जैसी गजब की शख्सियतों के मार्गदर्शन में आई टी सेक्टर की सबसे सम्मानित बनी इस आईटी कंपनी ने ई-सॉप्स की शुरूआत की थी। कहने की जरूरत नहीं है कि इंफोसिस के इस फैसले से मुलाजिमों में मालिकाना हक की भावना पैदा हुई। तो बहुत साफ है नीलकेणी कुछ हटकर ही करते रहते हैं।

इस बीच, सबको पता है कि भारत या भारत से बाहर जाकर बड़ी कामयाबी हासिल करने वालों में आईआईटी में पढ़े छात्रों की तादाद बहुत अधिक है।

होमी भाभा, सतीश धवन, जी. एन. रामचंद्रन, सर सी. वी. रमण, राजा रामन्ना, सी. एन. आर. राव, विक्रम साराभाई, मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जैसे महान विज्ञान से जुड़े व्यक्तित्व इस संस्थान के विद्यार्थी रहे या किसी न किसी रूप में इससे जुड़े रहे हैं। अगर टाटा समूह ने उदारता से इस संस्थान की स्थापना के लिए धन की व्यवस्था न की होती तो देश को यह संस्थान शायद न मिल पाता।

एन. नारायणमूर्ति खुद आईआईटी कानपुर से हैं। ट्वीटर के पूर्व सीईओ पराग अग्रवाल भी पढ़े हैं आईआईटी, मुंबई में, इसने देश-दुनिया को चोटी के सीईओ से लेकर इंजीनियर दिए हैं। आप नए उद्यमियों, खासतौर पर ई-कॉमर्स से जुडी बात करें, और सचिन बंसल और बिन्नी बंसल की चर्चा न करें ये तो नहीं हो सकता। इन दोनों ने फ्लिपकार्ट की स्थापना की थी, ये दोनों आईआईटी, दिल्ली में रहे। भारत में पहली आईआईटी की स्थापना कोलकाता के पास स्थित खड़गपुर में 1950 में हुई थी। भारत की संसद ने 15 सितंबर 1956 को आईआईटी एक्ट को मंजूरी देते हुए इसे "राष्ट्रीय महत्व के संस्थान" घोषित कर दिया। इसी तर्ज पर अन्य आईआईटी मुंबई (1958), मद्रास (1959), कानपुर (1959), तथा नई दिल्ली (1961) में स्थापित हुंई। फिर गुवाहाटी में आईआईटी की स्थापना हुई। सन 2001 में रुड़की स्थित रुड़की विश्वविद्यालय को भी आईआईटी का दर्जा दिया गया। आईआईटी में पढ़े विद्यार्थी सारी दुनिया में छाए हुए हैं। ये सब मोटी पगार ले रहे हैं या फिर अपना बिजनेस करके खूब कमा रहे हैं। इन सबको भी अपनी आईआईटी के अलावा उन स्कूलों की भी मदद करनी चाहिए जहाँ से पढ़े हैं। ये याद रखा जाना चाहिए कि किसी भी इंसान की ज्ञान पाने की नींव तो उसके स्कूल में ही रखी जाती है। इसलिए स्कूलों के महत्व को समझा जाना चाहिए। हमें अपनी सभी कॉलेज और विश्वविद्यालयो को सेंट स्टीफंस कॉलेज,आईआईटी और आईआईएम के स्तर का बनाना होगा। इन्हें आधुनिक सुविधाओं से लैस करना होगा। हां, इस स्थिति तक पहुंचने के लिए चुनौती यह रहेगी कि इनमें बेहतरीन फैक्ल्टी की नियुक्ति हो। हमें उन अध्यापकों को प्रोत्साहित करना होगा जो अपने शिष्यों के प्रति समर्पण का भाव रखते हैं। अध्यापकों को अपने को लगातार अपडेट रखना होगा। आमतौर पर हमारे यहां बहुत से अध्यापक एक बार स्थायी नौकरी मिलने पर लिखते-पढ़ते नहीं हैं।

नंदन नीलेकणि के बहाने बिल गेट्स की भी बात करने का मन कर रहा है। वे कॉलेज ड्राप आउट हैं। वे माइक्रोसॉफ्ट के निदेशक मंडल से इस्तीफा देकर पूरी तरह से मानव सेवा में लग गए हैं। याद रख लें कि पैसे वाले तो हर काल में रहे हैं। लेकिन, गेट्स सारी दुनिया के लिए उदाहरण पेश करते हैं। बिल गेट्स का फोकस स्वास्थ्य, विकास और शिक्षा जैसे सामाजिक और परोपकारी कार्यों पर रहता है। वे विश्व से गरीबी और निरक्षरता खत्म करने का ख्वाब देखते हैं। नीलकेणी ने एक तरह से भारत के धनी समाज को परोपकार करने के लिए प्रेरित किया है। अन्य धनी लोगों को शिक्षा के प्रसार-प्रसार के अलावा नए अस्पतालों के निर्माण या पहले से चल रहे अस्पतालों के आधुनिकीकरण के लिए धन देने से पीछे नहीं रहना चाहिए। टाटा समूह के सहयोग से प्रख्यात दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (डी स्कूल) में रतन टाटा लाइब्रेरी स्थापित की गई थी। इसे अर्थशास्त्र और संबंधित विषयों में अध्ययन और अनुसंधान के लिए आदर्श लाइब्रेरी माना जाता है। टाटा समूह ने ही बैंगलुरू के इंडियन इस्टीट्यूट ऑफ साइंस की स्थापना करने में निर्णायक भूमिका निभाई थी। इसकी परिकल्पना एक शोध संस्थान या शोध विश्वविद्यालय के रूप में जमशेद जी टाटा ने उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में की थी। मजे की बात यह है कि इस विशाल आईआईएस कैंपस का निर्माण जमशेद जी ने मात्र स्वामी विवेकानंद के एक पत्र को मिलने पर करवा दिया था जिसमें स्वामी जी ने टाटा को लिखा था कि आप जमशेदपुर के स्टील प्लांट से अच्छा पैसा कमा रहे हो, यह अच्छी बात है लेकिन दक्षिण भारत में साइंस की पढ़ाई के लिये एक अच्छे संस्थान की जरूरत है, वह स्थापित करो। इसके लगभग तेरह वर्षों के अंतराल के पश्चात 27 मई 1909 को इस संस्थान का जन्म हुआ। होमी भाभा, सतीश धवन, जी. एन. रामचंद्रन, सर सी. वी. रमण, राजा रामन्ना, सी. एन. आर. राव, विक्रम साराभाई, मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया, ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जैसे महान विज्ञान से जुड़े व्यक्तित्व इस संस्थान के विद्यार्थी रहे या किसी न किसी रूप में इससे जुड़े रहे हैं। अगर टाटा समूह ने उदारता से इस संस्थान की स्थापना के लिए धन की व्यवस्था न की होती तो देश को यह संस्थान शायद न मिल पाता। तो लब्बो लुआब यह है कि भारत के धनी लोगों को राष्ट्र निर्माण में बढ़-चढ़कर भाग लेना होगा। अब भारत को एक नहीं दर्जनों नंदन नीलेकणि मिलने चाहिए। ■

विश्व माता-पिता दिवस- 01 जून, 2023 के उपलक्ष्य में

माता-पिता के जीवन में उदासी नहीं, उमंग हो

विश्व माता-पिता (अभिभावक) दिवस 1 जून को मनाया जाता है। यह विश्वभर के उन अभिभावकों को सम्मान देने का दिन है, जो अपने बच्चों के प्रति निस्वार्थ भाव से समर्पित हैं तथा जीवनभर त्याग करते हुए बच्चों का पालन-पोषन करते हैं। बच्चों की सुरक्षा, विकास व समृद्धि के बारे में सोचते हैं। बावजूद बच्चों द्वारा माता-पिता की लगातार उपेक्षा, दुर्व्यवहार एवं प्रताड़ना की स्थितियों बढ़ती जा रही है, जिन पर नियंत्रण के लिये यह दिवस मनाया जाता है।

मधुसूदन भट्ट

भारत में जहां कभी संतानें पिता के चेहरे में भगवान और मां के चरणों में स्वर्ग देखती थीं, आज उसी देश में संतानों की उपेक्षा के कारण बड़ी संख्या में बुजुर्ग माता-पिता की स्थिति दयनीय होकर रह गई है। बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार किस सीमा तक, कितना, किस रूप में और कितनी बार होता है तथा इसके पीछे कारण क्या हैं, इस पर हुए शोध में पता चला कि 82 प्रतिशत पीड़ित बुजुर्ग अपने परिवार के सम्मान के चलते इसकी शिकायत नहीं करते। शोध के निष्कर्षों के अनुसार अभिभावकों पर होने वाले अत्याचार एवं दुर्व्यवहार की स्थितियां चिन्तनीय है। जिनमें परिजनों एवं विशेषतः बच्चों के हाथों बुजुर्ग अपमान (56 प्रतिशत), गाली-गलौच (49 प्रतिशत), उपेक्षा (33 प्रतिशत), आर्थिक शोषण (22 प्रतिशत) और शारीरिक उत्पीड़न का शिकार (12 प्रतिशत) होते हैं और ऐसा करने वालों में बहुओं (34 प्रतिशत) की अपेक्षा बेटों (52 प्रतिशत) की संख्या अधिक है जबकि पिछले सर्वेक्षणों में बहुओं की संख्या अधिक पाई गयी है। प्रौद्योगिकी ने भी बुजुर्गों की उपेक्षा और उनसे दुर्व्यवहार में अपना योगदान दिया है और संतानें अपने माता-पिता की अपेक्षा मोबाइल फोन और कम्प्यूटरों को अधिक तवज्जो देती हैं। इसका बुजुर्गों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। 60 प्रतिशत से अधिक बुजुर्गों के अनुसार बच्चों और पोतों की मोबाइल फोनों और कम्प्यूटरों पर व्यस्तता के कारण वे उनके साथ कम समय बिता पाते हैं और 78 प्रतिशत बुजुर्गों ने कहा कि सोशल मीडिया ने परिवार के साथ बिताया जाने वाला उनका समय छीन लिया है। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि भारत में आज अधिकांश बुजुर्गों की स्थिति कितनी दयनीय होकर रह गई है। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कमलदीप सिंह का पूर्व में कहना है कि उनके पास हर समय संतानों द्वारा बुजुर्गों की उपेक्षा संबंधी 4-5 शिकायतें निपटारे के लिए आती हैं जो इस समस्या की गंभीरता का प्रमाण है। उनके अनुसार बुजुर्गों की उपेक्षा संबंधी यदि ये आंकड़े सही हैं तो इसका मतलब यह है कि हमारे लिए न सिर्फ अपने बुजुर्गों के सम्मानजनक जीवन-यापन के लिए बहुत कुछ करना बाकी है बल्कि बच्चों में अपने माता-पिता और बुजुर्गों का सम्मान करने के संस्कार भरना भी अत्यंत आवश्यक है। लिहाजा बच्चों को बचपन से ही इसकी शिक्षा देनी चाहिए। संवेदनहीन होते परिवारों की इन स्थितियों को देखते हुए केंद्र और राज्य सरकारों ने अभिभावक और वरिष्ठ नागरिक देखभाल व कल्याण संबंधी कानून बनाए हैं, भारत में अभिभावकों की सेवा और उनकी रक्षा के लिए भी कई कानून और नियम बनाए गए हैं। 2007 में माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण विधेयक संसद में पारित किया गया है। इसमें माता-पिता के भरण-पोषण, वृद्धाश्रमों की स्थापना, चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था और वरिष्ठ नागरिकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। लेकिन इन सब के बावजूद हमें अखबारों और समाचारों की सुर्खियों में माता-पिता की हत्या, लूटमार, उत्पीड़न एवं उपेक्षा की घटनाएं देखने को मिल ही जाती है। जरूरत केवल भारत में ही नहीं है बल्कि विश्व में अभिभावकों के साथ होने वाले अन्याय, उपेक्षा और दुर्व्यवहार पर लगाम लगाने की भी है। प्रश्न है कि दुनिया में अभिभावक दिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई? क्यों अभिभावकों की उपेक्षा एवं प्रताड़ना की स्थितियां बनी हुई है? चिन्तन का महत्वपूर्ण पक्ष है कि अभिभावकों की उपेक्षा के इस गलत प्रवाह को कैसे रोके। क्योंकि सोच के गलत प्रवाह ने न केवल अभिभावकों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है। विचारणीय है कि अगर आज हम माता-पिता का अपमान करते हैं, तो कल हमें भी अपमान सहना होगा। समाज का एक सच यह है कि जो आज जवान है उसे कल माता-पिता भी होना होगा और इस सच से कोई नहीं बच सकता। हमें समझना चाहिए कि माता-पिता परिवार एवं समाज की अमूल्य विरासत होते हैं। आखिर आज के माता-पिता अपने ही घर की दहलीज पर सहमे-सहमे क्यों खड़े हैं, उनकी आंखों में भविष्य को लेकर भय क्यों हैं, असुरक्षा और दहशत क्यों है, दिल में अन्तहीन दर्द क्यो है? इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से माता-पिता को मुक्ति दिलानी होगी। सुधार की संभावना हर समय है। हम पारिवारिक जीवन में माता-पिता को उचित सम्मान दें, इसके लिये सही दिशा में चले, सही सोचें, सही करें। इसके लिये आज विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति की जरूरत है। विश्व में इस दिवस को मनाने के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु सभी का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि वे अपने माता-पिता के योगदान को न भूलें और उनको अकेलेपन की कमी को महसूस न होने दें। हमारा भारत तो माता-पिता को भगवान के रूप में मानता है। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण है कि माता-पिता की आज्ञा से भगवान श्रीराम जैसे अवतारी पुरुषों ने राजपाट त्याग कर वनों में विचरण किया, मातृ-पितृ भक्त श्रवण कुमार ने अपने अन्धे माता-पिता को काँवड़ में बैठाकर चारधाम की यात्रा कराई। फिर क्यों आधुनिक समाज में माता-पिता और उनकी संतान के बीच दूरियां बढ़ती जा रही है। आज के माता-पिता समाज-परिवार से कटे रहते हैं और सामान्यतः इस बात से सर्वाधिक दुःखी है कि जीवन का विशद अनुभव होने के बावजूद कोई उनकी राय न तो लेना चाहता है और न ही उनकी राय को महत्व देता है। समाज में अपनी एक तरह से अहमियत न समझे जाने के कारण हमारे माता-पिता दुःखी, उपेक्षित एवं त्रासद जीवन जीने को विवश है। माता-पिता को इस दुःख और कष्ट से छुटकारा दिलाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। जैसाकि जेम्स गारफील्ड ने कहा भी है कि यदि वृद्धावस्था की झूरियां पड़ती है तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो। कभी भी आत्मा को वृद्ध मत होने दो। तथाकथित व्यक्तिवादी एवं सुविधावादी सोच ने समाज की संरचना को असभ्य, अशालीन, बदसूरत एवं संवेदनहीन बना दिया है। सब जानते हैं कि आज हर इंसान समाज में खुद को बड़ा दिखाना चाहता है और दिखावे की आड़ में माता-पिता उसे अपनी शान-शौकत एवं सुंदरता पर एक काला दाग दिखते हैं। आज बन रहा समाज का सच डरावना एवं त्रासद है। डिजरायली का मार्मिक कथन है कि यौवन एक भूल है, पूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चाताप। माता-पिता के जीवन को पश्चाताप का पर्याय न बनने दे। आज माता-पिता को अकेलापन, परिवार के सदस्यों द्वारा उपेक्षा, तिरस्कार, कटुक्तियां, घर से निकाले जाने का भय या एक छत की तलाश में इधर-उधर भटकने का गम हरदम सालता रहता। अभिभावकों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। अभिभावकों के लिये भी यह जरूरी है कि वे वार्धक्य को ओढ़े नहीं, बल्कि जीएं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नारे सबका साथ, सबका विकास एवं सबका विश्वास की गूंज और भावना अभिभावकों के जीवन में उजाला बने, तभी नया भारत निर्मित होगा। ■

अभिभावकों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं।

नेताजी सुभाष जीवित होते तो देश का बंटवारा न होने देते

ब्रजेश शर्मा

नेताजी सुभाष चंद्र बोस जीवित होते तो क्या पाकिस्तान कभी बन पाता? यह बहस लंबे समय से चल रही है। इस विषय पर इतिहासकारों और विद्वानों में मतभेद भी रहे हैं। अब इस बहस में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल भी शामिल हो गए हैं। उन्होंने हाल ही में कहा कि "अगर नेताजी सुभाष चंद्र बोस जिंदा होते तो भारत का बंटवारा नहीं होता। क्या वे मोहम्मद अली जिन्ना को समझा पाते कि भारत के बंटवारे से किसी को कुछ लाभ नहीं होगा? यह सवाल अपने आप में काल्पनिक होते हुए भी महत्वपूर्ण हैं। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन काल में ही अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान का प्रस्ताव पारित किया था। जिन्ना ने 23 मार्च, 1940 को लाहौर के बादशाही मस्जिद के ठीक आगे बने मिन्टो पार्क में जनसभा को संबोधित करते हुए अपनी घनघोर सांप्रदायिक सोच को प्रकट कर दिया था। जिन्ना ने सम्मेलन में अपने दो घंटे लंबे बेहद आक्रामक भाषण में हिन्दुओं को पानी पी पीकर कोसा था। कहा था- " हिन्दू - मुसलमान दो अलग धर्म हैं। दो अलग विचार हैं। दोनों की परम्पराएं और इतिहास अलग हैं। दोनों के नायक अलग हैं। इसलिए दोनों कतई साथ नहीं रह सकते।" जिन्ना ने अपनी तकरीर के दौरान लाला लाजपत राय से लेकर दीनबंधु चितरंजन दास तक को अपशब्द कहे। बेशक, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने जिन्ना के भाषण के अंश पढ़े होंगे।

डोभाल यह भी कहते हैं, "नेताजी ने अपने जीवन में कई बार साहस दिखाया क उनके अंदर महात्मा गांधी को चुनौती देने का साहस भी था। वह भी तब जबकि महात्मा गांधी अपने राजनीतिक जीवन के शीर्ष पर थे। फिर बोस ने गाँधी जी के उम्मीदवार को भरी बहुमत से हरा कर कांग्रेस छोड़ दी थी।" डोभाल ने आगे कहा, "मैं अच्छा या बुरा नहीं कह रहा हूं, लेकिन भारतीय इतिहास और विश्व इतिहास के ऐसे लोगों में बहुत कम समानताएं हैं, जिनमें धारा के खिलाफ बहने का साहस था और आसान नहीं था।" सुभाष चंद्र बोस के रहते भारत का विभाजन नहीं होता। इस मसले पर बहस होती रहेगी। जिन्ना ने कहा था कि मैं केवल एक नेता को स्वीकार कर सकता हूं और वह सुभाष चंद्र बोस हैं। नेताजी के महान प्रयासों पर कोई संदेह नहीं कर सकता, महात्मा गांधी भी उनेक प्रशंसक थे, लेकिन लोग तो अक्सर आपके परिणामों के माध्यम से आपको आंकते हैं। तो क्या सुभाष चंद्र बोस का पूरा प्रयास व्यर्थ गया। इतिहासकार तो नेताजी के प्रति घोर निर्दयी रहें हैं। पाकिस्तानी लेखक फारूक अहमद दार ने अपनी किताब जिन्नाज पाकिस्तानः फोरमेशन एंड चैलेंजेंस में लिखा है कि मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के हक में प्रस्ताव पारित करने के बाद नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से जिन्ना से आग्रह किया था कि वे अलग देश की मांग को छोड़ दें। उन्होंने जिन्ना को भारत के आजाद होने के बाद पहला प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव भी दिया था। कुछ इस तरह का प्रस्ताव कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सी. राजागोपालचारी ने भी जिन्ना को दिया था। जाहिर है कि जिद्दी जिन्ना ने नेताजी की पेशकश पर सकारात्मक उत्तर नहीं दिया। जिन्ना तो भारत को तोड़ने पर आमादा था। इसके बाद का इतिहास सबको मालमू है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस पेशावर के रास्ते देश से अफगानिस्तान के रास्ते बाहर चले गए, भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्ति दिलवाने के लिए। वे दुनिया के अनेक देशों में रहे। उन्होंने वीर सावरकर और रस बिहारी बोस की प्रेरणा से आजाद हिन्द फौज का गठन किया। जाहिर है कि देश से बाहर जाने के बाद वे जिन्ना या मुस्लिम लीग की गतिविधियों से लगभग दूर हो गए। अफसोस कि उनकी एक विमान हादसे में 1945 में मृत्यु हो जाती है। यहां पर कुछ सवाल मन में तो आते हैं। जैसे कि अगर उनकी मृत्यु नहीं होती तो जिन्ना के 16 अगस्त 1946 के डायरेक्ट एक्शन के आह्वान को लेकर किस तरह की प्रतिक्रिया होती। जिन्ना ने 16 अगस्त,1946 के लिए डायरेक्ट एक्शन का आहवान किया था। एक तरह से वह हिन्दुओं के खिलाफ दंगों की शुरूआत थी। ■

दरअसल नेताजी सुभाष चंद्र बोस का मुसलमानों के बीच में जबरदस्त असर था। आजाद हिन्द सेना में उनके एक अहम साथी शाहनवाज खान थे। उनके अलावा भी आजाद हिन्द सेना में मुसलमानों की तादाद बहुत अधिक थी। नेताजी सुभाष की शख्सियत बेहद चमत्कारी और सेक्युलर थी। देश के बंटवारे का असर बंगाल और पंजाब पर ही हुआ। ये ही बंटे। बंगाल तो नेताजी सुभाष चंद्र बोस का गृह प्रदेश था। इन दोनों राज्यों में मुसलमान और सिख उन्हें अपना नायक मानते थे। तो कह सकते हैं कि वे मुस्लिम लीग के लिए एक बड़ी चुनौती तो अवश्य बनते। बहरहाल, अजीत डोभाल ने एक महत्वपूर्ण बहस को फिर से जिंदा कर दिया है। इस पर गहन अध्ययन होना चाहिए।

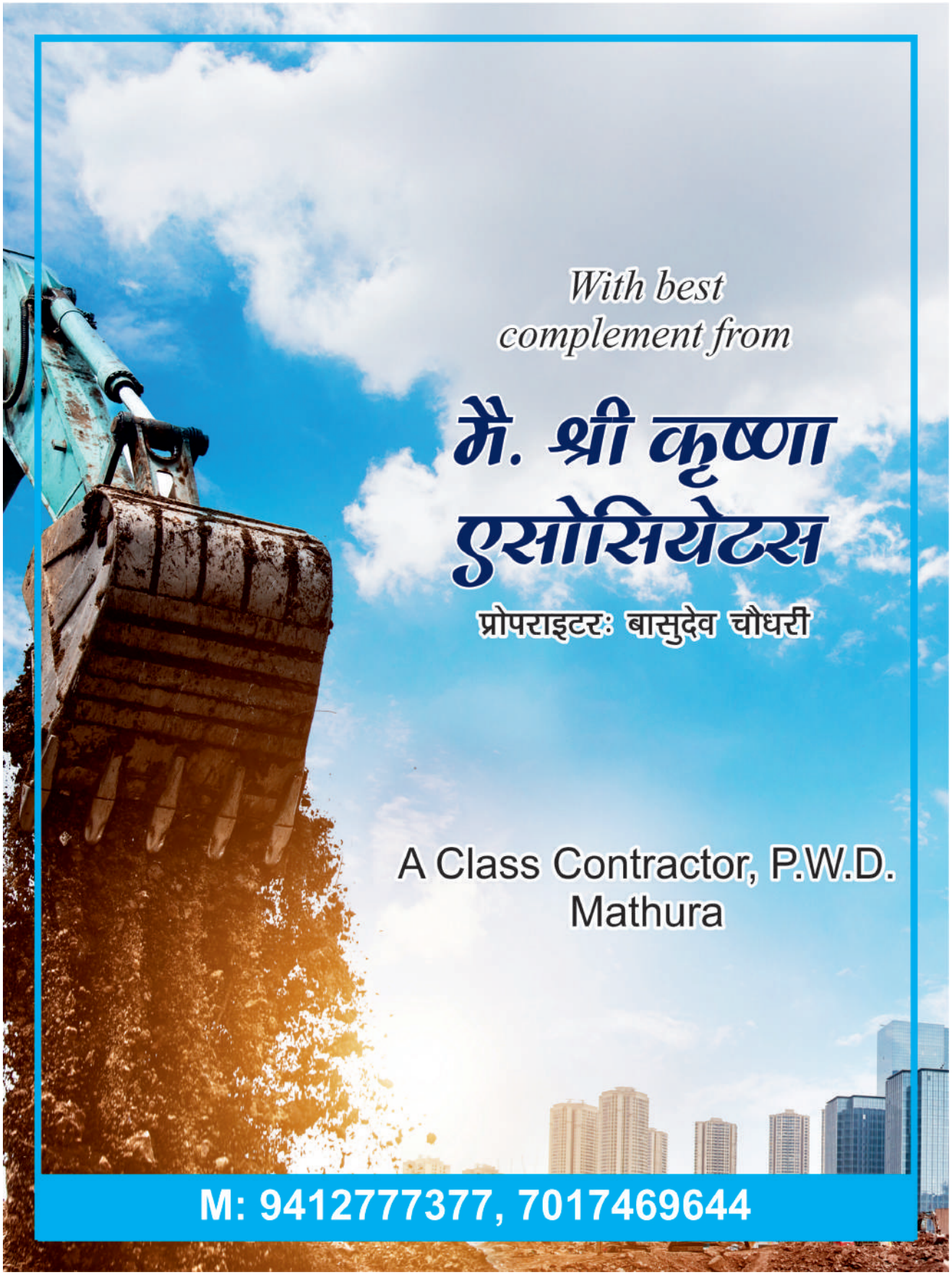
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

भगवान जगन्नाथ की उल्टी घुरती रथयात्रा

उड़ीसा राज्य के पुरी शहर में समुद्र तट पर अवस्थित भारत के चार धामों में से एक जगन्नाथ धाम में भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित जगन्नाथ मंदिर है, जहां भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलभद्र (बलराम) और बहन सुभद्रा के साथ विराजमान हैं। शंख के आकर का होने के कारण जगन्नाथ पुरी को शंख क्षेत्र और पुरुषोत्तमपुरी भी कहा जाता है। यह जगन्नाथ मंदिर 214 फुट ऊँचा, 20 फुट ऊँची दीवारों से घिरा और चार लाख वर्ग फुट क्षेत्र में फैला है। कलिंग शैली में बने इस मंदिर के शिखर पर अष्ट धातुओं से निर्मित सुदर्शन चक्र है।

विनय शर्मा

हैरतअंगेज बात यह है कि किसी भी वस्तु, मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे की परछाई बनती है, परन्तु जगन्नाथ मंदिर के शिखर की छाया दिखाई नहीं देती है। मंदिर के चारों दिशाओं में चार द्वार बने हुए है। पूर्व दिशा में अवस्थित सिंह द्वार से आम लोग को प्रवेश दिया जाता है। दक्षिण दिशा में स्थित अश्व द्वार से विशेष श्रेणी के महत्वपूर्ण लोग अर्थात वी आई पी पर्सन प्रवेश करते हैं। पश्चिम दिशा के हाथी द्वार से पुजारी पंडित प्रवेश करते हैं। और उत्तर दिशा के व्याघ्र द्वार से विकलांग, बीमार व्यक्ति प्रवेश करते

हैं। जगन्नाथ पुरी की विश्व की सबसे बड़ी रसोई अत्यंत प्रसिद्ध है, जहां प्रतिदिन 25000 और रथ यात्रा उत्सव के दिनों में एक लाख लोगों के लिए भोजन बनता है। पुरी अपनी पारंपरिक कला, संस्कृति, इतिहास, वास्तुकला, समुद्री शिल्प के अतिरिक्त मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। पुरी में प्रति वर्ष आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को भव्य रथयात्रा निकली जाती है। जिसमें भगवान जगन्नाथ, भाई बलराम और बहन सुभद्रा की काष्ठ से निर्मित भव्य प्रतिमाओं को लकड़ी के बने रथ में बिठाकर नगर का भ्रमण करवाया जाता हैं। भगवान जगन्नाथ की आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को निकलने वाली इस रथयात्रा को चलती रथयात्रा कहा जाता है। इस दिन भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा व भाई बलभद्र की रथयात्रा मूल मन्दिर से निकलकर गुण्डिचा गढ़ी तक जाती है। गुण्डिचा गढ़ी को भगवान जगन्नाथ की मौसी का घर माना जाता है, जिसमें वे आठ दिनों तक रहते हैं। फिर नौवें दिन आषाढ़ शुक्ल एकादशी को गुण्डिचा गढ़ी से भगवान जगन्नाथ बहन सुभद्रा व भाई बलभद्र के साथ वापस रथ के द्वारा अपने मूल मन्दिर लौट आते हैं। इस वापस अपने मूल मन्दिर आने की उल्टी रथयात्रा को घुरती रथयात्रा अथवा बहुरा (बहुड़ा) रथयात्रा कहा जाता है। इस वर्ष हरि शयनी एकादशी पर निकाली जाने वाली भगवान जगन्नाथ की यह उल्टी रथयात्रा 28 जून 2023 को जगनाथ पुरी में निकाली जाएगी। आषाढ़ मास की द्वितीय तिथि और एकादशी के दिन क्रमशः भगवान जगन्नाथ की चलती व घूरती रथयात्रा का उत्सव उड़ीसा सहित देश- विदेश के कई भागों में बहुत ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। परन्तु उड़ीसा राज्य के पुरी शहर की रथयात्रा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इस दिन भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा बहुत ही धूमधाम के साथ निकाली जाती है। भगवान जगन्नाथ की यह यात्रा के वर्ष में एक बार भगवान जगन्नाथ को उनके गर्भ गृह से बाहर निकालकर यात्रा कराई जाती है। उनके साथ भगवान कृष्ण और उनके बड़े भाई बलराम और बहन सुभद्रा भी रथ में बैठकर यात्रा करते हैं। यह रथयात्रा का यह उत्सव पूरे 9 दिनों तक बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया जाता है। मान्यतानुसार इस यात्रा के दौरान भगवान जगन्नाथ अपनी गर्भ गृह से बाहर आकर प्रजा के सुख दुख हो स्वयं देखते हैं। पुराणों में जगन्नाथपुरी को धरती का बैकुंठ कहा गया है। ब्रह्म व स्कंद पुराण के अनुसार पुरी में भगवान विष्णु ने नीलमाधव का रूप धारण कर सबर जनजाति के देवता बन गए थे। सबर जनजाति के देवता होने के कारण ही यहां पर भगवान जगन्नाथ का रूप कबीलाई देवताओं की भांति नजर आता है। उड़ीसा के पुरी में अवस्थित जगन्नाथ मंदिर भारत देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यह भारत में हिन्दू धर्म के चार धामों में से एक है। पुरी में कई मठ हैं। पुरी के प्रसिद्ध मठों में से एक गोवर्धन मठ का निर्माण भगवान शिव के अवतार शंकराचार्य ने 9 वी शताब्दी में किया था। गोवर्धन मठ के कारण ही पुरी को चार पवित्र धामों में से एक धाम की मान्यता मिली है। शंकराचार्य ने संन्यासियों के विभिन्न समूहों को एकजुट करने के लिए 4 मठों अर्थात चार धाम, गोवर्धन मठ, श्रृंगेरी में श्रृंगेरी मठ, द्वारका में शारदा मठ और बद्रीनाथ में ज्योति मठ स्थापित किये थे, जिनमे में से गोवर्धन मठ एक है। जगन्नाथ बल्लव मठ 16 वीं शताब्दी में उड़ीसा राज्य के सबसे प्रसिद्ध संतों में से एक रामानंद जी को समर्पित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार श्रीकृष्ण के देह त्यागने के बाद जब उनका अंतिम संस्कार किया गया तो उनका पूरा शरीर पंचत्व में विलीन हो गया, लेकिन हृदय धड़कता रहा। मान्यता है कि आज भी पुरी के जगन्नाथ मंदिर के जगन्नाथ की मूर्ति में श्रीकृष्ण का दिल सुरक्षित है। यह हृदय आज भी जगन्नाथ की मूर्ति में धड़कता है। भगवान के इस हृदय अंश को ब्रह्म पदार्थ कहा जाता है।

यहां भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकालने के लिए बलराम, श्रीकृष्ण और सुभद्रा के लिए अलग अलग रथ बनाए जाते हैं। रथ यात्रा में सबसे आगे श्रीकृष्ण के भाई बलराम जी का रथ रहता है। उसके बाद श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा और उनके पीछे भगवान जगन्नाथ का रथ चलता है। इन रथों को उनकी ऊंचाई और रंग के द्वारा पहचाना जाता है। बलभद्र को महादेव का प्रतीक माना गया है। रथ का नाम तालध्वज है। रथ के रक्षक वासुदेव और सारथी मताली होते हैं। 13.2 मीटर ऊंचा और 14 पहियों का ये रथ लाल, हरे रंग का होता है। सुभद्रा के रथ पर देवी दुर्गा का प्रतीक होता है। देवी सुभद्रा के रथ का नाम देवदलन है। लाल और काले रंग का ये रथ 12.9 मीटर ऊंचा होता है। रथ के रक्षक जयदुर्गा व सारथी अर्जुन होते हैं। इसे खींचने वाली रस्सी को स्वर्णचुड़ा कहते हैं। जगन्नाथ का रथ 832 काष्ठ टुकड़ों से निर्मित 13 मीटर ऊँची 16 पहियों की होती है। इसका रंग लाल और पीला होता है। गरुड़ध्वज, कपिध्वज, नंदीघोष ये जगन्नाथके रथ के नाम हैं। रथ की ध्वजा त्रिलोक्यवाहिनी कहलाती है। रथ को शंखचूड नामक रस्सी से खींचा जाता है। भगवान जगन्नाथ रथ के रक्षक भगवान विष्णु के वाहन पक्षीराज गरुड़ हैं। मान्यता है कि सच्चे भाव से इस रथयात्रा में शामिल होने वाले लोगों की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है, उनके सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि इस रथयात्रा के माध्यम से भगवान जगन्नाथ, अपने भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ नगर भ्रमण करते है। इस दौरान तीनों की शानदार प्रतिमाओं के साथ नगर भ्रमण होता है। तीनों अपनी मौसी के घर गुण्डिचा मंदिर जाते है। तीनों ही एक सप्ताह तक गुंडिचा मंदिर में रुकते है, जहां उनका आदर सत्कार होता है। इसके बाद भगवान बीमार हो जाते है, और भगवान के उपचार के लिए उन्हें पथ्य का भोग लगाया जाता है और स्वस्थ होने के बाद ही भगवान दर्शन देते है। इसके बाद भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की रथयात्रा पुनः वापस अपने मूल जगन्नाथ मंदिर लौटती है। इस रथ यात्रा से 15 दिन पूर्व ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा को भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और भाई बलराम की मूर्तियों को गृर्भग्रह से बाहर लाया जाता है, और पूर्णिमा स्नान के बाद 15 दिन के लिए वे एकांतवास में चले जाते हैं। मान्यता है कि पूर्णिमा स्नान में ज्यादा पानी से नहाने के कारण भगवान बीमार हो जाते हैं। इसलिए वे 15 दिनों के लिए एकांत में रहते हैं। और भक्तों के दर्शन के लिए मंदिर के कपाट बंद कर दिए जाते हैं। इस दौरान उनका उपचार किया जाता है। विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ रथयात्रा का भारतीय संस्कृति में अत्यधिक महत्व है। भगवान के रथ को खींचने वाले के सभी दुःख, दर्द और कष्ट समाप्त होने और सौ यज्ञ करने के समान पुण्य की प्राप्ति होने की मान्यता होने के कारण इस यात्रा में देश-विदेश से लाखों लोग शामिल होते हैं। ■

विशेष

44 वें विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2023 पर विशेष

आओ पर्यावरण की रक्षा कर धरती को स्वर्ग बनाएं

वैश्विक स्तर पर प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी 5 जून 2023 को 44 वां विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है है क्योंकि वर्तमान कुछ दशकों से पर्यावरण संबंधी त्रासदी का सामना वैश्विक स्तर पर हर देश कर रहा है इसलिए पर्यावरण सुरक्षा को गंभीरता से रेखांकित करना हर देश के हर नागरिक के लिए तात्कालिक जरूरी हो गया है। हालांकि हर देश में पर्यावरण सुरक्षा को लेकर 5 जून को पर्यावरण सुरक्षा संबंधी कार्यक्रम रखे जाते हैं परंतु अब समय आ गया है कि वैश्विक स्तर पर हर नागरिक को विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण की सुरक्षा अपने निजी, व्यक्तिगत कार्य मानते हुए इस वर्ष की थीम प्लास्टिक प्रदूषण को मात, सफल बनाने के लिए कम से कम 5 संकल्प लेने की जरूरत है। पृथ्वी की संरचना, सूर्य से उसकी दूरी और अन्य भौतिक दशाओं के कारण यहां जीवन का अस्तित्व है। हवा, पानी, मिट्टी और विविध वनस्पतियां प्रकृति के ऐसे उपहार हैं, जिनकी वजह से धरती पर जीवन संभव हुआ है। पृथ्वी पर जीवन के विभिन्न रूप इसे एक अनूठा ग्रह बनाते हैं परंतु हम लंबे समय से पृथ्वी के प्राकृतिक तंत्र का उपभोग शोषण और विनाश कर रहे हैं। अब वक्त आ गया है कि उक्त संकल्प लेकर तीव्रता से इसकी सुरक्षा करनी होगी जिसको गंभीरता से रेखांकित करने की जरूरत है ताकि हम आने वाली अनेक पीढ़ियों के लिए सुरक्षित पर्यावरण व्यवस्था को छोड़कर जाएं ताकि हम उनकी आलोचना, घृणा और नफरत के पात्र होने से अपने आप को बचा कर खुद वर्तमान जीवन सुरक्षित होकर जीएं।

किशन दास

अगर हम इस सृष्टि में पर्यावरण के महत्व की बात करें तो धरती को इंसान के रहने योग्य बनाने के लिए प्रकृति व पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहिए। पर्यावरण और धरती जीवन जीने के लिए सबसे जरूरी चीजें उपलब्ध कराती है, जैसे सांस लेने के लिए हवा और पेट भरने के लिए भोजन-पानी। हालांकि धरती को जीने के लिए एक अच्छे वातावरण की जरूरत होती है, जो प्रकृति देती है। प्रकृति और पर्यावरण ब्रह्मांड को सुचारू तौर पर चलाने का काम करता है। प्रकृति हमें जीने के लिए बहुत कुछ देती है हालांकि इंसान बदले में प्रकृति का दोहन करता है और पर्यावरण को प्रदूषित करता है। इससे प्रकृति को नुकसान होता है और जनजीवन खतरे में पड़ जाता है। इंसान का कर्तव्य है कि ग्लोबल वार्मिंग, मरीन पॉल्यूशन के बढ़ते खतरे और बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करें, ताकि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके। इसी कर्तव्य के प्रति लोगों को सचेत करने के लिए प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। साथियों बात अगर हम हमारे जीवन में पर्यावरण के महत्व की करें तो ये पृथ्वी इंसान को दी हुई ईश्वर की सबसे बड़ी देन है, लेकिन इंसान का स्वभाव ही ऐसा है कि उसे चीजों की कदर तभी होती है जब वो उसे खो देता है। इंसान की गलतियों का खामियाजा पृथ्वी को भुगतना पड़ता है। इंसान का जीवन धरती के वातावरण के कारण अस्तित्व में है। हमारे सांस लेने के लिए हवा से लेकर खाने पीने तक की हर जरूरी चीजें वातावरण उपलब्ध कराता है और धरती पर जीने के लिए अनुकूल माहौल देता है। यह सब प्रकृति की देन है। प्रकृति और पर्यावरण से ही ब्रह्मांड सुचारू रूप से चल पाता है। प्रकृति तो हमें जीने के लिए बहुत कुछ देती है लेकिन इसके बदले में इंसानों ने प्रकृति का सिर्फ दोहन किया और पर्यावरण को प्रदूषित किया। जिससे प्रकृति को तो नुकसान हो ही रहा है, साथ ही जनजीवन का अस्तित्व भी खतरे में है। ऐसे में हर इंसान का कर्तव्य है कि वह पर्यावरण को सुरक्षित रखने का प्रयास करें। ग्लोबल वार्मिंग, मरीन पॉल्यूशन के बढ़ते खतरे और बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करें, ताकि पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इसके लिए हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। साथियों बात अगर हम विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2023 की थीम की करें तो इस वर्ष, 2023, विश्व पर्यावरण दिवस 2023 की थीम प्लास्टिक प्रदूषण को मात है, जो विश्व पर्यावरण दिवस की 51वीं वर्षगांठ है और प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए एक वैश्विक आह्वान है। प्लास्टिक प्रदूषण शब्द का अर्थ अपशिष्ट प्लास्टिक उत्पादों के संचय और पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र के कणों से है। एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग में घातीय वृद्धि के कारण यह पर्यावरण संबंधी चिंताओं में सबसे आगे बढ़ गया है विकासशील देशों में प्रति व्यक्ति अधिक प्लास्टिक

कचरा उत्पन्न होता है, जहां कचरा संग्रहण प्रणाली खराब होती है। इसके कारण समुद्र को प्रदूषित करने वाला अधिकांश प्लास्टिक विकासशील और मध्यम आय वाले देशों की नदियों में उत्पन्न होता है। हालाँकि, विकसित राष्ट्र, विशेष रूप से कम पुनर्चक्रण दर वाले भी प्लास्टिक अपशिष्ट संग्रह के साथ संघर्ष करते हैं। 2019 में, वैश्विक स्तर पर 46 करोड़ टन प्लास्टिक डंप किया गया था, जहां 9 प्रतिशत प्लास्टिक कचरे को रिसाइकिल किया गया था, और 22 प्रतिशत का कुप्रबंधन किया गया था। हालांकि 120 से अधिक देशों में एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर किसी न किसी रूप में प्रतिबंध कर है, लेकिन यह समस्या को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता है। अधिकांश नियम प्लास्टिक की थैलियों जैसी वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो प्लास्टिक कचरे के एक नगण्य हिस्से के लिए खाते हैं, लेकिन प्लास्टिक की खपत को कम करने के बजाय कूड़े को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। यह प्लास्टिक के उपयोग और इसके खतरनाक पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाने के महत्व को बताता है। इस दिन दुनिया के विभिन्न कोनों से लोग प्लास्टिक प्रदूषण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आगे आते हैं और प्लास्टिक के प्रतिस्थापन में स्थायी समाधान खोजने के लिए स्थानीय अधिकारियों, उद्योगों, समुदायों और व्यक्तियों को एकजुट करना चाहते हैं।

साथियों बात अगर हम मानवीय जीवन को बचाने, सुरक्षित करने कम से कम पांच कठोर संकल्पों की करें तो,पर्यावरण दिवस पर संकल्प लें कि पॉलीथिन या प्लास्टिक के इस्तेमाल पर पूरी तरह से रोक लगाने का प्रयास करेंगे। प्रकृति के सबसे बड़े दुश्मन पॉलीथिन और प्लास्टिक ही हैं। ऐसे में खुद तो हम इनका इस्तेमाल नहीं करेंगे, साथ ही किसी अन्य को पॉलीथिन या प्लास्टिक का इस्तेमाल करते देखेंगे तो उसे भी पर्यावरण के प्रति जागरूक करेंगे। प्रकृति पेड़ पौधों पर निर्भर है। लेकिन आजकल अंधाधुंध पेड़ पौधों की कटाई हो रही है। पेड़ पौधों की कटाई से ऑक्सीजन की कमी होने के साथ ही मौसम चक्र भी बिगड़ रहा है। इस कारण कई भीषण प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में संकल्प लें कि पेड़ पौधों की कटाई बंद करके अधिक से अधिक पौधारोपण करेंगे, ताकि प्रकृति को अब तक हुए नुकसान का भरपाई हो सके। घर से निकलने वाले कचरे को सही स्थान पर पहुंचाएंगे। हर दिन हमारे घर से बहुत सारा कचरा निकलता है। जिसको लोग इधर-उधर फेंक देते हैं। इसके कचरा या तो जानवरों के पेट में जाता या फिर नदियों में बह जाता है। इस कारण हमारी नदियां भी प्रदूषित होती हैं। कचरे को इधर उधर न फेंकें बल्कि उसे कूड़ेदान में ही डालें। सूखे और गीले कचरे को अलग अलग करके उसे फेंके, ताकि उसका सही तरीके से इस्तेमाल हो सके। वातावरण को शुद्ध और सुरक्षित रखने में पेड़ पौधे, धरती, मिट्टी, जीव-जंतु, जल आदि की अहम भूमिका है, इसलिए इस मौके पर इस सभी का आभार व्यक्त करते हुए प्रार्थना करें कि पर्यावरण का संतुलन हमेशा बना रहें और संकल्प लें कि पर्यावरण को संतुलित और सुरक्षित रखने के लिए जो कुछ भी करना पड़े, हम करेंगे। किसी व्यक्ति का जीवन सांस लेने से चलता है और सांस लेने के लिए शुद्ध हवा की जरूरत होती है। इसलिए विश्व पर्यावरण दिवस पर संकल्प लीजिए कि सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा हो, इसके लिए हम पेट्रोल-डीजल के बदले ई वाहन का उपयोग करेंगे। ज्यादा से ज्यादा पब्लिक ट्रांसपोर्ट का इस्तेमाल करेंगे। 3 जून 2023 को हमने विश्वसाइकिल दिवस मनाया है जिसे अधिक से अधिक उपयोग में लाने का संकल्प हमें लेना है।

साथियों बात अगर हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के इतिहास की करें तो विश्वपर्यावरण दिवस पृथ्वी पर मानवता के प्रभाव के बारे में बढ़ती चिंता के कारण अस्तित्व में आया था। राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) इस उत्सव के पीछे प्राथमिक एजेंसी है। पर्यावरण के मुद्दों के बारे में आम लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए ये दिवस मनाया जाता है। पर्यावरण दिवस सामूहिक कार्रवाई के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह परिवर्तन को प्रभावित करने के लिए आवाजों को बढ़ाने और प्रतिभागियों की एजेंसी को मजबूत करने में भी मदद करता है। वर्ष 1972 में स्टॉक होम में संयुक्त राष्ट्र ने पहला वैश्विक पर्यावरण सम्मलेन आयोजित किया था। इसमें 119 देशों ने हिस्सा लिया था। इस सम्मलेन का मुख्य विषय बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण था। भारत की ओर से इस सम्मलेन में इंदिरा गांधी ने नेतृत्व किया था।

इसी सम्मेलन में (यूएनईपी) का गठन भी हुआ और प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निर्णय लिया गया था। भारत की ओर से नेतृत्व कर रही इंदिरा गांधी ने बिगड़ती पर्यावरण की दशा और भविष्य में होने वाले उसके प्रभाव पर व्याख्यान भी दिया था। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि प्लास्टिक प्रदूषण को मात देने मुहिम जरूरी है। प्रकृति और पर्यावरण ब्रह्मांड को सुचारू तौर पर चलाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाते हैं, जिससे सुरक्षित रखना परम माननीय धर्म है। ■

शिक्षा देने के साथ बच्चों को जीने की कला भी सीखाएं

आज हमारा ध्यान बच्चों की शिक्षा पर है। उन्हें योग्य बनाने पर है। योग्य भी इतना की 100 में 95 अंक पाना भी स्वीकार नहीं। पेपर के निर्धारित पूरे अंक चाहिए। इन सबके बीच हम बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान नही दे पा रहे। बच्चों की शिक्षा पर माता-पिता का ध्यान ज्यादा है। बच्चों के शारीरिक विकास पर नहीं। बच्चों के मानसिक विकास पर नहीं, जबकि जरूरी है कि बच्चों को जीवन जीना सिखाया जाए। विपरीत समय में कैसे बचे, सुरक्षित रहे, या कोई नही बता रहा। जबकि बहुत जरूरत है सभी बच्चों को जीवन जीना सीखने की कला सिखाई जाए। उन्हें प्रत्येक विपरीत परिस्थिति के लिए तैयार किया जाए। उन्हें बताया जाए कि किसी आपदा या संकट में फंस जाएं तो उससे कैसे बचें।

अशोक मधुप

कोलंबिया के अमेजन के जंगल में मई में एक विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस घटना में लापता हुए चार बच्चे घटना के 40 दिन बाद जीवित मिले। कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने यह ट्विटर पर घोषणा की कहा, पूरे देश के लिए खुशी की बात है कोलंबिया के जंगल में 40 दिन पहले लापता हुए चारों बच्चे जिंदा मिल गए हैं। उन्होंने सैन्य और स्वदेशी समुदाय के कई सदस्यों की एक तस्वीर भी साझा की, जो भाई-बहनों लेस्ली जैकबॉम्बेयर मुकुतुय (13), सोलेनी जैकबॉम्बेयर मुकुतुय (9), टीएन रानोक मुकुतुय (4) और क्रिस्टिन रानोक मुकुतुय (1) की थी। एक बयान में राष्ट्रपति ने इसे मैजिकल डे करार दिया,

और कहा- ये अकेले थे, उन्होंने जीवन संघर्ष का ऐसा उदाहरण पेश किया, जो इतिहास में बना रहेगा। गौरतलब है कि एक मई को, सेसना 206 लाइट एयरक्राफ्ट अमेजॅनस प्रांत में अरराकुआरा और ग्वावियारे के एक शहर सैन जोस डेल ग्वावियारे के बीच उड़ान भरने के दौरान गायब हो गया। दुर्घटना के बाद से खोजी कुत्तों के साथ 100 से अधिक सैनिकों को खोज और बचाव कार्यों में लगाया गया है। पिछले महीने विमान का मलबा और पायलट तथा दो वयस्कों के शव मिले थे। उड़ान के शुरूआती घंटों में ही पायलट ने इंजन के फेल होने की सूचना दी और आपातकालीन अलर्ट जारी किया। इसके बाद विमान घने जंगल में जाकर क्रैश हो गया। दुर्घटना के परिणामस्वरूप पायलट और बच्चों की मां मागदालेना मुकुटुय सहित तीन वयस्कों की मौत हो गई और उनके शव विमान के अंदर पाए गए। जबकि 13, नौ, चार साल और बारह महीने के चारों बच्चे 40 दिन बाद जीवित पाए गए।

कोलंबिया के राष्ट्रपति ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि मुझे उन्हें देख कर बेहद खुशी हुई क्योंकि बच्चों ने जंगल के बीच में अकेले अपना बचाव किया था। रेस्क्यू टीम को बच्चों के पास से कुछ फल मिले हैं। बता दें कि चारों बच्चे आपस में भाइ -बहन है। इन बच्चों ने खुद के लिए झाड़ियों का छोटा एक घर भी बना लिया था। इस घर में ये चारों एक साथ पाये गए। खुद को जीवित रखने के लिए इन बच्चों ने 40 दिन तक घने जंगल में पेड़ों से फल तोड़कर खाए। सर्च डाग ने इनके गिरे फल से ही इनका पता लगाया। हालाकि 40 दिन में ये बच्चे बहुत कमजोर हो गए थे। इन बच्चों के दादा फिडेंशियो वैलेंशिया ने बताया कि दुनिया में कभी कोई बच्चा इतने मुश्किल हालात में जिंदा रहना जानता है तो वह वह मुकुतुय परिवार का हो सकता है। इन चारों में दो बड़े बच्चे लेस्ली और सोलेनी जंगल में जिंदा रहने वाली कला से बखूबी वाकिफ थे। उन्होंने बताया हुई तोतो कबीले के सदस्य बहुत कम उम्र में ही शिकार करना, मछली पकड़ना और खाने-पीने का सामान जमा करना सीखने लगते हैं। कोलंबिया के मीडिया से बात करते हुए इन बच्चों की चाची दमारिस मुकुतुय ने बताया उनके परिवार के बच्चे जब बड़े हो रहे होते हैं, तो वे खानदान के दूसरे लोगों के साथ जिंदा रहने का खेल खेलते हैं। उन्होंने अपना बचपन याद करते हुए कहा कि जब हम सब बचपन में खेल खेलते थे तो हम छोटे-छोटे तंबू बनाया करते थे। उन्होंने बताया कि 13 साल की लेस्ली को पता था कि कौन से फल नहीं खाने हैं क्योंकि जंगल में बहुत से फल जहरीले मिलते हैं। लेस्ली को छोटे बच्चे का ख्याल रखना भी अच्छी तरह आता था। दुर्घटनाग्रस्त विमान के मलबे से लेस्ली ने फैरून नाम का एक तरह का आटा भी खोज निकाला। जब तक यह आटा रहा तब तक

हमें उन्हें सीखाना है कि आपदा, तूफान, जंगल में फंसने पर उन्हे कैसे अपनी सुरक्षा करनी है आत्म सुरक्षा करना सीखने के साथ ही उन्हें अपने परिवार और साथी की मदद करनी है। उन्हें भी बचाना है। बच्चे और किशोरों को विपरीत हालात में जीने के लिए ढ़ाला जाना चाहिए।

यह बच्चे इसी पर गुजर करते रहे। बच्चों की तलाशी अभियान में हिस्सा लेने वाले हुई तूतो समुदाय के बुजुर्ग एडमिन पाखी ने बताया कि आटा खत्म होने के बाद चारों बच्चे जंगली फल के बीज खाने लगे। इन्हीं बचे मिले फल से बच्चों की खोज हुई। बच्चों के दादा कहते हैं कि मुकुतुय परिवार के बच्चों को बचपन से ही विपरीत परिस्थिति में जंगल में आदमी के जीने की कला सिखाई जाती है। कोलंबिया में मुकुतुय परिवार को यह कला सिखाई जाती है किंतु हिंदुस्तान में तो प्रायः सरकारी स्कूल के कक्षा तीन से लेकर कक्षा आठ तक सारे बच्चे ये कला सीखते हैं। ये शिक्षा है स्काउट की। इसमें स्काउट (लड़के)/ गाइड (लडकियों) को बताया जाता है कि जंगल में फंसने पर पेड़-पौधों की छाल से कैसे रोटी बनानी है। तवा ना होने पर भी पत्थर पर कैसे रोटी को सेकनी है। बिना माचिस कैसे आग जलानी है। वन में रास्ते पर चलते निशान लगाते चलना है कि पीछे आने वाले को सुविधा रहे। बिछड़े साथियों की टीम के लिए किस तरह का इशारा करना है। जंगल में जरूरत पर रस्सी से कैसे पुल तैयार करना है। मुसीबत में फंसे साथी की कैसे मदद करनी है। एक वाक्य में इन्हें जिम्मेदार और आदर्श नागरिक बनना सिखाया जाता है। स्काउट/गाइड आंदोलन का उद्देश्य युवाओं के शारिरिक, बौद्धिक, समाजिक, भावात्मक और आध्यात्मिक विकास में मदद कर उन्हें स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है। किंतु जब से प्राइवेट क्षेत्र में शिक्षा का चलन बढ़ा तब से यह सब खत्म हो गया। सीबीएसई/आइसीएसई शिक्षा में नंबर ज्यादा आने से बच्चों के अभिभावकों का बच्चों से ज्यादा उनकी पढ़ाई पर ध्यान रहने लगा। उनका दबाव रहता है कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा नंबर लाएं। इसीलिए स्कूल के बाद ट्यूशन पढ़ने का चलन जोर पकड़ गया। आज की प्राइवेट शिक्षा में छोटी क्लास से लेकर इंटर तक का बच्चा पढ़ाई की मशीन बनकर रह गया। स्कूल में आठ घंटे लगाने के बाद बच्चों को सभी सब्जेक्ट की ट्यूशन पढ़ने हैं। चार सब्जेक्ट की ट्यूशन के लिए चार घंटे चाहिए। एक टयूशन से दूसरे टयूशन तक जाने के लिए बच्चों को लगभग तीन से चार घंटे लगते हैं। इस तरह से आज के बच्चे और किशोर15 से 16 घंटे पढ़ाई के लिए तैयार होने और पढ़ाई पर लगते हैं। इसके बाद भी मां-बाप का दबाव रहता है कि स्कूल और टयूशन का होमवर्क करना है। इतना सब होने के बाद बच्चे और किशोर को खेलने के लिए और अपने व्यक्तिगत विकास के लिए समय नहीं मिलता। आज के मां-बाप का इस बच्चे के व्यक्तिगत विकास पर उनका ध्यान नहीं उनका जितना जोर बच्चों की पढ़ाई पर है। उनकी एकाग्रता इस बात पर है कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा नंबर लाएं। सौ नंबर के पेपर में अपने बच्चे द्वारा उन्हें 90- 95 नंबर लाना भी गंवारा नहीं। वे चाहतें हैं कि बच्चा 100 में 100 ही नंबर लाए। इन सबके के बीच बच्चे का व्यक्तिगत विकास रूक जाता है। वह जिम्मेदार नागरिक बनने की जगह किताबी कीड़ा बनकर रह जाता है। आज जरूरत है कि बच्चे, किशोर और आने वाली पीढ़ी को जिम्मेदार नागरिक बनने की शिक्षा दी जाए, नागरिक बनाना हमारी और समाज की जिम्मेदारी है। हमें उन्हें सीखाना है कि आपदा, तूफान, जंगल में फंसने पर उन्हे कैसे अपनी सुरक्षा करनी है आत्म सुरक्षा करना सीखने के साथ ही उन्हें अपने परिवार और साथी की मदद करनी है। उन्हें भी बचाना है। बच्चे और किशोरों को विपरीत हालात में जीने के लिए ढ़ाला जाना चाहिए। अच्छा है कि उत्तर प्रदेश में प्रदेश सरकार के विद्यालयों में कक्षा तीन से इंटर तक स्काडट/गाइड की ट्रेनिंग की व्यवस्था है। कुछ एनजीओ भी इस कार्य में लगी हैं। इस बार से नई शिक्षा व्यवस्था में उत्तर प्रदेश सरकार अपने विद्यालयों में कक्षा तीन से आठ तक स्काडट/गाइड की पढ़ाई कराने जा रही है। जरूरी है कि ये स्काउट गाइड की शिक्षा देश के सभी शिक्षण संस्थाओं में समान रूप से लागू हो। चाहें वे सरकारी हो या प्राइवेट। बच्चों और किशोरों को जूडे- कराटें की भी शिक्षा दी जाए। ■

जो काम आजादी के तुरंत बाद होने चाहिए थे, वह अमृत काल में हो रहे हैं

नवीन संसद उस महान तमिल शौर्य और धर्माधिष्ठित सत्ता को भी प्रतिबिंबित कर रही है जो अब तक सेक्युलर, वामपंथी बौद्धिक तत्वों की घृणा के कारण दबी रही थी। तमिल भाषा संसार की प्राचीनतम भाषाओं में एक है, उसमें शिलपद्दिकरम, मणिमेखलै जैसे दो हजार वर्ष से भी प्राचीन महान ग्रन्थ हैं। नवीन भारत अभ्युदय का पथ सदैव कंटकाकीर्ण रहा है। आज जब ब्रिटिश दास मानसिकता से संघर्ष रत राष्ट्र औपनिवेशिक मानस की जकड़न से मुक्त हो भारतीयों द्वारा भारत के लिए स्वतंत्र देश में बनी नवीन संसद का भव्य उद्घाटन देख रहा है तो यह क्षण 15 अगस्त 1947 के पुण्यदायी क्षण से काम महत्वपूर्ण नहीं है।

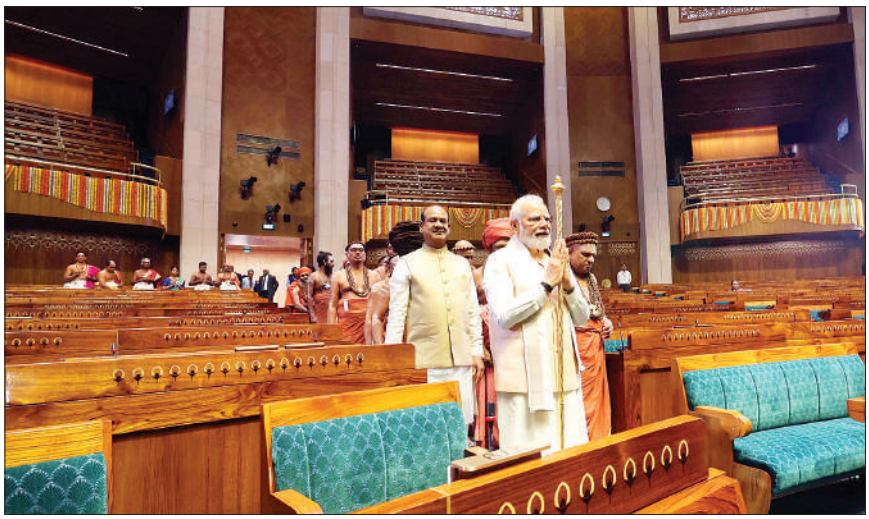

तरुण विजय

यह नवीन संसद तमिल सम्राट राज राज चोल के समय प्रयुक्त शिव के नंदी को शिखरस्थ विराजमान किये राज दंड से आलोकित, प्रेरित और स्पंदित है जो स्वतंत्रता के समय चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के परामर्श और सहायता से वायसरॉय माउंट बैटन ने सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक स्वरूप पंडित नेहरू को प्रदान किया था। यह एक शुद्ध निर्मल भारतीय वैदिक परंपरा का प्रतीक था, इसलिए कांग्रेस और पंडित नेहरू को भाया नहीं और इसको प्रयाग स्थित सरकारी संग्रहालय में बंद कर दिया गया। यह दैवीय कृपा और नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता थी कि इसकी स्मृति जगी और इसे इसके सही उपयुक्त स्थान पर प्रतिष्ठित करने का निर्णय लिया गया। ब्रिटिश असेंबली को हमने बाद में नवीन भारत की संसद के रूप में संगठित किया जिसमें लोकसभा और राज्य सभा का संचालन हुआ। लेकिन सब कुछ वही था जो ब्रिटिश ने बनाया। संसद का भवन हमारा परन्तु उसके भीतर स्मृतियाँ सब ब्रिटिश और दासता कीं। वहां सभी प्रारंभिक सदन अध्यक्षों के चित्रों में ब्रिटिश स्पीकरों के चित्र से सदन अध्यक्षों की परंपरा के प्रारम्भ होने का दृश्य हर दिन हमें सदन में प्रवेश करते ही चुभता था। नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने ब्रिटिश कालीन दास मानसिकता के चिह्नों को मिटाना प्रारम्भ किया और स्वदेशी चेतना से उत्स्फूर्त नावीन्य का सृजन पर्व प्रारम्भ किया। नवीन संसद वास्तव में उसी नव चैतन्य का वह प्रतीक है जिसे शिव की शक्ति और महान तमिल पराक्रमी स्मृति सेंगोल राजदंड के रूप में शक्ति दे रही है। यह ब्रिटिश दास मानसिकता के अंत का अद्घोष है। नवीन संसद भारतीय नव जागरण के सूर्योदय का, राष्ट्रीयता की आभायुक्त लोकतंत्र का संयुक्त तीर्थ है जो अपराजेय भारत के शौर्य और आध्यात्मिक आत्मा को प्रतिबिंबित करती है। नवीन संसद उस महान तमिल शौर्य और धर्माधिष्ठित सत्ता को भी प्रतिबिंबित कर रही है जो अब तक सेक्युलर, वामपंथी बौद्धिक तत्वों की घृणा के कारण दबी रही थी। तमिल भाषा संसार की प्राचीनतम भाषाओं में एक है, उसमें शिलपद्दिकरम, मणिमेखलै जैसे विश्व विख्यात दो हजार वर्ष से भी प्राचीन महान ग्रन्थ हैं। थिरूवल्लुवर जैसे वैश्विक संत और दार्शनिक तमिल जनजीवन के हर पक्ष को प्रभावित करते आ रहे हैं। लेकिन नरेंद्र मोदी से पहले इस अपार तमिल गौरव के सम्बन्ध में राष्ट्रीय स्तर पर कभी जानकारियों का प्रसार नहीं किया गया था। ऐसा क्यों होता है कि जब भी भारत अपने मूल स्वरूप और सांस्कृतिक सभ्यतामूलक गौरव की ओर लौटना चाहता है तो ब्रिटिश दास मानसिकता के सेकुलर वाम पंथी और दाम पंथी उसके विरोध में खड़े दिखते हैं? मुहम्मद गौरी के विरुद्ध बहादुरी से लड़े राजा सुहेलदेव हों या असम के पराक्रमी सेनापति लशित बड़फूकन- केवल नरेंद्र मोदी स्मृति के पुनर्जागरण और दास मानसिकता के विरुद्ध वीरता से लड़ते दिखाई देते हैं। यह दुर्भाग्य है कि जिस प्रधानमंत्री को देश के नागरिकों ने सम्मान पूर्वक प्रधानमंत्री पद हेतु अभिषिक्त किया उनके लोकतान्त्रिक पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय गौरव प्रतिष्ठापना कार्यों पर इतना बावेला मचाया जा रहा है मानो भारतीयता का जागरण कोई अपराध हो। राष्ट्रीयता के प्रश्नों पर भारत में मतैक्य क्यों नहीं हो सकता? भारत और भारतीयता के प्रश्नों पर क्यों हमें एक दूसरे के विरुद्ध खड़े होने की आवश्यकता महसूस होती है? क्या भारतीयता किसी एक पार्टी के एकाधिकार में मानी जा सकती है? शत्रु को ऐसी ही मानसिकता के लोगों द्वारा सहायता मिलती है। भारत आज सम्पूर्ण विश्व के देशों के लिए शक्ति और विश्वास का केंद्र बना है। लोकतान्त्रिक पद्धति से, जय विजय और पराजयों के लोकतान्त्रिक आरोह अवरोहों से गुजरते हुये नरेंद्र मोदी ने एक शक्तिशाली भारत और भारतीयता निष्ठ छवि बनाकर सम्पूर्ण विश्व में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों का आत्मविश्वास एवं गौरव बढ़ाया है। जहाँ भी वे जाते हैं भारत माता का माथा ऊँचा होता है। शत्रुओं के खेमे में सेंध लगाकर राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को अनेकानेक विपदाओं के मध्य स्थिर और प्रगतिशील रखने का कीर्तिमान बनाने वाले मोदी ने जब नवीन संसद का उद्घाटन किया तो यह एक नवीन राष्ट्रीय चैतन्य के अभ्युदय का महान क्षण था जो युगों युगों तक हमें अपनी आत्मा की शक्ति और हमारी असंदिग्ध भारत भक्ति का स्मरण कराता रहेगा। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

मोदी ने साबित किया

झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए

नौ फरवरी 2014 को चेन्नई में कट्टनकुलाथुर में एसआरएम विश्वविद्यालय के डॉ. टीपी गणेशन ऑडिटोरियम में छात्रों को संबोधित करते हुए आज के देश के प्रधानमंत्री और उस समय के भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुनिया झुकती है, लेकिन इसे झुकाने वाला चाहिए। और ये आज उन्होंने साबित करके दिखा दिया। 2005 में नरेंद्र मोदी के गुजरात के सीएम थे। गुजरात दंगों को तीन साल हुए थे; गुजरात दंगों को लेकर उनके खिलाफ मामला भी चल रहा था। हालाकि सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें निर्दोष मानते हुए बरी कर दिया था।

अशोक मधुप

उस समय नरेंद्र मोदी ने अमेरिका के वीजा के लिए आवेदन किया था। तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने उन्हें वीजा देने से मना कर दिया था। अब उसका उल्टा हुआ है, अमेरिका ने मोदी को स्टेट गैस्ट ही नही बनाया। उनके स्वागत में पलक पांवडे बिछा दिए।अमेरिका के प्रथम नागरिक राष्ट्रपति जो बाइडेन ने प्रधानमंत्री मोदी का खुली बाहों से स्वागत किया। उनके स्वागत में तोपों की सलामी दी गई। इतना ही नहीं, पीएम मोदी इस बार अमेरिकी संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करके इतिहास रचा। वो ऐसा करने वाले पहले भारतीय पीएम बनें। 1965 के युद्ध के समय भारत ने अमेरिका से अपनी जरूरत के लिए शस्त्र खरीदने चाहे थे। अमेरिका ने पाकिस्तान से अपनी दोस्ती निभाई। उसने भारत को शस्त्र देने से साफ मना कर दिया। कारगिल युद्ध के समय भारत ने अमेरिका से कहा कि वह अपना नेवीगेशन सिस्टम प्रयोग करने की अनुमति दे, किंतु अमेरिका ने मना कर दिया। 1971 के भारत और पाकिस्तान युद्ध के समय अमेरिका ने भारत को धमकाने के लिए बंगाल की खाड़ी में अपना सातवां बेड़ा भेजा था। आज हालत यह है कि अमेरिका भारत को एक से एक आधुनिक शस्त्र देने का तैयार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हाल की यात्रा के दौरान रक्षा, दूरसंचार, सेमी कंडक्टर, ऊर्जा, शिक्षा और अंतरिक्ष एक्सप्लोरेशन और क्वांटम कंप्यूटिंग सहित अन्य अग्रणी प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में कई अहम समझौते हुए। अमेरिका की प्रतिष्ठित कंपनी जनरल इलैक्ट्रोनिक्स एंडएयरस्पेस और भारत की हिंदुस्तान एयरोनोटिक्स लिमिटेड के बीच समझौता हुआ कि लाइट कॉम्बैट एयर क्राफ्ट तेजस एमके- दो लिए जीईफ414 इंजिन बनाया जाएगा। द्रोण खरीदने, स्पेस मिशन और भारत में चिप बनाने से जुड़े समझौते भी अहम घोषणाओं में शामिल हैं, पर इन सबमें लड़ाकू विमान के इंजन बनाने की घोषणा काफी अहम हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए बताया कि अब उन्हें एच-वन वीजा के नवीनीकरण के लिए अमेरिका के बाहर नही जाना होगा, उन्होंने बताया कि यह निर्णय अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और उनके के बीच हुई बैठक में हुआ। अब भारतीय अमेरिका में ही रहते एच-वन बीजा का नवीनीकरण करा सकेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अमेरिका राष्ट्रपति जो बाइडेन ने औपचारिक स्वागत और आधिकारिक भोज के अलावा व्हाइट हाउस में एक निजी रात्रिभोज के लिए प्रधानमंत्री मोदी की मेजबानी की, इसमें 500 से अधिक अतिथि शामिल हुए। राजकीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी दो अवसरों पर अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित करने वाले पहले भारतीय नेता बने। इस सत्र के संबोधन के दौरान अमेरिका के सांसदों लगभग 70 बार ताली बजाई। संबोधन के बाद प्रधानमंत्री नरेंद मोदी की लोकप्रियता दिखाई दी। अमेरिकी सांसद उनसे हाथ मिलाने और उनके आटोग्राफ लेने के उत्सुक दिखाई दिए। कई सांसद ने तो मोदी के साथ

अपनी सैल्फी की। दर्जनों बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सीईओ से मिलने के अलावा, प्रधानमंत्री ने न्यूयॉर्क और वाशिंगटन में दो बार भारतीय प्रवासियों को भी संबोधित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस दौरे की बडी उपलब्धि यह भी है कि अमेजान और गूगल अब भारत में करोड़ों डालर का निवेश करेंगे, भारत से तस्करी होकर अमेरिका गए 100 से ज्यादा पुरावशेष भी अमेरिका ने भारत को लौटाने का वायदा किया है। इतना ही नही अमेरिकी राष्ट्रपति ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता और एनएसजी में भारत के प्रवेश के समर्थन को दोहराया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम से परहेज करने वाला अमेरिका आगे बढ़कर अब उन्हें गले लगाते लगा आ रहा है। सब जानते है कि अमेरिका संबंध सिर्फ फायदे के लिए बनाता है। भारत में बदलते राजनीतिक बदलाव के बीच अमेरिका ने भी अपनी नीति में बदलाव कर दिया और आज आलम ये है कि अन्य भारतीय नेताओं ने पहले भी कांग्रेस को संबोधित किया है, लेकिन किसी ने भी दो बार ऐसा नहीं किया है। यहां तक कि वे तीन भारतीय प्रधान मंत्री भी नहीं जो मोदी से अधिक समय तक पद पर रहे। लेकिन 2014 में मोदी के भारत के प्रधान मंत्री बनने के बाद चीजें तेजी से बदल गईं। उस वर्ष उन्होंने मैडिसन स्क्वायर गार्डन में एक भाषण दिया। उन्होंने पहली बार 2016 में कांग्रेस को संबोधित किया और फिर तीन साल बाद, दोबारा चुनाव में जीत हासिल करने के बादूस्टन में एक संयुक्त रैली के लिए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मुलाकात की। ऐसे में राजकीय रात्रिभोज और कांग्रेस का संबोधन उगते सूरज को सलाम वाली कहावत की पुष्टि करता है। ओबामा, ट्रंप और अब बाइडन नरेंद्र मोदी की दिल खोलकर वाहवाही और प्रशंसा करते रहे हैं। आज के विश्व परिदृश्य में अमेरिका को भारत की जरूरत है। वह चीन की आक्रामकता को लेकर परेशान है। वह देख रहा है कि चीन उसके नजदीकी वियतनाम पर कभी भी हमला कर सकता है। ऐसे में उसे युद्ध में उतरना पड़ेगा। भारत और चीन की सीमाएं सटी हैं।पिछले एक साल से ज्यादा सयम से भारत और चीन की सेनाएं सीमापर तैनात हैं। चीन की आक्रामकता का भारत बखूबी जवाब दे रहा है। ऐसे में अमेरिका चाहता है कि भारत उसके साथ रहे। इसीलिए वह भारत के प्रधानमंत्री के लिए पलक पांवडें बिछा रहा है, जबकि उसने भारत के विरोध में बावजूद सिंतबर 2022 को पाकिस्तान को एफ-16 लड़ाकू विमानों के उच्चीकरण के लिए 45 करोड़ डालर (3,651 करोड़ रुपये) की धनराशि स्वीकृत की थी। आज अमेरिका मीडिया भी जमकर भारत और मोदी की प्रशंसा कर रहा है। अमेरिका ने पिछले दिनों कई बार भारत पर अपने निर्णय थोपने चाहे किंतु भारत ने साफ मना कर दिया। रूस के युक्रेन पर हमले के समय अमेरिका और उसके गुट के देशों ने रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए, किंतु भारत ने इन्हें स्वीकार नही किया। उसने साफ कह दिया कि उसके अपने हित हैं, जहां से उसे अच्छा लगेगा, वही से खरीदारी करेगा। रूस से उसके जरूरत के सामान और शस्त्र की आपूर्ति निरंतर जारी है। रूस से भारत ने जब एस400 मिजाइल सिस्टम खरीदने की बात चलाई, तब भी अमेरिका ने बहुत विरोध किया था। धमकी दी गईं थी कि ऐसा करने पर उसपर आर्थिक प्रतिबंध लगाया जाएगा। भारत ने इन धमकी पर कोई ध्यान नही दिया।ये सिस्टम खरीदा और भारत की सीमा पर तैनात भी हो गया, सब देखता रहा और भारत का कुछ भी नही कर सका। वह जान गया कि भारत को सम्मान देकर, उसके हित के कार्य करके उसे अपने साथ लिया जा सकता है, धमका और डराकर नहीं। आज भारत और अमेरिका के बीच के रिश्ते बेहतरी की तरफ जा रहे हैं। अमेरिका के भारत के साथ ज्यादातर मुद्दों पर सहमति है। चाहे आतंकवाद का मुद्दा हो या तकनीक का। हो सकता है कि दोनों देशों की कुछ उम्मीदों पर नहीं उतरे हों, लेकिन यदि आप इस बात को नजरअंदाज कर दें तो समझेंगे कि भारत ने भविष्य के लिए क्वाड समूह देशों के साथ-साथ अमेरिका के साथ खासतौर पर सहयोग और सामंजस्य की नींव रखी है।इतना सब होने के साथ ही एक बात साफ होती जा रही है कि भारत अमेरिका के बढ़ते संबंधों के कारण पाकिस्तान अलग-थलग पड़ता जा रहा है, जबकि कभी पाकिस्तान अमेरिका की नाक का बाल होता था। 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान अमेरिका ने भारत का डराने के लिए बंगाल की खाड़ी में अपना सातवां बेड़ा भेजा था। ■

पार्टी की मान्यता गवाने के बाद भी

रालोद सबके लिए प्रसांगिक

रालोद 2024 में किधर जायेगा, अटकलों का बाजार गरम

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ताकतवर राजनैतिक घराने की तीसरी पीढ़ी इस समय अपनी सियासी साख बचाने के लिए छटपटा रहा रही है। कभी भारतीय लोकदल के बैनर तले अपनी हनक और धमक दिखाने वाले किसान नेता और पूर्व प्रधानमंत्री एवं उससे पूर्व दो बार यूपी की मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज हो चुके चौधरी चरण सिंह और उसके बाद उनके पुत्र पूर्व केन्द्रीय मंत्री अजित सिंह जिन्हें लोग छोटे चौधरी के नाम से लोग बुलाते थे कि मृत्यु के बाद जब से राष्ट्रीय लोकदल की कमान जयंत चौधरी के हाथ आई है तब से राष्ट्रीय लोकदल का वजूद संकट में आ गया है।

स्वदेश कुमार

उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में तय मानक से कम वोट प्रतिशत मिलने के कारण पार्टी की मान्यता समाप्त हो गई है,लेकिन ऐसा लगता है कि इसके बाद भी रालोद सियासी डिमांड कम नहीं हुई है। करीब-करीब सभी बड़े राजनैतिक दल रालोद को अपने खेमें में लाने के लिए उत्साहित नजर आते हैं। आज भी राष्ट्रीय लोकदल सभी पार्टियों की चहेती बनी हुई हैतो इसकी वजह है पश्चिमी यूपी में जाट वोटों पर उसकी दमदार पकड़ ।वेस्ट यूपी में जाट वोटर हमेशा निर्णायक भूमिका में रहते हैं। किसी भी राजनैतिक दल को रालोद से गठबंधन करने में परहेज नहीं रहता है तो रालोद भी मौके की नजाकत भांप कर किसी भी पार्टी के साथ समझौता करने को तैयार रहता है। ऐसा ही अगले वर्ष होने वाले आम चुनाव में भी होता दिख रहा है। आम चुनाव की सुगबुगाहट सुनाई पड़ते ही रालोद को लेकर अटकलों का बाजार गरम हो गया है। फिलहाल तो रालोद का समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन है लेकिन 2024 के आम चुनाव तक यह बना रहेगा इसकी संभावनाएं काफी कम हैं क्योंकि रालोद को इस बार सपा के मुकाबले कांग्रेस ज्यादा मुफीद नजर आ रही है। जिसके साथ वह खुलकर मोलभाव कर सकता है। वहीं बात भाजपा की कि जाए तो भाजपा के इंटरनल रिपोर्ट बात रही है कि यदि वह पूरब में ओम प्रकाश राजभर और पश्चिमी यूपी में रालोद से गठबंधन कर लेती है तो उसकी जीत की राह आसान हो सकती है। भाजपा को राजभर और जयंत चौधरी की पार्टी से गठबंधन की सूरत में सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि वह(भाजपा) जिन मुस्लिम बाहुल्य सीटों पर नहीं जीत पाती है,वहां वह पश्चिम में रालोद या पूर्वी यूपी में राजभर के सहारे अपनी नैया पार लगा सकती है। रालोद की अच्छी खासी पकड़ जाट वोटरों के अलावा मुस्लिम वोटरों पर भी है। इसके मजबूत करने के लिए रालोद आजकल अभियान भी चलाए हुए है। रालोद ने यूं तो सभी धर्मों, वर्गों को साथ जोड़ने की बात कहकर अभियान की शुरूआत की, पर इसका फोकस खास तौर से मुस्लिमों पर है। यह भविष्य को पुख्ता करने की भी कवायद है ताकि यदि लोकसभा चुनाव तक सपा से राह अलग हो तो मुस्लिम उसके साथ ही रहें।

गौरतलब हो 2022 में सपा व रालोद ने विधानसभा चुनाव साथ लड़ा था। भले ही यह गठबंधन सत्ता की सीढ़ियां नहीं चढ़ पाया हो, पर रालोद को इसका खूब लाभ हुआ था। वह एक सीट से बढ़कर आठ तक पहुंच गया। बाद में खतौली उपचुनाव जीतकर संख्या नौ पहुंच गई। हाल ही में हुए नगर निकाय चुनाव में सीटों के बंटवारे को लेकर दोनों में मनमुटाव हुए तो कई जगह सपा व रालोद ने अपने अपने प्रत्याशी उतार दिए। रालोद प्रमुख जयंत चौधरी ने निकाय चुनाव में न तो सपा अध्यक्ष

अखिलेश यादव के साथ मंच साझा किया और न ही साथ में प्रचार में किया। हालांकि बाद में दोनों ने कहा कि क्षेत्रीय चुनाव में कार्यकर्ताओं को लड़ने की छूट दी गई थी।

पश्चिमी यूपी में आज के सियासी मिजाज की बात की जाए तो यहां मुस्लिमों को सपा का मजबूत वोटर माना जाता है। पश्चिमी उप्र में मुजफ्फरनगर दंगे से पहले रालोद के साथ यही स्थिति थी। मुस्लिम वोटर उसके साथ थे। इसके बाद जाट-मुस्लिम समीकरण बिखरा तो सपा-रालोद गठबंधन ने फिर से जोड़ने का कार्य किया। अब रालोद के रणनीतिकारों को लग रहा है कि यदि लोकसभा चुनाव 2024 तक उनका सपा से गठबंधन टूटा तो स्थिति फिर खराब हो सकती है। ऐसे में पार्टी कोई चूक नहीं करना चाहती है। यही कारण है कि उसने समरसता अभियान चला रखा है। यह और बात है कि पार्टी की ओर से यही कहा जा रहा है कि यह अभियान सभी जाति, धर्म एवं समाज के हर वर्ग को जोड़ने के लिए है, पर असल उद्देश्य कुछ और ही है। अभियान का पहला चरण पूर्व मंत्री स्व. चौधरी अजित सिंह के जन्मदिन 12 फरवरी से शुरू किया गया था। 19 मई से शुरू दूसरा चरण को जून मध्य तक ले जाने की बात कही जा रही है। तीसरा चरण जुलाई में शुरू करने की तैयारी है। इसके तहत जयंत चौधरी ने 100 से ज्यादा गांवों को अपने लिए रखा है। कहा जा रहा है कि लोकसभा में रालोद और कांग्रेस साथ आ सकते हैं। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस की जीत के बाद यह चर्चा और पुख्ता हो रही है। रालोद के राष्ट्रीय महासचिव त्रिलोक त्यागी कहते हैं कि कांग्रेस के साथ राजस्थान में तो रालोद खड़ी ही है। भरतपुर में रालोद के विधायक का कांग्रेस को समर्थन है। ऐसे में किसी से कोई गुरेज थोड़े ही है। वैसे भी अभी सपा, रालोद का सबसे मजबूत गठबंधन है और बाकी को इसके पीछे चलना चाहिए। बात 17 वीं लोकसभा के गठन के लिए अप्रैल-मई 2019 के बीच सात चरणों में हुए थे। 23 मई को काउंटिंग हुई थी। साल 2024 में इन्हीं तिथियों के आसपास फिर से चुनाव होने की संभावना है, ऐसे में सियासी दलों ने तैयारी शुरू कर दी है। पश्चिम में छह मंडल मेरठ, सहारनपुर, मुरादाबाद, आगरा, अलीगढ़, बरेली हैं। इनमें 27 लोकसभा और 136 विधानसभा सीटें हैं जिसमें मेरठ, सहारनपुर और मुरादाबाद मंडल में 14 लोकसभा सीटे हैं। यहां 7 पर बीजेपी जीती थी और 7 सहारनपुर, अमरोहा, बिजनौर, नगीना, मुरादाबाद, संभल, रामपुर सीट पर विपक्ष जीता था। वैसे भाजपा के पास वर्तमान में आठ सीटें हैं और छह सीट विपक्ष के पास बची हैं। बीजेपी लोकसभा उपचुनाव में रामपुर सीट हाल में जीत चुकी है, इसके अलावा आगरा-अलीगढ़ और बरेली मंडल की कुल 13 लोकसभा सीटें हैं। इनमें से भाजपा के पास 12 और एक मैनपुरी सीट विपक्ष के पास है। यानी बीजेपी के पास फिलहाल 27 में से 20 सीटें हैं। वहीं रालोद की बात करें तो 2022 विधानसभा चुनाव में 33 सीटों पर चुनाव लड़ा, जिसमें से 8 पर जीत हासिल की। इसके अलावा खतौली उपचुनाव जीत कर कुल 9 विधायक हो गए। 2019 के लोकसभा चुनाव में सपा-बसपा के साथ मिलकर पार्टी ने दांव खेला था। रालोद के खाते में जाटों के दबदबे वाली बागपत, मुजफ्फरनगर और मथुरा सीटें आईं, लेकिन तीनों पर गठबंधन को पराजय का सामना करना पड़ा था। ■

सरकारी तंत्र को सुधारे बिना कुछ नहीं होगा

दिल्ली हाईकोर्ट ने मुखर्जी नगर स्थित एक कोचिंग सेंटर में गुरुवार को लगी आग की घटना का शुक्रवार को खुद से संज्ञान लिया। कोर्ट ने दिल्ली सरकार, दिल्ली फायर सर्विस डिपार्टमेंट, दिल्ली पुलिस और एमसीडी को नोटिस जारी कर उनसे जवाब मांगा है। कोर्ट ने फायर सर्विस डिपार्टमेंट को निर्देश दिया कि वो ऐसे सभी संस्थानों में आग से बचाव के इंतजामों (फायर सेफ्टी ऑडिट) और उनके फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट की जांच करे। न्यायालय ने आदेश कर दिया। ये ही आदेश जांच अधिकारियों ने लिए लूट का अधिकार दे देगा। इस आदेश के बाद जांच अधिकारी जाएंगे, कोचिंग सैंटर में कमी निकालेंगे, नोटिस देंगे।

पवन आगरी

अपना सुविधा शुल्क वसूलेंगे और कुछ दिनों बाद सब फाइलों में दबकर रह जाएगा। कुछ समय बाद फिर हादसा होगा, फिर जांच होंगी। फिर अधिकारियों को आपदा में अवसर मिलेंगे, फिर खेल होगा। सब ऐसे ही चलता रहेगा, जैसे चल रहा है। इस भ्रष्ट हो चुकी सरकारी मशीनरी के सुधरने की उम्मीद नहीं लगती। कठोर अनुशासन लागू किये बिना ये सुधरने वाली नहीं। जरूरत सरकारी तंत्र को सुधारने की है। जस्टिस जसमीत सिंह और जस्टिस विकास महाजन की वेकेशन बेंच ने आदेश में कहा कि हमने अखबारों में छपी घटना से जुड़ी खबर और वॉट्सएप पर सर्कुलेट हो रहे मैसेज देखे। अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक, मुखर्जी नगर में डीडीए कमर्शल सेंटर की चार मंजिला बिल्डिंग में चल रहे एक कोचिंग सेंटर में पढ़ने वाले 500 बच्चे बाल-बाल बचे। हम दिल्ली सरकार, दिल्ली फायर सर्विस डिपार्टमेंट, एमसीडी और दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी करते हैं। फायर सर्विस डिपार्टमेंट को निर्देश देते हैं कि वो ऐसी सभी इमारतों का फायर सेफ्टी ऑडिट करें ताकि यह तय किया जा सके कि उनमें पर्याप्त अग्नि सुरक्षा उपाय मौजूद हैं या नहीं। इसी बीच दिल्ली सरकार के स्टैंडिंग काउंसिल (स्थायी अधिवक्ता) संतोष कुमार त्रिपाठी ने कोर्ट से कहा कि इन संस्थानों के पास फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट है या नहीं, इसकी जांच करना भी जरूरी है। लिहाजा, कोर्ट ने निर्देश दिया कि फायर सर्विस अथॉरिटी यह भी देखेगी कि इन संस्थानों के पास फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट है या नहीं। कोर्ट ने अथॉरिटी को अपने-अपने जवाब देने के लिए दो हफ्तों का वक्त दिया और कहा कि मामले को आगे के निदेर्शों के लिए चीफ जस्टिस की कोर्ट में तीन जुलाई को सुनवाई के लिए लगाया जाए।

दिल्ली के मुखर्जी नगर के कोचिंग सेंटर में आग लग गई थी। छात्रों को कोचिंग सेंटर की खिड़की से निकलर जान बचानी पड़ी। इस हादसे में 60 छात्र घायल भी हुए। आग लगने का कारण बताते हुए अधिकारियों ने कहा कि शुरूआती जांच में पता चला है कि बिल्डिंग में ग्राउंड फ्लोर पर लगे मीटर में आग लगी थी, जिसका धुआं पूरी बिल्डिंग में फैल गया। धुआं निकलते ही पूरी बिल्डिंग में अफरा-तफरी मच गई जिसके बाद छात्रों ने खिड़कियों से बिल्डिंग से बाहर आने की कोशिश की और उनमें से कुछ को चोटें आईं। इस हादसे में घायल 60 लोगों को इलाज के लिए तीन अस्पतालों में भर्ती कराया गया, घटना स्थल का जिला क्राइम टीम ने मुआयना किया और फोटोग्राफी भी की। इस घटना के समय बिल्डिंग में संचालित विभिन्न कोचिंग सेंटरों में 200-250 छात्र मौजूद थे। दिल्ली फायर सर्विस के निदेशक अतुल गर्ग ने बताया कि आग लगने की सूचना दोपहर 12:27 मिनट पर मिली थी, जिसके बाद 11 गाड़ियों को मौके पर भेजा गया और राहत व बचाव कार्य शुरू किया गया। दमकल विभाग ने इस घटना का एक वीडियो भी साझा किया था जिसमें लोगों को खिड़कियों के माध्यम से बाहर निकलते हुए देखा जा सकता है। इमारत से धुआं निकलते हुए भी देखा जा सकता है। खिड़की से निकले छात्र अपना बैग फेंकते और एक-दूसरे की मदद करते नजर आए। आग लगने की घटना के बाद इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। दमकल विभाग के अधिकारियों ने कहा कि राहत व बचाव कार्य में जुटी दमकल की गाड़ियों ने आग पर काबू पा लिया है। दरअसल मखर्जी नगर हिंदी भाषी छात्रों का सिविल सेवा की तैयारी करने का बड़ा केंद्र बन गया है। यहां कई कोचिंग संस्थानों का घर है। सिविल सर्विसेज परीक्षा की तैयारी के लिए इसे मक्का कहा जाता है। हर वर्ष सिविल सर्विसेज की परीक्षा में सबसे ज्यादा अभ्यर्थी भी यहीं से चयनित होते हैं। एक जानकारी के अनुसार यूपीएससी की सिविल सर्विसेज परीक्षा की तैयारी करने के लिए मुखर्जी नगर व आसपास के क्षेत्रों में प्रत्येक वर्ष करीब एक लाख छात्र तैयारियों के लिए पहुंचते है। मुखर्जी नगर इलाका अपने आप में मिनी भारत है। दिल्ली यूनिवर्सिटी के जिन छात्रों को हॉस्टल नहीं मिलती है, वे भी यहीं रहकर पढ़ाई करते हैं। यहां हर वर्ष प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के लिए उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, हरियाणा, कर्नाटक, उड़ीसा, पूर्वोत्तर राज्यों से भी छात्र पहुंचते हैं। मुखर्जी नगर में यूपीएससी की सिविल सर्विसेज की तैयारी करने वाले महंगे से लेकर सस्ते कोचिंग भी मौजूद हैं। यही वजह है कि यहां पर आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से आने वाले बच्चे भी अपनी तैयारी आसानी से कर लेते हैं।

मुखर्जी नगर रिहायशी इमारतों में व्यावसायिक गतिविधियां चलाने का गढ़ बन चुका है। बीते एक दशक में यहां कोचिंग सेंटरों की बाढ़ आ गई है। ज्यादातर घरों में या तो कोचिंग सेंटर चल रहे हैं या फिर लाइब्रेरी या पीजी बनाकर संपत्ति मालिक चांदी काट रहे हैं लेकिन नगर निगम को शुल्क देने में अब भी कतराते हैं। इन संपत्तियों का व्यावसायिक उपयोग हो रहा है लेकिन संपत्ति मालिकों ने अभी तक इनका कन्वर्जन नहीं कराया। इस हादसे के बाद निगम के अनुसार अभी तक छह संपत्तियां सील हैं जबकि तीन संपत्ति मालिकों ने हलफनामा देकर सील खुलवा ली थी कि वह भविष्य में फिर से इसका व्यावसायिक उपयोग नहीं करेंगे। निगम सूत्रों के ज्यादातर इमारतों को कोचिंग संस्थान में बदलने के लिए भवन उपनियमों का उल्लंघन किया गया है। तय मानकों को नजरअंदाज कर कमरों को हाल में तब्दील कर दिया गया है। इसके चलते कई इमारतें ढांचागत रूप से कमजोर भी हो गई हैं। इन इमारतों की जांच भी जाएगी। एक अधिकारी ने बताया कि जो इमारत भवन निर्माण के नियमों का उल्लंघन करते हुए पाई जाएगी, उन पर भी कार्रवाई की जाएगी। कोचिंग संस्थान में सुरक्षा की मांग को लेकर सैकड़ों छात्रों ने पिछले दिनों सड़क जाम कर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। आक्रोशित छात्रों का कहना है कि मुखर्जी नगर स्थित कोचिंग संस्थानों में आग से बचने के लिए कोई पुख्ता प्रबंध नहीं हैं।

अबतक यूपीएससी, एसएससी आदि की तैयारी करने वाले छात्र कोचिंग संस्थान संचालकों की मनमानी के खिलाफ आवाज नहीं उठा पा रहे थे। इन्हें क्लास में भेड़-बकरियों की तरह ठूस कर पढ़ाया जाता है। घटना के बाद छात्र आक्रोशित हैं। उन्होंने रातभर प्रदर्शन किया व कोचिंग संस्थानों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। इसके बाद अगले दिन दोपहर को पुलिस अधिकारी के आश्वासन के बाद उन्होंने धरना समाप्त किया। कई छात्रों ने बताया कि एक कक्षा में 500 से 700 छात्रों को पढ़ाया जाता है। इतने बच्चों के बीच सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। जांच में प्रकाश में आया कि जब इमारत का निरीक्षण किया गया तो अग्नि सुरक्षा के पर्याप्त उपाय नहीं थे। इमारत की छत पर टैंक में पानी नहीं था। इसके अलावा बिल्डिंग में लगे अग्निशमन यंत्र पुराने लगे हुए थे, जो काम करने की स्थिति में नहीं थे। भवन में धुएं के संकेतक भी नहीं लगे थे। लक्ष्मी नगर से लेकर मुखर्जी नगर, कालू सराय, कटवारिया सराय और राजेंद्र नगर जैसे इलाके कोचिंग सेंटरों के हब बन चुके हैं। ज्यादा पूछताछ इस काम में होती नहीं है और नियमों में भी तिकड़म चल जाता है। इसलिए मकान मालिक भी संपत्ति को किराये पर देकर मुनाफा कमा रहे हैं। दिल्ली नगर निगम के अनुसार मुखर्जी नगर वार्ड क्षेत्र में 631 व्यावसायिक संपत्तियां हैं। इसमें से 524 ने कन्वर्जन चार्ज जमा करा रखा है लेकिन शेष 107 ने अभी तक कन्वर्जन चार्ज नहीं जमा कराया है। हालांकि निगम ने इसके लिए नोटिस जारी कर रखे हैं। 25 मई 2019 को गुजरात के सूरत के एक कोचिंग में आग लगने से 22 छात्र की मौत के बाद गुजरात सरकार ने अग्नि सुरक्षा निरीक्षण किए जाने तक गुजराज सरकार ने राज्य के सभी निजी कोचिंग केंद्रों को बंद करने का आदेश दिया। सरकार ने स्कूलों, कॉलेजों, कोचिंग सेंटरों, अस्पतालों, शॉपिंग मॉल और अन्य व्यावसायिक भवनों के अग्नि सुरक्षा निरीक्षण का भी आदेश दिया। दिल्ली अग्निशमन सेवा ने दिल्ली के सभी कोचिंग सेंटरों का अग्नि सुरक्षा निरीक्षण करने का निर्णय लिया था। उस समय भी आदेश हुए थे। जांच हुई। नियमों के विपरीत चलने वालों को नोटिस देकर कार्रवाई पूरी कर दी गई। लोगों से संबधित अधिकारियों का प्रसन्न कर दिया। काम पहले ही तरह ही चलता रहा। इसमें भी ऐसा ही होता लगता है। दरअस्ल इस तरह की बड़ी घटनाएं संबधित अधिकारियों की आय का माध्यम बनते हैं। देखने में आया है कि अग्निशमन विभाग के अधिकारी निरीक्षण कर कमी बता देते हैं। नोटिस भेज देतें हैं। ■

कठमुल्ले इकबाल को महान कहना तो बंद कीजिए

हरिश्चन्द्र शर्मा

मोहम्मद इकबाल को दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम से हटा दिया है। इस फैसले का वे सभी स्वागत तो करेंगे ही जिन्होंने इकबाल को करीब से पढ़ा है। आमतौर पर इकबाल को लेकर दो बातें बताकर ही उन्हें अबतक महान बताया जाता रहा है। पहला, कि उन्होंने सारे जहां से अच्छा हिंदुस्ता हमारा... जैसा गीत लिखा। दूसरा, कि उन्होंने ही राम की शान में एक कविता लिखी। पर कभी यह नहीं बताया जाता या आधुनिक भारत के ज्ञानी लोगों को पता नहीं है कि उन्होंने अमृतसर में हुए जलियांवाला बाग नर संहार पर एक शब्द भी निंदा का नहीं कहा था। हालांकि, वे तब अमृतसर के करीब लाहौर में ही थे। जलियांवाला कांड को याद करके अब भी आम हिंदुस्तानी सहम जाते हैं। उनमें गोरी ब्रिटिश सरकार से बदला लेने की भावना जाग जाती है। जलियांवाला कांड ने भारत के लाखों नौजवानों को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ खड़ा कर दिया था। पर इकबाल निर्विकार भाव से सारी चीजों को देखते रहे थे। पाकिस्तान के चोटी के इतिहासकार डॉ. इश्तिहाक अहमद कहते हैं कि मोहम्मद इकबाल ने जलियांवाला कांड पर चुप्पी साध ली थी। उन्होंने गोरी सरकार के खिलाफ जलियांवाला कांड पर न तब और न ही बाद में कभी कुछ लिखा। जरा सोचिए, कि उस जघन्य नरसंहार को लेकर इतने नामवर शायर की कलम की स्याही सूख गई थी या कुछ और था? वे उन मारे गए मासूमों के चीखने की आवाजों से मर्माहत नहीं हुए थे शायद वे किसी कारण से प्रसन्न ही हुये हों। क्या पता? दरअसल जलियांवाला नरसंहार की शुरूआत रोलेट एक्ट के साथ शुरू हुई, जो 1919 में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के उद्देश्य से तैयार किया गया था। इस एक्ट को जलियांवाला बाग की घटना से करीब एक माह पूर्व 8 मार्च को गोरी सरकार ने पारित किया था। इस अधिनियम को लेकर पंजाब सहित पूरे भारत में भयंकर विरोध शुरू हुआ। विरोध प्रदर्शन के लिए अमृतसर में, जलियांवाला बाग में प्रदर्शनकारी इकट्ठा थे। वे रोलेट एक्ट के खिलाफ शांति से विरोध कर रहे थे। विरोध प्रदर्शन में पुरुष, महिलाओं के साथ बच्चे भी मौजूद थे। तभी जनरल डायर के नेतृत्व में सैनिकों ने जलियांवाला बाग में प्रवेश किया और एकमात्र निकासी द्वार को दुष्टतापूर्वक बंद करव दिया ताकि कोई भागने तक न पाये। इसके बाद डायर ने सैनिकों को वहां मौजूद निहत्थे लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलाने का आदेश दे दिया था। उसके कुछ ही क्षणों के बाद वहां लाशों के ढेर जमा हो गए थे।

इकबाल के विपरीत गुरुदेव रविन्द्रनाथ टेगौर ने अपना सर का खिताब ब्रिटिश सरकार को वापस कर दिया था। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने सर की उपाधि जलियांवाला कांड की घोर निंदा करते हुए लौटाई थी। उन्हें साल 1915 में गोरी सरकार ने 'नाइट हुड' की उपाधि दी थी। इसके विपरीत इकबाल ने जलियांवाला नरसंहार कत्लेआम के कुछ सालों के बाद शायद पुरस्कार स्वरुप 1922 में सर की उपाधि ली। शायद अंग्रेजों ने इकबाल को उनकी चुप्पी का इनाम दिया। इकबाल को महान बताने वाले जरा उनके 29 दिसंबर, 1930 को अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के प्रयागराज में हुए सम्मेलन में दिए अध्यक्षीय भाषण को पढ़ लें। तब उनकी आंखें खुल जाएंगी। इकबाल अपनी लंबी तकरीर में पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा राज्यों को और स्वायत्तता देने की मांग करते हैं। ये सभी राज्य मुस्लिम बहुल थे। इनमें मुसलमानों की आबादी 70 फीसद से अधिक थी। वे अपने भाषण में कहीं भी इन राज्यों में रहने वाले अल्पसंख्यकों के पक्ष में कोई मांग नहीं रखते। चर्चा तक नहीं करते कवे मुस्लिम बहुल राज्यों में उन्हीं को अतिरिक्त शक्तियां देने की वकालत करते थे। इन सभी सूबों और पूर्वी बंगाल (बाद में बना पूर्वी पाकिस्तान) की ही वकालत इकबाल ने सदा की है क तो इकबाल ने एक तरह से पाकिस्तान का ख्वाब 1930 में ही देखना चालू कर दिया था। हालांकि पाकिस्तान की मांग उनकी मृत्यु के बाद में लाहौर में 23 मार्च, 1940 को मुस्लिम लीग ने पहली दफा की थी। सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा... जैसा तराना लिखने वाले इकबाल 1910 में तराना-ए-मिल्ली नज्म लिखते हैं। इसमें उनके तेवर बदलते हैं। वे बहुलतावादी भारत के विचार को खारिज करते हैं। तराना-ए-मिल्ली की चंद पंक्तियों को पढ़ लीजिए। चीन-ओ-अरब हमारा हिन्दोस्ताँ हमारा । मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहाँ हमारा। यानी सारे जहां से अच्छा... लिखने वाला शायर रास्ते से भटकता है या अपने दिल की बात जुबान पर ले ही आता है। हैरानी इस बात पर होती है कि देश के सेक्युलरवादी सच को स्वीकार ही नहीं करते। वे इकबाल को उनकी एक रचना के आधार पर ही महान बताते रहते हैं। खैर, दिल्ली विश्वविद्यालय के इकबाल को लेकर लिए गए फैसले से मशहूर हिंद पॉकेट बुक्स को शुरू करने वाले मल्होत्रा परिवार को अवश्य संतोष पहुंचा होगा। इस परिवार ने उपर्युक्त फैसले को मीडिया के माध्यम से पढ़ा भी होगा। मल्होत्रा परिवार का इकबाल से गिला जायज है। दशकों और कई पीढ़ियों के बाद भी उनके मन के किसी कोने में यह बात रहती है कि इकबाल ने उनके साथ इंसाफ नहीं किया था। इकबाल उस शख्स के जनाजे में शामिल हुए थे जिसने मल्होत्रा परिवार के पुराण पुरुष राजपाल का कत्ल किया था। हत्यारे का नाम था इल्मउद्दीन। यह बात एक सदी पहले के लाहौर की है। इल्मउद्दीन ने 1923 में प्रताप प्रकाशन के मालिक राजपाल की नृशंस हत्या कर दी थी। वो राजपाल से नाराज इस बात से था क्योंकि उन्होंने रंगीला रसूल नाम से एक किताब प्रकाशित की थी। इसके छपते ही पंजाब में कठमुल्ले भड़क गए थे। उनका कहना था कि लेखक ईशनिंदा का दोषी है। वे लेखक को खोजने लगे। लाहौर में लेखक के खिलाफ आंदोलन चालू हो गये। किताब में लेखक का नाम नहीं था। राजपाल लेखक का नाम गुप्त रखना चाहते थे। जब लेखक नहीं मिला तो इल्मउद्दीन ने प्रकाशक राजपाल का ही कत्ल कर डाला। हत्यारे को गिरफ्तार कर लिया गया। बहरहाल, इल्मउद्दीन हीरो बन चुका था। जब उस पर केस चल रहा था उस वक्त इकबाल उसके पक्ष में माहौल बना रहे थे। यानी वो एक हत्यारे के साथ खड़े थे। उनकी गुजारिश पर मुंबई से मोहम्मद अली जिन्ना भी पैरवी करने आए। पर कोर्ट ने इल्मउद्दीन को फांसी की सजा सुनाई थी। उसे 1929 में फांसी के बाद जब लाहौर में दफनाने के लिए लोग कब्रिस्तान में लेकर जा रहे थे तब इकबाल भी थे। ऐसे थे धर्मनिरपेक्ष कठमुल्लों के आदर्श शायर इकबाल! ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

चिंताजनक

अभी तक 427 मामले दर्ज कर 833 लोगों को किया गिरफ्तार किया जा चुका है।

अफसोस की बात यह है कि अक्सर यह देखने को मिलता है कि मुसलमानों का बड़ा तबका इस्लाम पर थोपी गई कुरीतियों का विरोध करने की बजाए उसके साथ खड़ा रहता है। राजीव गांधी की सरकार के समय सुप्रीम कोर्ट ने एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला को गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया तो इन लोगों ने इतना बवाल काटा कि वोट बैंक को खुश करने के चक्कर में राजीव गांधी सरकार को कानून बनाकर इस फैसले पर रोक लगानी पड़ गई।

लव जेहाद

जैसी कुरीतियों के पक्ष में क्यों खड़े नजर आते हैं मुसलमान

अजय कुमार

इसी प्रकार तीन तलाक, हलाला, बहुविवाह प्रथा, लव जेहाद जैसे घटनाओं के समय पर भी मुसलमानों का यही रवैया रहता है। किसी धर्म की पहचान आतंकवाद, लव जेहाद, गेमिंग जेहाद, धर्मांतरण, कथित तौर पर काफिरों के खिलाफ जेहाद, अन्य धर्मों को अपने धर्म से नीचा और छोटा समझने जैसी साजिशों तक सीमित होकर रह जाए तो उस धर्म के अनयायियों, बुद्धिजीवियों और धर्मालंबियों की यह नैतिक ही नहीं बल्कि धार्मिक जिम्मेदारी भी बनती है कि वह अपनी कौम को ऐसी बुराइयों से दूर ले जाने के लिए अपने समाज में जनजागृति अभियान चलाएं। ऐसी कुरीतियों से निपटने की बजाए दूसरे धर्मों पर कीचड़ उछालना कभी भी, किसी भी तरह से तर्कसंगत नहीं हो सकता है। खासकर भारत जैसे धर्मनिरेपक्ष देश में तो ऐसी मानसिकता वाले लोग कतई स्वीकार नहीं किए जा सकते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ कोर्ट और सरकार तो कार्रवाई करती ही है, लेकिन जब तक ऐसी मुहिम में आमजन का सहयोग नहीं मिलता है, तब तक सब अधूरा ही रहता है, लेकिन देश का यह दुर्भाग्य है कि ऐसे लोगों का समाज में अकाल पड़ता जा रहा है जो सच कहने या सुनने की हिम्मत रखते हों। इसी लिए उक्त तरह की समस्याएं और भी गहरी और गंभीर होती जा रही हैं, इसीलिए तो देश में लव जेहाद, धर्मांतरण जैसे नापाक कृत्यों में लगे लोगों के न केवल हौसले बुलंद हैं बल्कि अपने कृत्य के चलते यह लोग सभ्य समाज के माथे पर कलंक जैसे हो गए हैं। किसी धर्म के लोग देश की बहुसंख्यक आबादी का इस्लामीकरण करने का सपना पालते हुए 2047 तक हिन्दुस्तान का पूरी तरह से इस्लामीकरण करने का दावा करते हों तो और इसके बाद यह भी चाहते हों कि उनके खिलाफ दूसरे धर्म के लोग मुंह नहीं खोले तो यह कैसे हो सकता है। क्योंकि हर क्रिया की प्रतिक्रिया जरूर होती है। जैसा की हाल में उतराखंड में देखने को मिला जहां, लव जेहाद की एक घटना की गूंज सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गई।

गौरतलब हाल ही में उत्तराखंड में कुछ हिन्दू संगठनों ने पुरोला में लव जेहाद के खिलाफ एक महापंचायत बुलाई थी, जिसको रोकने के लिए जमीयत उलेमा-ए-हिंद सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस रिट पर महापंचायत पर रोक से इनकार कर दिया। कोर्ट ने याचिकाकर्ता को हाईकोर्ट या फिर संबंधित अधिकारियों से संपर्क करने की सलाह दी। उधर, जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष महमूद असद मदनी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी को इस मामले में चिट्ठी लिखी। मदनी ने उत्तरकाशी की घटना पर चिंता जाहिर की है। उन्होंने अपनी चिट्ठी में महापंचायत को रोकने के अनुरोध किया है। मदनी ने कहा कि ऐसा नहीं होने पर

> **राजीव गांधी की सरकार के समय सुप्रीम कोर्ट ने एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला को गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया तो इन लोगों ने इतना बवाल काटा कि वोट बैंक को खुश करने के चक्कर में राजीव गांधी सरकार को कानून बनाकर इस फैसले पर रोक लगानी पड़ गई। इसी प्रकार तीन तलाक, हलाला, बहुविवाह प्रथा,लव जेहाद जैसे घटनाओं के समय पर भी मुसलमानों का यही रवैया रहता है।**

उत्तराखंड में कानून व्यवस्था बिगड़ सकती है। सवाल यही उठता है कि जमीयत ने सुप्रीम कोर्ट जाने का ही रास्ता क्यों चुना। वह इस घटना की निंदा करने से क्यों बच रहा है। किसी लड़की को अपना धर्म और नाम बदल कर बरगलाना, यहां तक की उसे भगा तक ले जाना, इस्लाम और कुरान की रोशनी में कैसे जायज हो सकता है। ऐसी हजारों घटनाएं हो रही हैं, लेकिन मुस्लिम मौलाना और बुद्धिजीवी ऐसी घटनाओं की निंदा करने का कभी साहस नहीं करते हैं। यही कथित इस्लाम का घिनौना स्वरूप है। जहां सच्चे मुसलमानों पर झूठे और मक्कार मुसलमान हावी हैं। ऐसे ही झूठे और मक्कार मुसलमानों से हिन्दू लड़कियों को बचाने के लिए ही धर्मांतरण विरोधी कानून बनाया गया है। उत्तराखण्ड की धामी सरकार इस कानून का सख्ती से पालन भी करती है। लेकिन उत्तराखंड सरकार योगी सरकार जैसी तेजी नहीं दिखा पा रही है।

बात उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की कि जाए तो उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा धर्मांतरण विरोधी कानून लागू करने के बाद प्रदेश में धर्मांतरण व लव जिहाद पर अंकुश लगा है। अभी तक 427 मामले दर्ज कर 833 लोगों को किया गिरफ्तार किया जा चुका है। योगी सरकार ने 27 नवंबर 2020 को धर्मांतरण विरोधी कानून लागू किया था। उससे पहले प्रदेश में धर्मांतरण व लव जिहाद के सैकड़ों मामलों की शिकायतें आ रही थीं। कानून लागू होने के बाद सबसे ज्यादा विरोध भी कांग्रेस ने ही किया था। योगी सरकार ने इस मामले में अपना रवैया सख्त ही रखा, जिसके चलते आज प्रदेश में धर्मांतरण के मामलों की संख्या में काफी ज्यादा गिरावट आ गई है। 30 अप्रैल 2023 तक धर्मांतरण के 427 मामले दर्ज किए गए। वहीं 833 लोगों की गिरफ्तारी की जा चुकी है। 185 मामलों में पीड़ितों ने कोर्ट के सामने जबरन धर्मांतरण की बात कबूली है। वहीं नाबालिगों का धर्मांतरण करवाने को लेकर 65 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। बरेली में धर्मांतरण के सबसे ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं। धर्मांतरण के अभियान में जुटे लोगों ने दिव्यांगों को भी नहीं बख्शा था।

यूपी में दिव्यागों का धर्मांतरण करवाने वाले रैकेट का भंडाफोड़ पुलिस ने किया था। इस कानून के तहत लव जिदाह को रोकने के लिए अंतर-धार्मिक विवाह करने वाले जोड़ों को शादी करने से दो महीने पहले जिला मजिस्ट्रेट को सूचित करने का प्रावधान किया गया है। कानून लागू होने के बाद योगी ने स्पष्ट किया था कि बेटियों की सुरक्षा और सम्मान के लिए उनकी सरकार प्रतिबद्ध है। ज्ञातव्य हो धर्मांतरण विरोधी कानून तब लागू होता है जब कभी धोखे में रखकर, लालच देकर, जबरन अथवा किसी अन्य प्रकार से दबाव देकर, विवाह कर धर्मांतरण करवाया जाता है। यदि नाबालिग, अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति की महिला का धर्मांतरण या सामूहिक धर्मांतरण करवाया जाता है या फिर मात्र विवाह के लिए धर्मांतरण किया जा रहा है तो वह विवाह अमान्य होगा। धर्मांतरण विरोधी कानून में दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति को अपराध की गंभीरता के आधार पर 10 साल तक की जेल, जुर्माने की राशि 15 हजार से 50 हजार तक का प्रावधान है। जबरन धर्मांतरण कराने पर न्यूनतम 15 हजार रुपये के जुर्माने के साथ एक से पांच साल की कैद का प्रावधान तो एससी व एसटी समुदाय के नाबालिगों और महिलाओं के धर्मांतरण पर तीन से 10 साल की सजा का प्रावधान है। जबरन सामूहिक धर्मांतरण के लिए तीन से 10 साल जेल और 50 हजार जुर्माना लगाया जाता है। अफसोस की बात यह है कि अक्सर यह देखने को मिलता है कि मुसलमानों का बड़ा तबका इस्लाम पर थोपी गईं कुरीतियों का विरोध करने की बजाए उसके साथ खड़ा रहता है। राजीव गांधी की सरकार के समय सुप्रीम कोर्ट ने एक बुजुर्ग मुस्लिम महिला को गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया तो इन लोगों ने इतना बवाल काटा कि वोट बैंक को खुश करने के चक्कर में राजीव गांधी सरकार को कानून बनाकर इस फैसले पर रोक लगानी पड़ गई। इसी प्रकार तीन तलाक, हलाला, बहुविवाह प्रथा, लव जेहाद जैसे घटनाओं के समय पर भी मुसलमानों का यही रवैया रहता है। ■

2024 चुनावी रण के लिए अमेरिका, मिस्त्र स्टेट विजिट

गेम चेंजर साबित होगी?

वैश्विक स्तर पर भारत के अमेरिका और मिस्त्र स्टेट विजिट की रणनीतिक सफलताओं की गाथाएं लिखना, गाना शुरू हो गया है। हर हिंदुस्तानी अब वैश्विक लीडर बनने पर गर्व कर रहा है। जिस तरह अमेरिका ने जबरदस्त मेजबानी दी और मिस्त्र ने अपने देश का सर्वोच्च सम्मान आर्डर ऑफ नाइस बड़ी शिद्दत के साथ दिया तो अब हम वैश्विक लीडर की गिनती में आ चुके हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है। मेरा मानना है कि एक दूरदर्शी, केवल सफलता पर लक्ष, लक्ष्य भेदी रणनीति, परफेक्ट कांफिडेंट और ज्ञानी सोच विचारधारा ही चल सकती है। जिसका उदाहरण हमने अमेरिका मिस्त्र स्टेट विजिट में देख लिया। उधर 2024 का रण मुंह खोले खड़ा है, तो इधर विपक्षी महा गठजोड़ की खूंटी गड़ चुकी है।

सौरभ सिंह

मेरा मानना है कि यह अंदर की बात है या हो सकती है, रण 2024 में इन दूरगामी बाधाओं का पूवार्नुमान कर अमेरिका और मिस्त्र यात्रा का चुना जाना या संयोग भी हो सकता है। परंतु जैसी वर्तमान में स्थिति उत्पन्न हुई है उससे तो मुझे यही लगता है 2024 रण की दौड़- विपक्षी महा गठजोड़-अमेरिका मिस्त्र यात्रा से आएगा अपेक्षा से अधिक मोड़! क्योंकि एक तीर से दो निशान लगे हैं। वैश्विक लीडर की उपलब्धि और एक समुदाय विशेष से जुड़ने का अवसर! क्योंकि एक समुदाय बाहुल्य मुल्क में ऐतिहासिक अल हकीम मस्जिद का दौरा, हेलियोपोलिस कब्रिस्तान में भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि को मुद्दा बनाकर 25 जून 2023 को विपक्षी दलों ने 2024 का चुनावी स्टंट करार दिया है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे कि 2024 चुनावी रण के लिए अमेरिका मिस्त्र स्टेट विजिट गेमचेंजर साबित होंगे। साथियों बात अगर हम माननीय पीएम के 24-25 जून 2023 मिस्त्र दौरे की करें तो मिस्त्र का सबसे बड़ा सम्मान आर्डर ऑफ नाइन दिया गया है। अमेरिका में अपनी सहजता और सरलता की छाप छोड़ने के बाद पीएम ने मिस्त्र दौरे पर राजधानी काहिरा पहुंचे और वहां ऐतिहासिक अल-हकीम मस्जिद का दौरा किया। यहां पीएम ने हेलियोपोलिस कब्रिस्तान में भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। उधर काहिरा पहुंचने पर दाऊदी बोहरा समुदाय के लोगों ने हाथ में तिरंगा लहराते हुए पीएम का जोरदार स्वागत किया। इन सब के बीच देश में राजनीति भी चरम पर है। जानकारों की मानें तो पीएम का दाऊदी बोहराओं के साथ काफी पुराना रिश्ता रहा है। इस बात का पता इससे चलता है जब पीएम गुजरात के सीएम हुआ करते थे। बात साल 2011 की है, पीएम जब गुजरात के सीएम थे तो उन्होंने दाऊदी बोहरा समुदाय के धार्मिक प्रमुख सैयदना बुरहानुद्दीन का 100वां जन्मदिन मनाने के लिए समुदाय को आमंत्रित किया था।

बता दें कि पीएम ने अल-हकीम मस्जिद में लगभग आधा घंटा बिताया, जहां पीएम ने काहिरा में हेलियोपोलिस युद्ध कब्रिस्तान का दौरा किया और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सर्वोच्च बलिदान देने वाले भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। पीएम की मिस्त्र की राजकीय यात्रा भारत और मिस्त्र के बीच बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण बताई जा रही है। पीएम के इस दौरे को कई मायनों में बेहद खास बताया जा रहा है। अल-हकीम मस्जिद में पीएम मोदी के दौरे को भी महत्वपूर्ण बताया जा रहा है। करीब 26 साल बाद भारत के पीएम मिस्त्र दौरे से होकर आ गए हैं। इससे पहले साल 1997 में भारत के पीएम मिस्त्र दौरे पर गए थे। बता दें कि

> **अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 2024 चुनावी रण के लिए अमेरिका मिस्त्र स्टेट विजिट गेम चेंजर साबित होगी। 2024 रण की दौड़ – विपक्षी महा गठजोड़ – अमेरिका मिस्त्र यात्रा से आएगा अपेक्षाकृत सफल मोड़। चुनावी रण 2024 के लक्ष्य पर सफल अमेरिका मिस्त्र यात्रा सटीक निशाना साबित होने की उम्मीद बढ़ी।**

पीएम ने मिस्त्र को जी 20 सम्मिट में शामिल होने का आमंत्रण दे दिया है। विपक्षी दलों ने इसे 2024 के चुनावी स्टंट का एक रूप बताया तो एक बड़ी विपक्षी पार्टी ने पीएम पर हमला बोलते हुए कहा कि अगर समुदाय की इतनी ही चिंता थी तो यही काम देश में करना था। इसकी शुरूआत गुजरात से ही करते या फिर उत्तर प्रदेश में कर लेते। वहीं सत्ताधारी पार्टी ने पलटवार करते हुए कहा कि पीएम की देश में सरकार आने के बादअल्पसंख्यकों के जीवन स्तर में जो परिवर्तन आया, किसी भी सरकार में नहीं हो पाया था। इसके अलग यह यात्रा एक पारस्परिक संकेत है और दोनों देशों के बीच संबंधों को गहरा करने की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालती है। बता दें कि मिस्त्र में धर्म सामाजिक जीवन के कई पहलुओं को नियंत्रित करता है और कानून द्वारा इसका समर्थन किया जाता है। मिस्त्र का राजकीय धर्म इस्लाम है। हालांकि आधिकारिक आंकड़ों की अनुपस्थिति में अनुमान बहुत भिन्न होते हैं। 2006 की जनगणना के बाद से धर्म को बाहर रखा गया है और इस प्रकार उपलब्ध आंकड़े धार्मिक और गैर-सरकारी एजेंसियों द्वारा किए गए अनुमान हैं। देश बहुसंख्यक सुन्नी मुस्लिम है (लगभग 80 प्रतिशत से 94 प्रतिशत तक का अनुमान है), अगला सबसे बड़ा धार्मिक समूह कॉप्टिक ईसाई है (अनुमान 6 प्रतिशत से 25 प्रतिशत) सटीक संख्या विवादों के अधीन है। साथियों बात अगर हम स्टेट विजिट को 2024 चुनावी रण का गेम चेंजर साबित होने की करें तो आज मतदाता देख रहा है और सोच रहा है कि अगले स्तर पर जाएगी भारत-अमेरिका की दोस्ती उनका इशारा 2024 की तरफ है इस मौके पर व्हाइट हाउस की ओर से कहा गया, दुनिया के सबसे पुराने और सबसे बड़े लोकतंत्रों और इंडो-पैसिफिक में प्रमुख सुरक्षा प्रदाताओं के रूप में, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत वैश्विक भलाई के लिए एक संयुक्त शक्ति हैं। आज की राजकीय यात्रा अमेरिका-भारत संबंधों को अगले स्तर पर ले जाएगी, क्योंकि हम उस भविष्य का निर्माण करेंगे जो हम देखना चाहते हैं। मैं इस बयान को 2024 के रण से जोड़कर देख रहा हूं। पीएम का ग्लोबल लीडर का जलवा दूसरे देशों में भी नजर आ रहा है। इस बात का अंदाजा ऐसे लगाया जा सकता है कि जब पीएम ने अमेरिकी संसद भवन में प्रवेश किया, तो उस दौरान सभी ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। इतनी ही नहीं, पीएम के स्वागत में संसद में मौजूद भारतीय अमेरिकी लोगों ने मोदी-मोदी और भारत माता की जय के नारे भी लगाए। यहां तक कि जब संसद में पीएम ने अमेरिकी सांसदों और भारतीय अमेरिकी समुदाय के लोगों को संबोधित किया, उस दौरान भी कई लोगों को बीच-बीच में खड़े होकर उनका अभिवादन करते हुए देखा जा रहा था। संसद में पीएम का संबोधन लगभग एक घंटे तक चला था। जब वे अपना भाषण दे रहे थे, उस दौरान लगभग 15 बार सांसदों ने स्टैंडिंग ओवेशन दिया था। जब पीएम ने अपना भाषण समाप्त करते हुए धन्यवाद कहा, तो सांसदों ने उनके लिए काफी देर तक तालियां बजाई थी। पीएम के भाषण के दौरान अमेरिकी संसद में 79 बार तालियां भी बजाई गईं।

ऑटोग्राफ और सेल्फी के लिए लगी कतार तालियों की गूंज से पूरा संसद भवन गूंज उठा था। सभी लोग पीएम की वाहवाही कर रहे थे। पीएम का भाषण समाप्त होने के बाद उनके साथ सेल्फी लेने के लिए सांसदों की कतार लग गई। अमेरिकी सांसदों ने पीएम के साथ सेल्फी ली और ऑटोग्राफ के लिए लोग लाइन में खड़े हो गए। पीएम ने प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष केविन मैक्कार्थी की संयुक्त सत्र संबोधन पुस्तिका पर हस्ताक्षर भी किए। इसलिए हर भारतवासी चाहेगा कि उनका पीएम या लीडर वैश्विक नेता का रुतबा रक्त रखने वाला हो, भ्रष्टाचार मुक्त हो, परिवारवाद का ठप्पा ना हो, वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य के लिए याने 25 वर्षों का विजन लेकर चलता हो, इन बातों में देखें तो मतदाताओं को निर्णय लेने में अब आसानी होगी। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 2024 चुनावी रण के लिए अमेरिका मिस्त्र स्टेट विजिट गेम चेंजर साबित होगी। 2024 रण की दौड़-विपक्षी महा गठजोड़-अमेरिका मिस्त्र यात्रा से आएगा अपेक्षाकृत सफल मोड़। चुनावी रण 2024 के लक्ष्य पर सफल अमेरिका मिस्त्र यात्रा सटीक निशाना साबित होने की उम्मीद बढ़ी। ■

क्यों खालिस्तानी सक्रिय हैं कनाडा में

आर.के. सिन्हा

कनाडा में खालिस्तानी ताकतें भारत और हिन्दुओं के खिलाफ जहर उगल रही हैं। दुख इस बात का है कि मित्र देश होने के बावजूद कनाडा सरकार कुछ नहीं कर रही है। अब ताजा मामले में खालिस्तानियों ने ऑपरेशन ब्लू स्टार की 39वीं बरसी पर निकाली परेड में पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत इंदिरा गांधी को आपत्तिजनक रूप में दिखाया। बीती 6 जून, को कनाडा के ब्रैम्पटन शहर में खालिस्तानियों ने 5 किलोमीटर लंबी परेड निकाली। इसमें एक झांकी में इंदिरा गांधी की हत्या का सीन दिखाया गया। झांकी में इंदिरा गांधी को खून से सनी साड़ी पहने दिखाया गया है। उनके हाथ ऊपर हैं। दूसरी तरफ दो शख्स उनकी तरफ बंदूक ताने खड़े हैं। इसके पीछे लिखा है-बदला। कनाडा अपने को एक सभ्य देश होने का दावा करता है। पर वहां अलगाववादियों, चरमपंथियों और हिंसा की वकालत करने वाले खुल कर खेल कर रहे हैं। आप इंदिरा गांधी की कुछ नीतियों से असहमत हो सकते हैं, पर यह कोई भी भारतीय सहन नहीं करेगा कि उन्हें आपत्तिजनक तरीके से झांकी में पेश किया जाए। बेशक, इस सारे घटनाक्रम से भारत स्तब्ध है। इस कट्टरपंथ की सार्वभौमिक तौर पर निंदा होनी चाहिए। पता नहीं क्यूँ, प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ विदेशों में जाकर जहर उगलने वाले राहुल अपनी दादी के अपमान पर क्यों नहीं बोल रहे। कनाडा लंबे समय से खालिस्तानियों की गतिविधियों का केंद्र बन चुका है। वहां पर मंदिरों में भी तोड़फोड़ की जाती है। कनाडा का ब्रैम्पटन शहर तो भारत विरोधी गतिविधियों का गढ़ बन चुका है। कनाडा में बार-बार इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। जुलाई 2022 में कनाडा के रिचमंड हिल इलाके में एक विष्णु मंदिर में महात्मा गांधी की मूर्ति को खंडित कर दिया गया था। सितंबर 2022 में कनाडा में स्वामीनारायण मंदिर को कथित खालिस्तानी तत्वों ने भारत विरोधी भित्ति चित्रों के साथ विकृत कर दिया था। पर वहां की पुलिस की काहिली और निकम्मेपन के कारण दोषी पकड़ में नहीं आते। कौन भूल सकता है कनिष्क विमान हादसे को। मांट्रियाल से नई दिल्ली आ रहे एयर इंडिया के विमान कनिष्क को 23 जून 1985 को आयरिश हवाई क्षेत्र में उड़ते समय, 9,400 मीटर की ऊंचाई पर, बम से उड़ा दिया गया था और वह अटलांटिक महासागर में गिर गया था। इस आतंकी हमले में 329 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकांश भारतीय मूल के कनाडाई नागरिक थे। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपनी जिम्मेदारी को निभाने में असफल रहे हैं। वे कथित किसानों के आंदोलन का समर्थन कर रहे थे। तब ट्रूडो कह रहे थे कि "कनाडा दुनिया में कहीं भी किसानों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन के अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ा रहेगा।" क्या कनाडा की खुफिया एजेंसिया इतनी घटिया हैं कि उन्हें पता ही

नहीं है कि वहां पर खालिस्तानी सक्रिय हैं? उन्हें भारत-विरोधी तत्वों पर कठोर एक्शन लेना चाहिए। जस्टिन ट्रूडो 2018 में भारत यात्रा पर आए थे। वे अमृतसर से लेकर आगरा और मुंबई से लेकर अहमदाबाद का दौरा करने के बाद जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिले तो उन्हें कायदे से समझा दिया था कि "भारतधर्म के नाम पर कट्टरता तथा अपनी एकता, अखंडता और संप्रभुता के साथ समझौता नहीं करेगा।" उनका इशारा कनाडा में खालिस्तानी तत्वों की नापाक भारत विरोधी गतिविधियों से था। कनाडा की लिबरल पार्टी की सरकार के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो कहने को तो एक उदार देश से हैं। उन्हें भी यह समझ लेना होगा कि भारत भी एक उदार और बहुलतावादी देश है। उनकी उस भारत यात्रा के समय तब तगड़ा हंगामा हो गया था, जब पता चला था कि नई दिल्ली में कनाडा हाई कमीशन ने अपने प्रधानमंत्री के सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम में कुख्यात खालिस्तानी आतंकी जसपाल अटवाल को आमंत्रण भेजा है। अटवाल पर कनाडा में वर्ष 1986 में एक निजी दौरे पर गए पंजाब के मंत्री मलकीत सिहं सिद्धू पर जानलेवा हमला करने का आरोप साबित हो चुका है। कनाडा सरकार की बेवकूफियों के कारण वहां पर खालिस्तानी सक्रिय हैं। ये भारत को फिर से खालिस्तान आंदोलन की आग में झोंकना चाहते हैं। आपको याद होगा कि कनाडा की ओंटारियो विधानसभा ने 2017 में 1984 के सिख विरोधी दंगों को सिख नरसंहार और सिखों का राज्य प्रायोजित कत्लेआम करार देने वालाएक प्रस्ताव भी पारित किया था।इस तरह की गतिविधियों से स्पष्ट है कि कनाडा में भारत के शत्रु बसे हुये हैं। ये खालिस्तानी समर्थक हैं। समझ नहीं आत कि कनाडा सरकार वहां पर खालिस्तानियों पर लगाम क्यों नहीं लगा पा रही है। भारत सरकार इसके चलते कनाडा सरकार से खासी नाराज भी है। भारत इंदिरा गांधी को झांकी में गलत तरीके से दिखाने पर नाराज है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कनाडा को लताड़ लगाते हुए कहा, मुझे लगता है कि ये मुद्दा दोनों देशों के संबंधों के लिए सही नहीं है और न ही ये कनाडा के लिए ही ठीक है। अब भारत कनाडा से इतनी तो उम्मीद करेगा ही कि वह खालिस्तानियों को कस दे। एक बात माननी होगी कि कनाडा अराजकता के अंधकार में डूब रहा है। वहां पर तीन साल पहले पाकिस्तान फौज की तरफ से बलूचिस्तान में किए जा रहे जुल्मों-सितम के खिलाफ आवाज उठाने वाली प्रखर महिला एक्टिविस्ट करीमा बलोच की निर्मम हत्या पाकिस्तान की धूर्त और शातिर इंटेलिजेंस एजेंसी आईएसआई ने करव दी थी थी। बलोच पाकिस्तान सरकार, सेना और आईएसआई की आंखों की किरकिरी बन चुकी थीं। वह पाकिस्तान सरकार की कालीकरतूतों की कहानी लगातार दुनिया को बता रही थीं। इसीलिए उसे आईएसआई ने ठिकाने लगा दिया। ■

2000 के नोट को चलन से बाहर करने का कारण समझेंगे तो आप भी फैसले का समर्थन करेंगे

प्रह्लाद सबनानी

कई देशों में असामाजिक तत्वों एवं आतंकवादी संगठनों द्वारा एक समानांतर अर्थव्यवस्था भी चलाई जाती है जिसके अंतर्गत अवैध आर्थिक सौदे सम्पन्न किया जाते हैं एवं इन अवैध आर्थिक सौदों का निपटान कई बार नकली मुद्रा में भी किया जाता है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 19 मई 2023 को एक सूचना जारी कर यह बताया गया है कि देश में 2000 रुपए के नोट चलन से बाहर किए जा रहे हैं, हालांकि यह वैध मुद्रा की श्रेणी में बने रहेंगे। सामान्यजन को यह सुविधा प्रदान की गई है कि वे 23 मई 2023 से बिना किसी प्रतिबंध के और भारतीय रिजर्व बैंक के वर्तमान अनुदेशों तथा अन्य लागू सांविधिक प्रावधानों के अधीन बैंकों में जाकर 2000 रुपए के नोट को अपने बैंक खाते में जमा कर सकते हैं अथवा किसी भी बैंक शाखा पर अन्य मूल्यवर्ग के बैंक नोटों में बदल सकते हैं। परिचालनात्मक सुविधा को सुनिश्चित करने की दृष्टि से और बैंक शाखाओं के नियमित कार्यकलापों को बाधित किए बिना एक समय में 20,000 रुपए तक की राशि के 2000 रुपए के नोटों को किसी भी बैंक में अन्य बैंक नोटों के लिए बदला जा सकता है। उक्त महत्वपूर्ण कार्य को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के लिए तथा सामान्यजन को 2000 रुपए के नोटों को अपने बैंक खाते में जमा करने अथवा अन्य बैंक नोटों में बदलने के लिए पर्याप्त समय देने हेतु देश में समस्त बैंक 2000 रुपए के नोटों को जमा करने अथवा बदलने की सुविधा 30 सितंबर 2023 तक उपलब्ध कराते रहेंगे। साथ ही, अब बैंक तत्काल प्रभाव से 2000 रुपए के नोटों को जनसाधारण को जारी नहीं करेंगे ताकि 2000 रुपए के नोट धीमे-धीमे भारतीय अर्थव्यवस्था से बाहर हो जाएं। भारत में 2000 रुपए के नोट नवंबर 2016 में भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 24(1) के अंतर्गत जारी किए गए थे। आपको ध्यान में होगा कि नवम्बर 2016 में ही पुरानी सीरीज के रुपए 500 एवं रुपए 1000 के नोटों का वैध मुद्रा का दर्जा समाप्त करने की घोषणा की गई थी, जिसके चलते अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पर्याप्त मात्रा बनाए रखने के उद्देश्य से रुपए 2000 के नोट चलन में लाए गए थे। साथ ही, देश की अर्थव्यवस्था में तरलता की स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु नई सीरीज के रुपए 500, रुपए 200 एवं रुपए 100 के नोट भी पर्याप्त मात्रा में चलन में लाए गए थे एवं समय के साथ धीमे-धीमे इन नोटों की संख्या अर्थव्यवस्था में बढ़ती गई जिसके चलते देश में तरलता की स्थिति भी सुधरती गई। अतः वित्तीय वर्ष 2018-19 से रुपए 2000 के नोटों का मुद्रण भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बंद कर दिया गया था। भारतीय रिजर्व बैंक के आंकलन के अनुसार, 31 मार्च 2018 को देश की अर्थव्यवस्था में 2000 रुपए के नोटों की अधिकतम मात्रा 6.73 लाख करोड़ रुपये (चलन में कुल नोटों का 37.3 प्रतिशत) चलन में थी, जो 31 मार्च 2023 को घटकर 3.62 लाख करोड़ रुपये (चलन में कुल नोटों का 10.8 प्रतिशत) रह गई है। साथ ही, यह भी ध्यान में आता है कि देश की अर्थव्यवस्था में 2000 रुपए के नोटों का उपयोग अब आर्थिक व्यवहारों के निपटान की दृष्टि से लेन-देन के लिए आमतौर पर नहीं किया जा रहा है क्योंकि एक तो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 2000 रुपए के नोटों का मुद्रण बंद कर दिया गया है। दूसरे, देश की अर्थव्यवस्था में तरलता की स्थिति को नियंत्रण में बनाए रखने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु रुपए 500, रुपए 200 एवं रुपए 100 के नोट पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो गए हैं। तीसरे, देश में लगभग 89 प्रतिशत 2000 रुपए के नोट 31 मार्च 2017 के पूर्व से ही अर्थव्यवस्था में चलन में हैं एवं सामान्यतः इन नोटों की अनुमानित आयु 4-5 वर्ष की मानी जाती है, अतः यह नोट अपनी अनुमानित आयु की सीमा को समाप्त कर चुके हैं। इस प्रकार, भारतीय रिजर्व बैंक की स्वच्छ नोट नीति को ध्यान में रखते हुए 2000 रुपए के नोटों को अर्थव्यवस्था में चलन से बाहर किए जाने का निर्णय लिया गया है। पूर्व में भी वित्तीय वर्ष 2013-14 में भारतीय रिजर्व बैंक ने इसी प्रकार का निर्णय लिया था। विश्व के अन्य देशों, विशेष रूप से विकसित देशों में, इतनी बड़ी राशि के बैंक नोट चलन में नहीं पाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर अमेरिका में अधिकतम 100 अमेरिकी डॉलर का नोट ही प्रचलन में हैं क्योंकि अमेरिकी नागरिक क्रेडिट कार्ड एवं डेबिट कार्ड का अधिकतम उपयोग करते हैं अतः उन्हें मुद्रा के रूप में डॉलर का उपयोग करने की आवश्यकता बहुत कम पड़ती है। वैसे अब भारतीय नागरिक, ग्रामीणों सहित भी बहुत तेजी के साथ डिजिटल अर्थव्यवस्था को ग्रहण करते जा रहे हैं, इसलिए अब देश की अर्थव्यवस्था में बड़ी राशि के नोटों की आवश्यकता बहुत कम हो रही है। अर्थव्यवस्था में बड़ी राशि के नोटों को चलाए रखने में देश की भारी भरकम राशि खर्च होती है, जब बड़े नोटों की अब आवश्यकता ही कम हो रही है तो देश को इस भारी भरकम खर्च से बचाया जाना चाहिए। कई देशों में असामाजिक तत्वों एवं आतंकवादी संगठनों द्वारा एक समानांतर अर्थव्यवस्था भी चलाई जाती है जिसके अंतर्गत अवैध आर्थिक सौदे सम्पन्न किया जाते हैं एवं इन अवैध आर्थिक सौदों का निपटान कई बार नकली मुद्रा में भी किया जाता है। भारत के पड़ोसी देश भारतीय अर्थव्यवस्था को नुक्सान पहुंचाने के उद्देश्य से भारत में नकली मुद्रा के प्रचलन एवं प्रसार को बढ़ावा देते हैं। माननीय केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री ने सदन में जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया था कि देश में जब्त की जाने वाली नकली मुद्रा में 2000 रुपए के नोट भी भारी मात्रा में बरामद किए जा रहे हैं। अगस्त 2022 में देश के कई समाचार पत्रों में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री के बयान का हवाला देकर यह बताया गया था कि वर्ष 2016 से वर्ष 2020 के बीच भारत में 2000 रुपए के नकली नोटों की बरामदगी में 107 गुणा वृद्धि दर्ज हुई है। ■

कुल मिलाकर, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था में 2000 रुपए के नोटों को चलन से बाहर करने का निर्णय सही समय पर एक उचित कदम ही कहा जाना चाहिए। किसी भी दृष्टि से यह निर्णय नोटबंदी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि 2000 रुपए का नोट देश में एक वैध मुद्रा बना रहेगा, बल्कि यह तो राष्ट्र हित में उठाया गया एक महत्वपूर्ण निर्णय है।

शिक्षा में निजी स्कूलों की भूमिका कितनी अहम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने एवं तरह-तरह के कानूनों के प्रावधानों के बावजूद आजादी का अमृत महोत्सव मना चुके राष्ट्र के शिक्षा-मन्दिर बच्चों का सर्वांगीण विकास करने की बजाय उन्हें कमाऊ-धन कमाने की मशीन बना रहे हैं। स्कूलें बच्चों को संस्कारी बनाने की बजाय उन पर हिंसा करने, पिटने, सजा देने के अखाडे.बने हुए है, जहां शिक्षक अपनी मानसिक दुर्बलता एवं कुंठा की वजह से बच्चों के प्रति बर्बरता की हदें लांघ रहे हैं, वहीं निजी शिक्षण संस्थाएं इन शिक्षकों का तरह-तरह से शोषण करके उन्हें कुंठित बना रहे हैं। सरकारें शिक्षा में अभिनव क्रांति करने का ढ़िढोरा पीट रही है, लेकिन अपने शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं पर सवार हिंसा की मानसिकता एवं उनके शोषण को दूर करने का कोई सार्थक उपक्रम नहीं कर पायी है। यही कारण है कि दिल्ली में एक प्राथमिक विद्यालय की एक शिक्षिका ने पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक बच्ची को न केवल बुरी तरह पीटा, बल्कि कैंची से वार करते हुए उसे पहली मंजिल से नीचे फेंक दिया। यह कैसी शिक्षा है एवं कैसे शिक्षक है?

ललित गर्ग

राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित होने के बावजूद शिक्षा की विसंगतियां एवं विडम्बनाएं दूर होती हुई दिखाई नहीं दे रही है। आज के निजी विद्यालय अपने शिक्षकों को उचित वेतन एवं प्रोत्साहन नहीं देते। अपने आर्थिक लाभ के लिये निजी स्कूलें शिक्षकों को वास्तविक वेतन कुछ और देते है और पूरे वेतन के वाउचर पर हस्ताक्षर लेते हैं, यह शिक्षा के मन्दिरों से जुड़ी अनैतिकता का बड़ा उदाहरण है। इतना ही नहीं ये निजी स्कूलें परीक्षा परिणाम को अव्वल लाने के लिये छात्रों पर तरह-तरह के गैरकानूनी प्रयोग करने की छूट शिक्षकों को दे देते हैं। दूसरी ओर अपने निजी लाभ के लिये शिक्षक छात्रों के परीक्षा परिणामों से छेडछाड करने, कक्षाओं में छात्रों के साथ भेदभाव करने, उनको बेवजह सजा देने का दुस्साहस भी करते हैं ताकि छात्र उन शिक्षकों से ट्यूशन लेने को विवश हो सके। शिक्षक का पेशा पवित्रतम एवं आदर्श माना जाता है। यह इसलिए भी कि शिक्षक के माध्यम से ही बच्चों के भविष्य की नींव तैयार होती है। देश भर में निजी स्कूलों के शिक्षकों का काफी शोषण किया जाता है। शोचनीय यह है कि जिन अध्यापकों की वजह से ये स्कूल चलते हैं, उन्हें वेतन काफी कम मिलता है, जबकि वे अपनी पूरी जिंदगी उस स्कूल को संवारने में लगा देते हैं। खासतौर से शिक्षिकाओं की मजबूरी का खूब फायदा उठाया जाता है। शहर में संचालित छोटे-बड़े निजी स्कूल प्रबंधन द्वारा अपनी उन्नति व सुख सुविधा के लिए शिक्षा को व्यवसायिक रूप दिया जा रहा है। जिस कारण निजी विद्यालय दिन प्रतिदिन शिक्षक व अभिभावकों के आर्थिक शोषण का केंद्र बन गया है। सरकारी विद्यालयों की चरमराती शैक्षणिक व्यवस्था से आहत अभिभावकों के सामने अपने बच्चों को बेहतर तालिम देने की समस्या खड़ी होती जा रही है। वहीं निजी स्कूल प्रबंधन अपनी व्यवस्था की चमक दमक से अभिभावकों को अपनी ओर आकर्षित करने में लगा है। ऐसे स्कूलों में बच्चों के नामांकन के बाद अभिभावक परेशान है। कई पीड़ित अभिभावकों ने कहा कि नामांकन के समय जो स्कूल प्रबंधन द्वारा सब्जबाग दिया जाता है, उस हिसाब से न तो शैक्षणिक व्यवस्था है और सुविधा। प्रतिवर्ष मनमाने ढंग से विविध शुल्कों में वृद्धि कर दी जाती है। अभिभावकों की शिकायत को प्रबंधन द्वारा नहीं सुनी जाती है उल्टे बच्चे को स्कूल से बाहर कर दिए जाने का अल्टीमेटम दे दिया जाता है। ऐसे छोटे बड़े निजी स्कूलों में कार्यरत शिक्षक व अन्य कर्मियों ने दबी जुवान में कहा कि बच्चों का शुल्क तो प्रतिवर्ष बढ़ा दिया जाता है पर हमलोगों के पगार में मामूली वृद्धि भी नहीं की जाती है। समाज के संवेदनशील लोगों की माने तो निजी शिक्षण संस्था धीरे-धीरे अपने मकसद से भटकता जा रह है। वहां कमजोर बच्चे मानसिक रुप से प्रताड़ित हो रहे हैं। उनके विकास को लेकर प्रबंधन को कोई चिंता नहीं है। मनुष्य को मनुष्यता का भान कराने में शिक्षा ही सशक्त माध्यम है तथा सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराने का दर्पण है। आज की शिक्षा अधूरी है एवं इसमें आधारभूत सुधारों की आवश्यकता है। इस पर वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर चचाएं, सम्मेलन होते रहते हैं तथा अनेक शिक्षा-शास्त्रियों के आयोग भी बनाए गए। उनके सुझावों पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी घोषित की गयी है, पर हमारी शिक्षा प्रणाली अभी तक उपयुक्त दिशा की ओर जाती हुई दिखाई नहीं दे रही है। भारतीयता के मूल्यों की पटरी से उतरी हुई है। खुले आकाश के नीचे चल रही पाठशालाओं से लेकर पहाड़ों पर उच्च स्तरीय विद्यालय चल रहे हैं। समानता की दृष्टि से यह स्थिति जमीन और पहाड़ जितनी दूरी लिए हुए है। यह फर्क कब मिटेगा, यह कोई नहीं जानता। विदेशी शासन से मुक्ति का अमृत महोत्सव के बाद भी शिक्षा अभी तक विदेशी भाषा और विदेशी संस्कृति के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकी है। हजारों की तादाद में देश में अंग्रेजी और मिशनरी (कोन्वेन्ट) स्कूल चल रहे हैं जहां शिक्षा में भाषा के माध्यम से लेकर प्रार्थनाएं तक अंग्रेजी में होती हैं। हम हैं कि एक दीवानगी पाले हुए हैं कि हमारा बच्चा अंग्रेजी में धड़ल्ले से बोले। हमारी संस्कृति पर केवल विदेशी टी.वी. के चैनल ही हमला नहीं कर रहे बल्कि असली धारदार हथियार तो ये स्कूल हैं, जो जड़ें ही काट देते हैं। विदेशी भाषा का हम भाषा और साहित्य की दृष्टि से आदर कर सकते हैं, कुछ अंशों में विदेशी संस्कृति के अच्छे पक्षों को भी स्वीकार सकते हैं पर भारतीय भाषा और भारतीय संस्कृति की कीमत पर कत्तई नहीं। ऐसे स्कूल में एक बार एक लड़के को इसलिए अपमानित होना पड़ा कि रक्षा बन्धन के पवित्र त्यौहार पर राखियां बांधे स्कूल चला गया। एक दूसरे कान्वेंट स्कूल में एक लड़की को इसलिए कक्षा में नहीं घुसने दिया गया क्योंकि उसके हाथों पर मेहंदी रची हुई थी। यह जानकर मेरा ही नहीं, मेरे भारत के हर नागरिक को भी धक्का लगेगा। लेकिन यह सच्चाई है। इस प्रवाह में केवल मिशनरी ही नहीं अनेक भारतीय संचालक भी बह रहे हैं। स्कूलों के नाम भी अंग्रेजी, ड्रेसें भी अंग्रेजी। उद्देश्य केवल अर्थलाभ। संस्कृति को मिटाकर, सबकुछ भुलाकर। एक बात सौ वर्ष पुरानी है। राजस्थान की एक रियासत के राजा की लड़की बचपन में ही विधवा हो गई। अपना पूरा समय ध्यान, पूजा और भजन में व्यतीत करने लगी। एक दिन राजघराने में एक अंग्रेज मेहमान आया। राजा ने सबसे परिचय कराते वक्त अपनी विधवा लड़की से भी मिलाया। सारी बात सुनकर अंग्रेज मेहमान ने लड़की से कहा, ह्वतुमने दुबारा शादी क्यों नहीं की?ह्व लड़की की आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। राजा ने सिर पर हाथ फेरकर पूछा, ह्वक्या हुआ बेटी?ह्व लड़की ने कहा, ह्वमुझे दुःख इस बात का है कि इसने यह तो पूछा कि तुमने दुबारा शादी क्यों नहीं की, यह नहीं पूछा कि तू मीरां क्यों नहीं बनी।ह्व लेकिन ऐसी सोच वाली बालिकाएं आज की शिक्षा से तो तैयार नहीं हो सकती। यह गौरवशाली भारतीय संस्कृति की उज्ज्वलता थी। ऐसा उत्तर जिस दिन देश की बालिकाएं देंगी, तभी सबकुछ बदलेगा, शिक्षा वास्तविक भारतीय मूल्यों एवं सिद्धान्तों से परिपूर्ण होगी। ऐसा लगता है कि न नये इंसानों को गढ़ने की सही प्रक्रिया है और न इंसान गढ़ने के प्रति शिक्षक एवं शिक्षण-संस्थानों के भीतर सच्ची निष्ठा। ऐसी स्थिति में शिक्षा का दायित्व कैसे अपने मुकाम पर पहुंचे? इसी कारण शिक्षा की सीख एवं साख नहीं बन पा रही है। शिक्षण संस्थानों पर उन्नत नागरिक बनाने दायित्व है, लेकिन लगता है इस दायित्व को निभाने वालों की सोच एवं समझ के दायरे बदल गये हैं। शिक्षा के आदर्श, सिद्धान्त एवं शैली के प्रति बनी नई मान्यताओं ने नये मानक बना लिये हैं। यह सुनिश्चित करना भी जरूरी होगा कि स्कूलों में पढ़ाई पूरी व गुणवत्तापूर्ण हो, प्रभावी एवं सहज हो ताकि लोभ, ट्यूशन, शोषण, बर्बरता एवं हिंसक व्यवहार की जरूरत न हो। सरकारी व निजी स्कूलों के आर्थिक प्रलोभनों, शिक्षकों में ट्यूशन की दुष्प्रवृत्ति एवं सजा देने पर अंकुश भी रखना होगा। छात्रों से ज्यादा जरूरी है शिक्षकों का चरित्र विकास और शिक्षण-संस्थानों को भारतीयाता के सांचे में ढालने की। तभी नये भारत एवं सशक्त भारत की ओर बढ़ते देश की शिक्षा अधिक कारगर एवं प्रभावी होगी। उसके लिये शिक्षा-क्रांति से ज्यादा शिक्षक-क्रांति एवं व्यावसायिक होती शिक्षा को नियंत्रित करने की जरूरत है। ■

ऐसा लगता है कि न नये इंसानों को गढ़ने की सही प्रक्रिया है और न इंसान गढ़ने के प्रति शिक्षक एवं शिक्षण-संस्थानों के भीतर सच्ची निष्ठा। ऐसी स्थिति में शिक्षा का दायित्व कैसे अपने मुकाम पर पहुंचे? इसी कारण शिक्षा की सीख एवं साख नहीं बन पा रही है। शिक्षण संस्थानों पर उन्नत नागरिक बनाने दायित्व है, लेकिन लगता है इस दायित्व को निभाने वालों की सोच एवं समझ के दायरे बदल गये हैं।

बड़ी समस्या

नशे की लत से बढ़ते कैंसर, मानसिक अस्वस्थता, अवसाद

अंतरराष्ट्रीय स्तरपर मादक पदार्थों के सेवन और नशीली दवाओं के दुरुपयोग तथा उसकी अवैध तस्करी के मामलों से करीब-करीब हर देश पीड़ित है और यह समस्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। खासकर मानवीय युवा पीढ़ी जिन्हें भविष्य की बागडोर संभालनीं है, यानि हमारी अगली पीढ़ी बनने वाले युवा और बच्चों की रुचि मादक पदार्थों में बढ़ती ही जा रही है हम अपने आसपास भी देखते होंगे कि बच्चे भी सिगरेट, बीड़ी, बीयर पीने की ओर आगे बढ़ते दिखाई दे रहे हैं जो वैश्विक समस्या बनती जा रही है।

एडवोकेट किशन भावनानी

प्रतिवर्ष आम जनता में नशे के खिलाफ जन जागृति उत्पन्न करने के लिए नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस 26 जून मनाया जाता है। चूंकि भारत में भी यह दिवस गृह मंत्रालय स्तरपर बड़े कार्यक्रम करके मनाया गया इसलिए हम आज इस आर्टिकल के माध्यम से इसपर चर्चा करेंगे। साथियों बात अगर हम नशीली दवाओं के दुरुपयोग की करें तो, ड्रग्स एंड क्राइम पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (यूएनओडीसी) ने उल्लेख किया है, एक साथ, हम विश्व नशीली दवाओं की समस्या से निपट सकते हैं। मजबूत दृढ़ संकल्प और नशीली दवाओं से संबंधित ज्ञान साझा करके, हम सभी नशीली दवाओं के दुरुपयोग से मुक्त एक अंतरराष्ट्रीय समाज के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।जब ड्रग्स का दुरुपयोग व्यापक रूप से समाज के अमीर और गरीब वर्ग के बीच फैल जाता है तो उस समय सबसे अधिक अनिवार्य है नशीले पदार्थों के दुरुपयोग को रोकने के लिए सामुदायिक सहायता की जरूरत की। नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ युद्ध में प्रसिद्ध कहावत रोकथाम इलाज से बेहतर है काफी प्रासंगिक है। ड्रग्स के दुरुपयोग और इससे जुड़ी अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस के दिन जनजागृति बढ़ाना जरूरी है। साथियों बात अगर हम इस नशीली दवाओं के दुरुपयोग व अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर माननीय केंद्रीय गृहमंत्री के संबोधन की करें तो अपने संदेश में कहा कि आज 26 जून 2023 को नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस के अवसर पर मैं ड्रग्स के विरुद्ध लड़ाई लड़ रही सभी संस्थाओं और लोगों को दिल से बधाई देता हूँ। यह अत्यंत हर्ष की बात है कि नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो इस बार भी अखिल भारतीय स्तर पर नशा मुक्त पखवाड़ा का आयोजन किया है। उन्होंने कहा कि हमारा संकल्प है कि हम भारत में नारकोटिक्स का व्यापार नहीं होने देंगे और ना ही भारत के माध्यम से ड्रग्स को विश्व में कहीं बाहर जाने देंगे। ड्रग्स के खिलाफ इस मुहिम में देश की सभी प्रमुख एजेंसियाँ, विशेषकर नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्युरो निरंतर अपनी जंग जारी रखे हुए है। इस अभियान को सशक्त करने के लिए गृह मंत्रालय ने 2019 में एनकॉर्ड की स्थापना की एवं हर राज्य के पुलिस विभाग में एंटी नार्कोटिक्स टास्क फोर्स का गठन किया गया, जिसका पहला राष्ट्रीय सम्मेलन अप्रैल 2023 में दिल्ली में हुआ। उन्होंने कहा कि चाहे ड्रग्स की खेती को नष्ट करना हो या जनजागरण हो गृह मंत्रालय सभी संस्थाओं और प्रदेशों के समन्वय से ड्रग्स मुक्त भारत के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा लेकिन इस लड़ाई को बिना जनभागीदारी के नहीं जीता जा सकता। आज इस अवसर पर मैं सभी देशवासियों से यह अपील करता हूँ कि अपने आप को और अपने परिवार को ड्रग्स से दूर रखें। ड्रग्स न केवल युवा पीढ़ी और समाज को खोखला बनाता है, बल्कि इसकी तस्करी से अर्जित धन देश की सुरक्षा के खिलाफ प्रयोग में लाया जाता है। इसके दुरुपयोग के विरुद्ध इस युद्ध में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें। अपने आस-पास हो रहे ड्रग्स के व्यापार की जानकारी सुरक्षा एजेंसियों को दें। साथियों बात अगर हम मादक पदार्थों की करें तो गुटखा तंबाकू के उपयोग से होने वाली हानियां, मदिरा, अफीम, कोकीन, भांग, चरस, गांजा हशीश,एलएसडी आदि अन्य पदार्थ भी मादक पदार्थों के रूप में प्रचलन में है। युवा इनको प्रयोग विभिन्न कारण से कर बैठते हैं और चंगुल में फंस जाते हैं। इनके प्रयोग से दुष्प्रभाव परिवार से विच्छेदन, अपराध प्रवृति की वृद्धि शारीरिक एवं मानसिक कमजोरी के रूप में सामने आते हैं। कुछ समय के लिए मस्ती देनेवाले नशीले द्रव्यों के निरंतर सेवन से मनुष्य के तन-मन निष्क्रिय और शिथिल हो जाते हैं, दृष्टि कमजोर हो जाती है, पाचनशक्ति मंद पड़ जाती है तथा हृदय और फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है। इससे स्वास्थ्य चौपट हो जाता है और मनुष्य असमय ही मृत्यु का द्वार खटखटाने लगता है। नशीली दवाओं की लत एक कट्टर दानव है जो हमारे समाज के विकास पर रोक लगा सकती है। साथियों बातें कर्म मादक पदार्थों के सेवन से कैंसर सहित अनेक गंभीर बीमारियों के होने की करें तो धूम्रपान का असर हमारे फेफड़ों पर अधिक पड़ता है। धूम्रपान के चलते हम फेफड़ों के कैंसर का शिकार हो सकते हैं। आंकड़ें बताते हैं कि 80 प्रतिशत धूम्रपान या फिर तंबाकू का सेवन करने वाले लोगों की मौत फेफड़ों के कैंसर के कारण होती है। युवावस्था में धूम्रपान करने वालों में फेफड़ों का कैंसर अधिकतर देखने को मिलता है। ऐसे में ये हमारे लिए परेशानी खड़ कर सकता है।

> **अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत नें नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस 26 जून 2023 मनाया। युवा भारत बनाम नशे की लत। आओ हम अपने दैनिक जीवन में रोज नशा निषेध दिवस मनाकर ड्रग्स मुक्त भारत बनाएं।**

साथियों बात अगर हम माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार अपने संबोधन में उपराष्ट्रपति ने कहा कि मादक पदार्थों का सेवन एक वैश्विक चुनौती है। यहां तक कि विकसित देश भी इसके खिलाफ लड़ाई में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। मादक पदार्थ किसी भी आयु वर्ग के व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में ले सकता है। विशेषकर युवा, किशोर और कम उम्र के युवाओं में मादक पदार्थ तस्करों के गिरफ्त में आने की संभावना अधिक रहती है। संभावित पीड़ितों को मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली बर्बादी के बारे में सचेत किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने को इस जाल से सुरक्षित रख सकें। यह चुनौती इतनी बड़ी है कि सरकारी एजेंसियों द्वारा किये जाने वाले प्रयास इस खतरे को समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। राज्य सरकार, गैर-सरकारी संगठन और समर्पित व्यक्तियों पर इस खतरे को समाप्त करने की बड़ी जिम्मेदारी है। साथियों बात अगर हम इस दिवस के इतिहास की करें तो, 7 दिसंबर 1987 को संयुक्त राष्ट्र की 93वीं पूर्ण बैठक के बाद, 13 दिसंबर 1985 के संकल्प 40/122 को याद करते हुए हर साल 26 जून को नशीले पदार्थों के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है। यूएनओडीसी के अनुसार, दुनिया भर में लगभग 200 मिलियन लोग कोकीन, भांग, मतिभ्रम, अफीम और शामक सम्मोहन जैसी अवैध दवाओं का उपयोग कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र नशीली दवाओं के दुरुपयोग से मुक्त एक अंतरराष्ट्रीय समाज बनाने में मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित था। इस संकल्प ने नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी पर 1987 के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की रिपोर्ट और निष्कर्षों के संबंध में आगे की कार्रवाई की सिफारिश की। संकल्प के बाद, 1991 से 2000 के वर्षों को नशीले पदार्थों के दुरुपयोग के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र दशक के रूप में घोषित किया गया था। 1998 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वैश्विक नशीली दवाओं की समस्या के समाधान के लिए एक राजनीतिक घोषणा को अपनाया। घोषणा समस्या से लड़ने के लिए संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों की प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत नें नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस 26 जून 2023 मनाया। युवा भारत बनाम नशे की लत। आओ हम अपने दैनिक जीवन में रोज नशा निषेध दिवस मनाकर ड्रग्स मुक्त भारत बनाएं। नशे की लत से बढ़ते कैंसर, मानसिक अस्वस्थता, अवसाद और पारिवारिक विच्छेदन को रेखांकित करना जरूरी है। ■

शेयर निवेश-मेडिकल क्षेत्र के शिखर पर भी जाता यूपी

आर.के. सिन्हा

बीते दिनों उत्तर प्रदेश (यूपी) को लेकर दो बड़ी खबरें आईं, जिसने देश के सबसे बड़े सूबे की एक अलग ही छवि दुनिया के समक्ष पेश की। पहली खबर आई कि बीते अप्रैल महीने में शेयर बाजार से जुड़ने वाले नए निवेशकों की संख्या के मामले में यूपी ने देश की आर्थिक राजधानी वाले राज्य महाराष्ट्र तक को पीछे छोड़ दिया है। बॉम्बे स्टाक एक्सचेंज (बीएसई) के मुताबिक, नए डीमैट खाते खोलने में यूपी ने महाराष्ट्र के अलावा भी सभी अन्य राज्यों को पीछे छोड़ दिया है। इस तरह से यू.पी. की एक साल में 37% की बढ़त हुई है। इसी अवधि में महाराष्ट्र की ग्रोथ 20%, गुजरात की 15%, राजस्थान की 26% और कर्नाटक की 20% ही रही है। शेयर बाजार में यूपी की ठसक लगातार ही बढ़ रही है। शेयर बाजार के गढ़ महाराष्ट्र को ही यूपी वालों ने सीधी टक्कर दे दी है। बीएसई के मुताबिक एक साल में यूपी से 35 लाख नए निवेशकों ने शेयर बाजार में प्रवेश किया है। हालांकि एक समय था जब महाराष्ट्र और कर्नाटक दोनों राज्यों को शेयर बाजार की जान माना जाता था। शेयर बाजार में यूपी के बढ़ते कदम के लिए राज्य की जनता की आय बढ़ने, महिलाओं का बाजार में रुझान और जोखिम की क्षमता उठाने की प्रकृति प्रमुख वजहें हैं। शेयर बाजार के कुल कारोबार में सालाना 1.28 लाख करोड़ का धंधा मात्र यूपी से हो रहा है। इसमें भी 30% की वृद्धि हुई है। इस बीच, अगर हम बीते कुछ सालों पर नजर दौड़ाएं तो यूपी से 2021-22 में 92 लाख निवेशक थे। यह आंकड़ा 2022-23 में हो गया 1.27 करोड़। दूसरी खबर नीट-यूजी से जुड़ी है। डॉक्टरी में दाखिले के लिए आयोजित इस परीक्षा में यूपी के अभ्यार्थियों ने सर्वाधिक बाजी मारी। इस वर्ष के परिणाम में सबसे ज्यादा संख्या यूपी के विद्यार्थियों की रही। महाराष्ट्र और राजस्थान दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। इन दोनों खबरों ने बदलते हुए उत्तर प्रदेश में हो रहे विकास की प्रत्यक्ष तस्वीर हमारे सामने रख दी है। इस बीच नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के नीट-यूजी रिजल्ट में इस साल सबसे अधिक यूपी के स्टूडेंट पास हुए हैं। इसके बाद महाराष्ट्र और राजस्थान का स्थान है। लगभग 20.38 लाख में से कुल 11.45 लाख परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। बात संख्या की करें तो यूपी की इस सफलता का वजन और चमक दोनों ज्यादा महूसस होगा। यूपी में सबसे अधिक 1.39 लाख, महाराष्ट्र में 1.31 लाख और राजस्थान में एक लाख से अधिक परीक्षार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र देश के दो सबसे अधिक आबादी वाले राज्य हैं, जबकि राजस्थान भी जनसंख्या के मामले में शीर्ष दस राज्यों में आता है। शीर्ष पांच में केरल और कर्नाटक दो अन्य राज्य हैं, जिनमें से प्रत्येक ने 75,000 से अधिक अभ्यर्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है। नीट-यूजी देश की बड़ी और प्रतिष्ठित प्रतियोगिता परीक्षा है। यह परीक्षा भारत के बाहर 14 शहरों आबूधाबी, बैंकॉक, कोलंबो, दोहा, काठमांडू, कुआलालंपुर, लागोस, मनामा, मस्कट, रियाद, शारजाह, सिंगापुर, दुबई और कुवैत सिटी में आयोजित की गई थी। गौरतलब है कि नीट-यूजी के अंकों के आधार पर चिकित्सा पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया जाता है। परीक्षा 13 भाषाओं असमिया, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओडिया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु और उर्दू में आयोजित की गई थी। बेशक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार के लिए भी यह बड़ी उपलब्धि है। दिलचस्प है कि कुछ वर्ष पहले तक बीमारू राज्यों में शामिल यूपी आज एक अग्रणी और स्मार्ट नीति के सफल कार्यान्वयन के साथ तेजी से विकास कर रहा है। देश के जीडीपी में राज्य आठ प्रतिशत से अधिक का योगदान दे रहा है। यूपी सरकार ने आगामी पांच वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भारत को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में एक ट्रिलियन डॉलर के योगदान का लक्ष्य निर्धारित किया है। यानी, भारत के विकास की इस रेलगाड़ी के लिए देश का सबसे बड़ा सूबा उत्तर प्रदेश ग्रोथ इंजन बनकर उभरा है। जिस प्रदेश के युवा अपने प्रोफेशनल शिक्षा और भविष्य को लेकर इतने जागरूक हों, वहां कारोबारी दशा भी साथ के साथ बेहतर होगी, ऐसा मानकर चलने की बात हवाई नहीं, बल्कि इसके कई तार्किक आधार हैं। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2023 के माध्यम से करीब 35 लाख करोड़ के इन्वेस्टमेंट प्रस्ताव पाने वाला यूपी अपने एक ट्रिलियन इकॉनमी बनने के पथ पर तेजी से बढ़ रहा है। उसके इस संकल्प में प्रदेश के युवा भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। तभी तो उसने शेयर बाजार में नए निवेशकों की संख्या के मामले में देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले राज्य महाराष्ट्र और गुजरात को पीछे छोड़ दिया है। करीब 20 करोड़ जनसंख्या वाले यूपी में अबतक तो शेयर बाजार में कारोबार करने की सीमित संस्कृति ही रही है। इतना ही नहीं साल 2018-19 में वैश्विक महामारी से पहले महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था 25.7 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान लगाया गया था। इसकी तुलना में यूपी की अर्थव्यवस्था का अनुमान 15.8 लाख करोड़ रुपये था। ऐसे में यूपी ने परंपरागत रूप से भारत के निवेशकों का सबसे बड़ा स्रोत माने जाने वाले महाराष्ट्र को भी पीछे छोड़ कर एक नया इतिहास रचा है। यूपी अब न केवल उद्योग के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उभरा है और निवेशकों की पहली पसंद बना है, बल्कि यहां के युवा भी बाजार के ताकाजे को समझते हुए निवेश की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। इस बार यूपी सरकार ने जब करीब 7 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया तो उसमें इस बात की चर्चा खासतौर पर हुई कि सरकार ने समाज के उन वर्गों के भी हित और कल्याण की बात कही, जो अब तक प्रदेश की आर्थिक रचना से बाहर माने जाते थे। ■

ऑयली स्किन के लिए बेस्ट हैं ये होममेड फेस स्क्रब

मिलेगा नेचुरल ग्लो

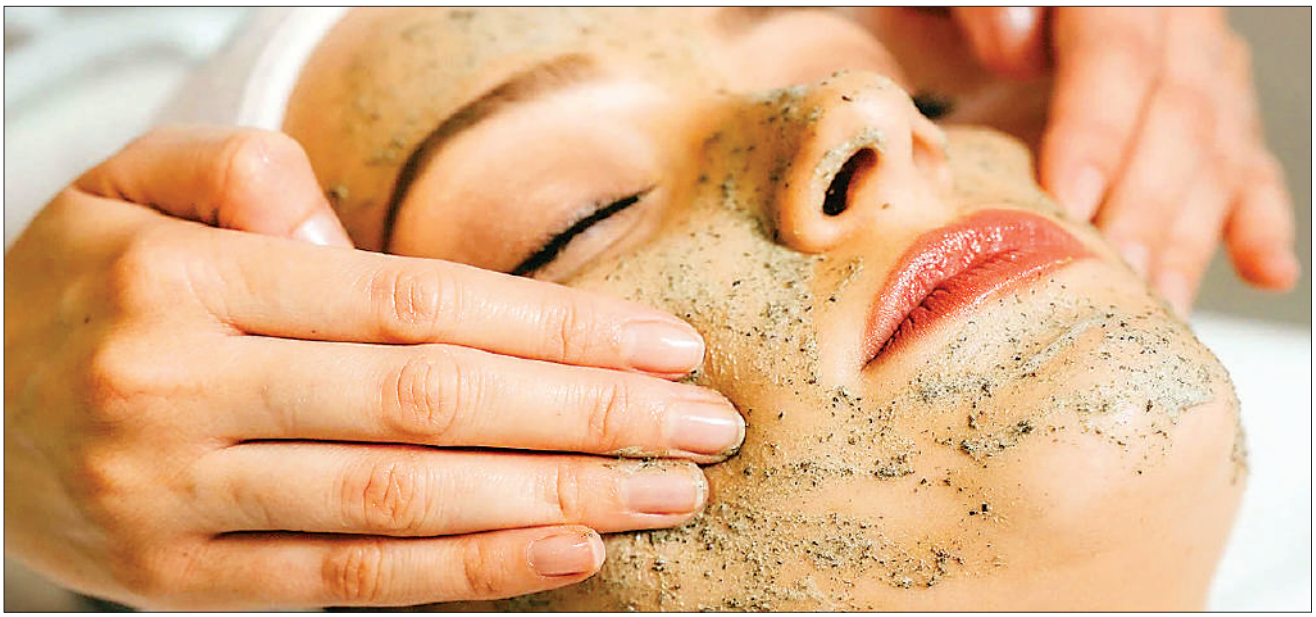

अनन्या मिश्रा

गर्मियों में सूरज की तेज किरणों से हमारी स्किन का टैन होना आम बात है। लेकिन टैन स्किन से छुटकारा पाना उतना ही मुश्किल होता है। ऐसे में बिना सनस्क्रीम के बाहर नहीं निकलना चाहिए। वहीं ऑयली स्किन होने पर भी गर्मियों में काफी दिक्कत होती है। यदि आपकी स्किन भी ऑयली है तो यह आर्टिकल आपके लिए है। बता दें कि आप कुछ घरेलू टैन स्क्रब की मदद से अपनी स्किन के एक्स्ट्रा ऑयल को दूर करने के साथ ही पिंपल्स से भी निजात पा सकती हैं। आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए ऑयली स्किन के लिए कुछ ऐसे होममेड फेस स्क्रब के बारे में बताने जा रहे हैं, जो आपकी समस्या को चुटकियों में हल कर देंगे।

कॉफी का स्क्रब- कॉफी में मौजूद कैफीन आपकी स्किन के लिए नेचुरली ग्लो लाने में मदद करता है। बता दें कि कॉफी एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है। साथ ही इसमें मौजूद कैफीन स्किन को सही से एक्सफोलिएट भी करता है। इसके लिए एक चम्मच कॉफी मे एक बड़ा चम्मच दही मिक्स करें। इसके बाद इससे अपने फेस की 2-3 मिनट तक मसाज करें। फिर इसे फेस पर 5 मिनट के लिए लगा रहने दें। इसके बाद ठंडे पानी से चेहरे को धो लें। इस स्क्रब को आप हफ्ते में 2 बार अप्लाई कर सकती हैं।

नींबू और चीनी का स्क्रब- नींबू और चीनी का स्क्रब ऑयली स्किन के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। थोड़ी सी चीनी लेकर इसके नींबू का रस मिलाएं। इसके बाद इसे अपने फेस पर हल्के हाथों से रगड़ें। करीब 15 मिनट बाद चेहरे को पानी से धो लें। इससे आपको ऑयली स्किन से जल्द ही छुटकारा मिलेगा और इसका इस्तेमाल टैन हटाने के लिए भी कर सकते हैं।

मसूर दाल का स्क्रब-आपकी स्किन से डेड सेल्स और गंदगी हटाने के लिए मसूर दाल का स्क्रब सबसे बेहतर है। इस स्क्रब को बनाने के लिए दो चम्मच मसूर दाल को पीस लें। इसे ज्यादा महीन न करें। फिर इसमें एक चुटकी हल्दी और 1 चम्मच दही मिलाएं। इसके बाद इस स्क्रब को पूरे फेस पर हल्के हाथों से 2-3 मिनट तक स्क्रब करें। सप्ताह में एक बार इस स्क्रब का इस्तेमाल करने से आपको बेहतर रिजल्ट मिलेगा।

शहद और चावल के पाउडर का स्क्रब-यह होममेड स्क्रब न सिर्फ आपकी ऑयली स्किन के लिए फायदेमंद है, बल्कि इससे आपको नेचुरल ग्लो भी मिलता है। इस स्क्रब को बनाने के लिए चावल के पाउडर में शहद मिलाएं। फिर इसे अपने फेस पर स्क्रब करें। इसके बाद इसको सूखने के लिए छोड़ दें। यह स्क्रब आपकी स्किन के लिए बेहद लाभकारी है।

ऑरेंज पील स्क्रब-संतरे के छिलकों में मौजूद कंपाउंड न सिर्फ ऑयल प्रोडक्शन को कंट्रोल करते हैं, बल्कि स्किन की रंगत भी निखारते हैं। इसका एक्सफोलिएटिंग एक्शन सेंसिटिव स्किन के लिए भी सही है। इसका स्क्रब बनाने के लिए 1 बड़ा चम्मच संतरे के छिलके का पाउडर लें और उसमें 1 बड़ा चम्मच शहद और एक चुटकी हल्दी डालें। इस पेस्ट से 3-4 मिनट तक चेहरे को स्क्रब करें और फिर पानी से धो लें। इस स्क्रब का इस्तेमाल हफ्ते में दो बार करें। ■

समर वेकेशन

का बना रहे प्लान तो जरूर रख लें ये ब्यूटी प्रोडक्ट्स, घूमने का मजा होगा दोगुना

अक्सर लोग गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के स्कूल बंद होने के बाद घूमने का प्लान बनाते हैं। ऐसे में अगर आप भी चाहते हैं कि आपका वेकेशन बेस्ट हो तो इन चीजों को बैग में रखना न भूलें।

स्नेहलता शर्मा

गर्मियों में कई लोग छुट्टियों में घूमने का प्लान बनाते हैं। खासकर बच्चों के स्कूल की छुट्टियां होते ही परिवार घूमने का प्लान बनाने लगते हैं। इसके लिए वह हॉलिडे डेस्टिनेशन सर्च करना स्टार्ट कर देते हैं। इसके लिए बेस्ट डेस्टिनेशन, बेस्ट होटल और बेस्ट खाना आदि के बारे में सर्च करते हैं। लेकिन इसके अलावा भी कई ऐसी चीजें होती हैं, जिनपर ध्यान देना बहुत जरूरी होता है। ऐसे में अगर आप भी गर्मी में छुट्टियों का प्लान बना रहे हैं तो अपनी वेकेशन को परफेक्ट बनाने के लिए इन चीजों को बैग में पैक करना न भूलें।

सनस्क्रीन- गर्मियों के मौसम में धूप से तो सभी परेशान रहते हैं। वहीं हमारी स्किन भी टैन हो जाती है। थोड़ी देर के लिए धूप में निकलना सही हो सकता है। लेकिन जब बात पूरे दिन धूप में घूमना हो तो अपनी स्किन का ख्याल रखना बहुत जरूरी होता है। चिलचिलाती धूप के कारण सनबर्न की समस्या भी हो सकती है। ऐसे में अगर आप अपनी स्किन को यूवी किरणों से बचाना चाहते हैं। तो अपने बैग में सनस्क्रीम रखना न भूलें। इसके साथ ही बैग में मॉस्किटो क्रीम भी रख सकते हैं।

सनग्लास- तेज धूप से न सिर्फ हमारी स्किन बल्कि हमारी आंखें भी जलने लगती हैं। वहीं तेज धूप के चलते कई बार आंखों में जलन होने के कारण आंसू निकलने लगते हैं। ऐसे में अगर आप अपने समर वेकेशन को परफेक्ट बनाना चाहते हैं, सनस्क्रीम के अलावा सनग्लास जरूर रखें। सनग्लास को पहनने से आपकी आंखों को कोई नुकसान नहीं होगा।

मेडिकल किट- अगर आप समर वेकेशन में बच्चों के साथ जा रहे हैं, तो आपको मेडिकल किट जरूर रखना चाहिए। क्योंकि यदि वेकेशन के दौरान किसी की तबियत खराब होती है तो इसके लिए दवा रखना न भूलें। सर्दी-जुकाम, दर्द, बुखार, उल्टी आदि की दवा पैक करती हैं। साथ में आप ओआरएस का पैकेट भी रख सकती हैं। डेटॉल और हैंडिप्लस आदि पैक करना न भूलें।

जरूर पैक करें हल्के कपड़े- गर्मियों में हल्के फैब्रिक वाला कपड़ा आराम देता है। इसलिए वेकेशन के दौरान हल्के फैब्रिक वाले कपड़े ही पैक करें। इनको पहनना भी काफी आसान होता है और घूमने-फिरने में कंफर्टेबल रहेंगे।

इन चीजों को जरूर करें पैक- यदि आप भी इस गर्मियों की छुट्टी में कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं तो पेपर सॉप, वाटरप्रूफ पाउच, पावर बैंक और सेल्फी स्टिक भी पैक कर सकते हैं। इसके अलावा आप चाहें तो बच्चों व अपने लिए हेल्दी फास्ट फूड रख सकते हैं। वहीं ठंडे पानी की बोतल रखना न भूलें। ■

विष्णु के योग निद्रा में शयन का काल चातुर्मास

अशोक प्रवृद्ध

भारतीय पंचांग के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक चलने वाली चार माह की अवधि चातुर्मास कहलाती है। चातुर्मास को चौमासा भी कहा जाता है। वर्ष के चार मास मुख्यतः अर्द्ध आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और अर्द्ध कार्तिक चातुर्मास कहलाते हैं। भारतीय संस्कृति में व्रत, भक्ति और शुभ कर्म के लिए प्रसिद्ध व पवित्र इन चार महीनों को चातुर्मास कहा गया है। चातुर्मास का प्रारंभ आषाढ़ शुक्ल एकादशी अर्थात देवशयनी एकादशी से होता है और अंत कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवोत्थान एकादशी से। ध्यान और साधना करने वाले लोगों के लिए महत्वपूर्ण चातुर्मास काल में मनुष्य की शारीरिक और मानसिक स्थिति तो स्वस्थ, सबल होती ही है, वातावरण भी अच्छा रहता है। लेकिन इन चार माह के समय जहां मनुष्य की पाचनशक्ति कमजोर पड़ने लगती है, वहीं भोजन और जल में बैक्टीरिया की तादाद भी बढ़ जाती है। इसलिए चातुर्मास के आरम्भ के पहले सम्पूर्ण मास में व्यक्ति के लिए व्रत का पालन करना सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। चातुर्मास काल में विवाह संबंधी कार्य, मुंडन विधि, नाम करण आदि शुभ, मांगलिक कार्य वर्जित हैं, लेकिन इन दिनों भागवत कथा, रामायण, सुंदरकांड पाठ, भजन संध्या एवं सत्य नारायण की पूजा आदि धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं। चातुर्मास का हिन्दू के साथ ही अन्य धर्मों में भी महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दू धर्म में चौमासे में आने वाले अनेक महत्वपूर्ण पर्व -त्यौहार व अनुष्ठान विधिपूर्वक सम्पन्न किये जाते हैं। जैन धर्म में चौमासे के महत्व का पता इसी से चल जाता है कि आबाल, वृद्ध स्त्री- पुरुष सभी जैनी चातुर्मास काल में मंदिर जाकर विविध प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, सत्संग में भाग लेते हैं। गुरुवरों एवं आचार्यों द्वारा सत्संग किये जाते हैं। एवं मनुष्यों को सन्मार्ग की ओर चलने के लिए प्रेरित किया जाता हैं। बौद्ध धर्म में भी चातुर्मास का विशेष महत्व है। गौतम बुद्ध के चौमासा की अवधि में राजगीर के राजा बिम्बिसार के शाही उद्यान में ठहरने की कथा अत्यंत प्रसिद्ध है। बौद्धों में अहिंसा का बहुत महत्व है। उष्ण कटिबंधीय जलवायु में बड़ी संख्या में कीट उत्पन्न होते हैं, जो यात्रा करने वाले भिक्षुकों द्वारा कुचल जाते हैं। यही कारण है कि साधु व बौद्ध गुरु बरसात में किसी एक स्थान पर रूक जाते हैं, और आमजन को सदुपदेश दिया करते हैं। साधु- संत चातुर्मास की अवधि में हिंसा करने से बचने की कोशिश करते हैं। ऐसा वे जीवन के किसी भी रूप को नुकसान पहुंचाने से बचने के लिए करते हैं। बरसात के मौसम को

कीड़ों के प्रजनन का समय माना जाता है। मान्यता है कि चातुर्मास की अवधि के दौरान किसी भी जीवन रूप को मारने से संतों को नुकसान हो सकता है। तदनुसार वे अपने आंदोलनों को प्रतिबंधित करते हैं। इस काल में भूमि शयन, ब्रह्म बेला में उठकर स्नानादि कार्य से निवृत हो ईश्वरभक्ति, वेदपाठ, भजन- कीर्तन, मौन व्रत पालन, एक समय भोजन आदि कार्य शुभ माने गये हैं। विवाह संस्कार, जातकर्म संस्कार, गृह प्रवेश आदि सभी मंगल कार्य पूर्णतः निषेध माने गये हैं। पौराणिक मान्यतानुसार चौमासा में किये गये शुभ कार्य का फल प्राप्त नहीं होता है। इसलिए इस काल में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। सनातन समाज में पालन किये जाने वाले कुछ नियम के कारण भी इसमें कोई शुभ कार्य नहीं किया जाता है। इस काल में किसी प्रकार के कोई भी मुहूर्त नहीं निकाले जाते है। यहां तक कि समाज के पुरोहित भी इस काल में कोई भी शुभ कार्य करने के लिए मुहूर्त निकालने से मना कर देते हैं। इस काल में नशीले पदार्थों का सेवन भी वर्जित है। चातुर्मास की शुरूआत देवशयनी एकादशी से होती है, जो इस वर्ष 2023 में 29 जून को पड़ रही है, और इसकी समाप्ति 23 नवंबर को कार्तिक मास की एकादशी पर खत्म होगी। इस बीच सभी शुभ कार्य जैसे शादी समारोह आदि कार्य नहीं किये जाते हैं। क्योंकि उस समय विष्णु भगवान अपनी निद्रा में होते हैं। इसलिए चातुर्मास शुरू होने पर इनकी पूजा की जाती है, और उनके निद्रा से उठने पर ही शादी आदि मांगलिक कार्य शुरू हो जाते हैं। चौमासा के सभी माह त्योहारों से भरे होते हैं। चौमासा के समाप्त होते ही शादी, मुंडन आदि धार्मिक कार्य शुरू हो जाते हैं। देव उठनी एकादशी से ही विवाह कार्य प्रारंभ हो जाते हैं। इस दिन देवी तुलसी का विवाह होता है। कहीं-कहीं इसे छोटी दीवाली भी कहा जाता है। चातुर्मास के सम्बन्ध में प्रचलित पौराणिक कथा के अनुसार एक बार योगनिद्रा ने भगवान विष्णु की कठोर साधना की, और विष्णु को प्रसन्न कर लिया। प्रसन्नतापूर्वक मंद- मंद मुस्कुराते भगवान विष्णु से वह बोली- आपने सभी को अपने अंदर स्थान दिया है। मुझे भी अपने अंगों में स्थान देने की कृपा करें। लेकिन विष्णु के शरीर में कोई भी ऐसा स्थान नहीं था जहां वह योगनिद्रा को स्थान दे सकें। उनके शरीर में शंख, चक्र, शार्गधनुष व असि बाहुओं में अधिष्ठित हैं, सिर पर मुकुट है, कानों में मकराकृत कुण्डल हैं, कन्धों पर पीताम्बर है, नाभि के नीचे के अंग वैनतेय (गरुड़) से सुशोभित है। ऐसे में विष्णु के पास सिर्फ नेत्र ही बचे थे, जिसमें वे किसी को स्थान दे सकते थे। इसलिए विष्णु ने योगनिद्रा को अपने नेत्रों में रहने का स्थान दे दिया और कहा कि तुम चातुर्मास के चार मास तक मेरे नेत्रों में ही वास करोगी। उसी दिन से भगवान विष्णु देवशयनी एकादशी से लेकर देवउठनी एकादशी तक निद्रा अवस्था में रहते हैं। और इन चार मासों को चातुर्मास्य कहा जाता है। जिसमें सभी देवता प्रसुप्त अवस्था में रहते हैं। इसलिए इस काल को देवताओं के शयन का काल भी कहा जाता है। इसी कारण इन चार महीनों में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया जाता। एक अन्य पौराणिक मान्यतानुसार चातुर्मास की अवधि में ही आषाढ़ के महीने में भगवान विष्णु ने वामन रूप में अवतार लिया था, और राजा बलि से तीन पग में सारी सृष्टि ही दान में ले ली थी। उन्होंने राजा बलि को उसके पाताल लोक की रक्षा करने का वचन दिया था। इसीलिए श्रीविष्णु अपने समस्त स्वरूपों से राजा बलि के राज्य की पहरेदारी करते हैं। मान्यता है कि इस अवस्था में भगवान विष्णु निद्रा में चले जाते हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार चातुर्मास के इन चार महीनों में भगवान शिव धरती का कार्य भार संभालते हैं। इसीलिए चातुर्मास में भगवान शिव की विशेष पूजा अर्चना किये जाने की परिपाटी है। इन चार महीनों मे भगवान शिव पृथ्वीं का भ्रमण करते हैं। इन चार महीनों में भगवान शिव की पूजा - अर्चना करने वाले व्यक्तियों को शिव का विशेष आशीर्वाद प्राप्त होता है। देवशयनी एकादशी से विष्णु योग निद्रा में चले जाते हैं। इसके बाद भगवान विष्णु कार्तिक मास की एकादशी पर जाग्रत अवस्था में आते हैं। भगवान शिव के भक्तों का प्रिय मास श्रावण भी चातुर्मास की अवधि में ही आता है। मान्यतानुसार सावन के महीने में भगवान शिव की उपासना होने से उनकी कृपा सरलता से मिलती रहती है। श्रावण मास के सोमवार को भक्तों द्वारा शुभ माना जाता है। इसलिए शिवभक्त इस अवधि के दौरान उपवास के लिए विशेष तैयारी करते हैं। इस वर्ष 2023 में चातुर्मास की अवधि में ही श्रावण मास में अधिकमास भी पड़ रहा है। श्रावण मास अधिकमास होने के कारण इस वर्ष दो महीने के बराबर सावन मास होगा और तिथि के अनुसार उनसठ दिनों का यह सावन होगा। अधिकमास को पुरुषोतम मास भी कहा जाता है। ■

सिनेमा के गोल्डन ईरा के हीरो भी रहे हैं फैशन एंड स्टाइल आइकॉन

डॉ.महेश चंद्र धाकड़

रील लाइफ का फैशन एंड स्टाइल रीयल लाइफ में भी दखल देते रहे हैं। फिल्मों को देखकर युवा हों या फिर उम्रदराज लोग, अपना फैशन और स्टाइल चुनते रहे हैं। सिनेमा के गोल्डन ईरा के कई हीरो फैशन एंड स्टाइल आइकॉन रहे हैं। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के जमाने में देवानंद का ड्रेसिंग सेंस, राज कुमार की स्टाइल, जितेंद्र का सफेद रंगत वाला फैशन ट्रेंड्स, सुपर स्टार राजेश खन्ना का गुरु कुर्ता और अमिताभ के बड़े कॉलर्स के शर्ट और बैल बॉटम दिल-ओ - दिमाग पर छाए रहे। फिल्म स्टार्स के फैशन एंड स्टाइल्स पर नजर डालें तो उनमें कुछ खास लोकप्रिय रहे हैं। उनके प्रति दीवानगी बुलंद रही है।

अमिताभ बच्चन

जंजीर, दीवार, डॉन, मुकद्दर का सिकंदर, लावारिस, शराबी, नसीब, सिलसिला, याराना, दोस्ताना जैसी हिट फिल्मों के जरिए बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने स्टाइलिश 'हीरो' की इमेज सिनेमा को दी। वह एक्टिंग के साथ स्टाइलिंग और फैशन सेंस के लिए भी मशहूर रहे। आज उम्रदराज होने के बावजूद बॉलीवुड के शहंशाह को फैशन आइकन का रूतवा हासिल है। राजेश खन्ना के बाद सुपर स्टार के सिंहासन पर विराजे अमिताभ ने एक फिल्म में बेल बाटम और फ्लेयर्ड पेंट पहनना क्या शुरू किया, युवाओं ने उनको फॉलो करना शुरू कर दिया। ये स्टाइल और हेयर कट इतना लोकप्रिय हुआ कि देखते ही देखते ट्रेंड बन गया। 'याराना' का गीत 'सारा जमाना हसीनों का दीवाना' में लाइट वाली जैकेट पहन डांस किया तो युवा दीवाने हो गए। आज भी उनके वार्डरोब में ब्राइट कलर्स कलेक्शन है। उन्होंने नियॉन कलर के जूतों से लेकर लाल पेंट सूट तक हर अनूठे अंदाज वाले ड्रेस और स्टाइल पहनी हैं। टीवी रियलिटी शो 'कौन बनेगा करोड़पति' के हर सीजन में नए अंदाज में नजर आते हैं। हर एपिसोड में अलग लुक, बंद गले से लेकर कॉस्टिक सूट तक में नजर आए हैं। अमिताभ बच्चन हुड़ी लवर भी है। वह अक्सर हुड़ी में दिखते हैं। कई बार फिल्मों और केबीसी में भी अपना हुड़ी लव दिखा चुके हैं। कोई शूट हो या फिल्म स्क्रीनिंग ज्यादातर वह हुड़ी पहनना पसंद करते हैं।

राजेश खन्ना

बॉलीवुड के पहले 'सुपर स्टार' राजेश खन्ना का दौर बेहद खास रहा है। उनका गुरू कुर्ता, नेपाली टोपी, मुस्कुराने का अंदाज और गर्दन झटकने का स्टाइल किसको याद नहीं आता। राजेश खन्ना जैसा स्टारडम आज तक कोई स्टार हासिल न कर पाया। राजेश साधारण चेहरे-मोहरे वाले थे, लेकिन न जाने क्या जादू था, लड़कियां-लड़के उनके दीवाने थे। उनकी हेयर स्टाइल, शर्ट, कुर्ते, सूट आदि पहनने के तरीके से लेकर सब कुछ बेहद पसंद किया जाता था। गर्दन को टेढ़ा कर आंखों को हल्के से झपकाते जब राजेश मुस्कुराते थे तो दर्शक उनकी इस अदा पर फि दा हो जाते थे। राजेश अपनी शानदार आवाज में आहिस्ता-आहिस्ता जब डायलॉग बोलते, तो दर्शक सम्मोहित से हो जाते। बेशक सन 69 से 75 तक का दौर उनका गोल्डन पीरियड था। उनकी स्टारडम सिर चढ़कर बोल रही थी। लोग उनमें अपनी झलक पाते थे। उनकी स्माइल पर लड़कियां मर-मिटा करती थीं। उनकी कई फिल्में हिट हुईं। लेकिन 'आनंद', 'अराधना', 'कटी पतंग', 'हाथी मेरे साथी' जैसी फिल्में कालजयी मानी जाती हैं।

देवानंद

'द ग्रेगरी पेक ऑफ इंडिया' के नाम से मशहूर देव आनंद ने अपनी स्टाइल और फैशन सेंस से हिंदुस्तानी फैशन की दुनिया को प्रभावित किया। उनके स्कार्फ, आईवियर, टोपी आज भी याद किए जाते हैं। उनके फैशन से जुड़ा काले कोट का किस्सा तो बहुत ही दिलचस्प है। वह करियर के शुरूआती दौर में फिल्मों में काला कोट और सफेद शर्ट पहनते थे। इसमें वह गजब ढाते थे, ये ड्रेस उस समय ट्रेंड बन गई थी। जहां लड़कियां उन पर मरती थीं, वहीं लड़के भी इस स्टाइल को कॉपी करते थे। बताते हैं देवानंद के काले कोट को सार्वजिक जगह पर पहनने पर कोर्ट ने रोक लगा दी थी। क्योंकि उन्हें देख लड़कियां सुसाइड कर लेती थीं। देवानंद को हिट फिल्म 'काला पानी' में काले कोट पहनने से रोक दिया, निर्माताओं को डर था, देवानंद के काले कोट की लड़कियां दीवानी हैं, कहीं वे देखकर छत से कूद न जाएं। हांलाकि सुसाइड वाली बातों में कितनी सच्चाई है कहना मुश्किल है। देवानंद को बॉलीवुड का पहला स्टाइल आइकॉन कहा जाए तो गलत न होगा। क्योंकि केवल काले कोट ही नहीं बल्कि उनकी हेयरस्टाइल भी लोग पसंद करते थे। उनके पफी हेयरस्टाइल की दीवानगी इस कदर थी कि फिल्म 'प्यार मोहब्बत' के बाद लड़कों ने बालों का स्टाइल देवानंद जैसा बना लिया। बाल हों या फिर काला कोट सब फैशन ट्रेंड बन गया। इसमें उनकी हैट भी शामिल रही। फिल्म 'ज्वैल थीफ' में उनकी अलग-अलग स्टाइल की हैट के सब दीवाने हो गए। रंगीन स्वेटर और गले में स्कार्फ भी उनका ही बनाया ट्रेंड था। उनके चलने के स्टाइल व गर्दन झुकाकर बातें करने के भी सभी दीवाने थे।

जितेंद्र

बॉलीवुड के 'जंपिंग जैक' के रूप में मशहूर रहे जितेंद्र के फैशन का भी जबर्दस्त जलवा रहा है। बॉम्बर जैकेट के साथ शर्ट-पैंट के साथ सफेद 'जूते उनकी खास पहचान बने। जितेंद्र अपने जमाने में जवां दिलों की धड़कन थे, उनकी फैशन और स्टाइल में सफेद रंग ने रंग जमाया। स्क्रीन और ऑफ स्क्रीन सफेद शर्ट, टी-शर्ट, सफेद पैंट, सफेद जूतों ने सबको लुभाया। वर्ष 1983 की फिल्म 'हिम्मतवाला' के एक गाने में सफेद टी-शर्ट और सफेद पैंट के साथ-साथ 1970 में रिलीज फिल्म 'हमजोली' में सफेद टर्टल-नेक टी-शर्ट, सफेद पैंट में उन्हें देखा तो दर्शक देखा-देखी सफेद कपड़े, सफेद जूते पहनने लगे।

राजकुमार

अपने दौर के बेहद लोकप्रिय फिल्म स्टार राज कुमार का जानी सरीखे कई संवाद अदायगी के अंदाज ही नहीं बल्कि पहनावा भी निराला था। उन्होंने फैशन आइकन के रूप में भी खास पहचान बनाई। पूरी तरह से सिलवाए गए सूट से लेकर, कॉलर बैंड तक, बिना बटन वाली शर्ट के साथ, वह माइक्रो शॉर्ट्स भी खूब पहनते थे, कुर्ता-पायजामा, खड़ाऊ (लकड़ी के सैंडल) पहनना पसंद था। उन्हें दर्शक शायद ही किसी फिल्म में खूबसूरत मफलर बिन देखते थे। ■

प्रकृति की सुंदरता, सुखद जीवन शैली देखनी है तो एक बार कश्मीर जरूर जाएं

प्रीटी

धरती का स्वर्ग कहा जाने वाला पूरा कश्मीर ही मशहूर पर्यटन स्थल है मगर फिर भी यहां की कई जगहों की अलग-अलग खासियतें हैं। सबसे पहले बात श्रीनगर शहर की करें तो यह बहुत ही खूबसूरत शहर है। जहाँ नदियों, झीलों, वादियों और पहाड़ों के मनोरम दृश्य मन मोह लेते हैं। कश्मीर एक ऐसा पर्यटन स्थल है, जिसे भारत देश की शान कहा जाता है। यह दुनिया के सबसे ज्यादा लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है, जहाँ दुनियाभर के टूरिस्ट खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों का दीदार करने आते हैंककश्मीर एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रकृति की सुंदरता, सुखद जीवन शैली और स्थानीय रंगों का मेल दिखाई देता है। यहाँ पर पर्यटकों को कई दिलचस्प चीजें भी देखने को मिलती हैं। धरती का स्वर्ग कहा जाने वाला पूरा कश्मीर ही मशहूर पर्यटन स्थल है मगर फिर भी यहां की कई जगहों की अलग-अलग खासियतें हैं। सबसे पहले बात श्रीनगर शहर की करें तो यह बहुत ही खूबसूरत शहर है। जहाँ नदियों, झीलों, वादियों और पहाड़ों के मनोरम दृश्य मन मोह लेते हैं। यहाँ कई दिलचस्प दुर्ग, संग्रहालय और मंदिर हैं। यहाँ की सुप्रसिद्ध डल झील में आपको नौकायन और रोमांटिक रातें गुजारने का मौका मिलता है।

शालीमार बाग

शालीमार बाग श्रीनगर का एक अन्य आकर्षक स्थल है। इस बाग में खूबसूरत फूलों से लदे कई पेड़ हैं। इसके अलावा, यहाँ शांत माहौल, खुशबूदार फूलों, बाग की सुंदरता और बहुत सारे आकर्षक स्थान हैं।

शंकराचार्य मंदिर

शंकराचार्य मंदिर कश्मीर के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह कश्मीरी पंडितों के लिए आस्था का प्रमुख स्थल तो है ही साथ ही देश भर से कश्मीर घूमने आने वाले पर्यटक भी यहाँ बड़ी संख्या में आते हैं। साथ ही यहाँ प्रमुख हिन्दू त्योहारों पर तमाम कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

कमान सेतु

कमान सेतु पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) तक फैला है और यह एक ऐसा पुल है जिससे उरी में पर्यटन की संभावनाओं को तो बढ़ावा मिला ही है साथ ही यहां आने वाले लोगों को समकालीन इतिहास को जानने का मौका भी मिला है। कश्मीर घाटी को पीओके से जोड़ने वाले कमान पुल की सुरक्षा में हमेशा बड़ी संख्या में सैनिक तैनात रहते हैं। यह पुल एक ऐसी नदी के ऊपर है जो भारत और पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा के रूप में मानी जाती है। लेकिन अब इस पुल को पर्यटकों के लिए खोले जाने के बाद चीजें बदल गई हैं। इस पुल को कमान सेतु के साथ ही अमन सेतु भी कहा जाता है।

दूधपथरी

श्रीनगर से 45 किलोमीटर दूर लोकप्रिय पर्यटन स्थल दूधपथरी में आपको खूबसूरत नजारे तो देखने को मिलेंगे ही साथ ही आपको यहां कश्मीर की स्पेशल नून चाय, मक्के की रोटियां और सरसों के साग का स्वाद भी चखने को मिलेगा।

बादामवारी उद्यान

बादामवारी बाग में पतझड़ के मौसम में बादाम के पेड़ों पर फूल खिलते हैं जिसको देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते हैं। दरअसल कश्मीर में एक चलन है कि सुहावने मौसम का स्वागत श्रीनगर के इसी बादामवारी बाग से किया जाता है।

गुलमर्ग

बारामूला जिले के गुलमर्ग में हिमपात देखकर या पड़ी हुई बर्फ में विभिन्न प्रकार के स्नो गेम्स खेल कर पर्यटकों के चेहरे खिल जाते हैं। साथ ही यहां तक आने के लिए गोंडोला राइड का सफर भी बेहद रोमांचकारी होता है। नयनाभिराम दृश्य तो यहां हैं ही। गुलमर्ग में कांच का इग्लू भी पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। ■

बबूल का पेड़

बड़ा भाई अपने छोटे भाई से जब हुआ पराया

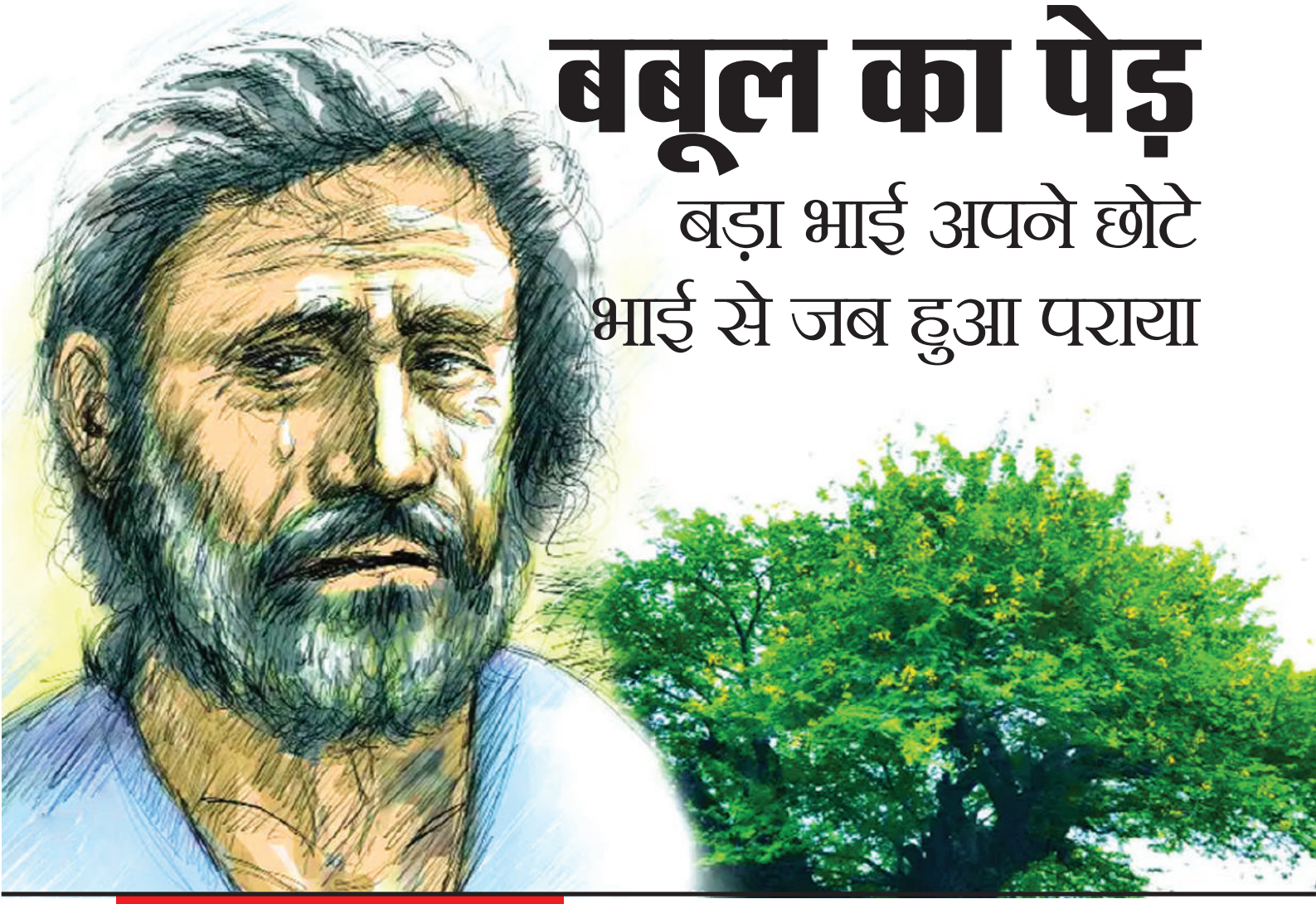

यह सब सुन कर पल्लवी के तो होश उड़ गए। उसे लगता था कि उस के ससुर का तो कोई अपना है ही नहीं, जो उन्हें अपने साथ ले जाएगा, और इतना बड़ा बंगला सिर्फ उस के हिस्से ही आएगा।

पिंकी खुराना

कमरे में प्रवेश करते ही नीलम को अपने जेठजी, जिन्हें वह बड़े भैया कहती थी, पलंग पर लेटे हुए दिखाई दिए। नीलम ने आवाज लगाई, भैया, कैसे हैं आप? कौन है? एक धीमी सी आवाज कमरे में गूंजी। मैं, नीलम, नीलम ने कहा। बड़े भैया ने करवट बदली। नीलम उन को देख कर हैरान रह गई। क्या यही हैं वे बड़े भैया, जिन की एक आवाज से सारा घर कांपता था, कपड़े इतने गंदे जैसे महीनों से बदले नहीं गए हों, दाढ़ी बढ़ी हुई, जैसे बरसों से शेव नहीं की हो, शायद कुछ देर पहले कुछ खाया था जो मुंह के पास लगा था और साफ नहीं किया गया था। हाथपैर भी मैलेमैले से लग रहे थे, नाखून बढ़े हुए। उन को देख कर नीलम को उन पर बड़ा तरस आया। तभी नीलम का पति रमन भी कमरे में आ गया। बड़े भाई को इस दशा में देख कर रमन रोने लगा, भैया, क्या मैं इतना पराया हो गया कि आप इस हालत में पहुंच गए और मुझे खबर भी नहीं की। भैया से बोला नहीं जा रहा था। उन्होंने अपने दोनों हाथ जोड़ दिए और कहने लगे, किस मुंह से खबर करता छोटे, क्या नहीं किया मैंने तेरे साथ। फिर भी तू देखने आ गया, क्या यह कम है। नहीं भैया, अब मैं आप को यहां नहीं रहने दूंगा। अपने साथ ले जाऊंगा और अच्छी तरह से इलाज करवाऊंगा, रमन सिसकते हुए कह रहा था। नीलम को याद आ रहे थे वे दिन जब वह दुल्हन बन कर इस घर में आई थी।

उस के मातापिता ने अपनी सामर्थ्य से ज्यादा दहेज दिया था लेकिन मनोहर भैया हमेशा उस का मजाक उड़ाते थे। उस के दहेज के सामान को देख कर रमन से कहते, क्या सामान दिया है, इस से अच्छा तो हम लड़की को सिर्फ फूलमाला पहना कर ही ले आते। उन की शादी अमीर घर में हुई थी, लेकिन रमन की ससुराल उतनी अमीर नहीं थी। इसलिए वे हमेशा उस का मजाक उड़ाते थे। रोज-रोज के तानों से नीलम को बहुत गुस्सा आता, पर रमन के समझाने पर वह चुप रह जाती। फिर भी बड़े भैया के लिए उस के दिल में गांठ पड़ ही गई थी। उन से भी ज्यादा तेज उन की पत्नी शालू थी जो बोलती कम थी पर अंदर ही अंदर छुरियां चलाने से बाज नहीं आती थी। माता-पिता की मृत्यु के बाद घर में मनोहर भैया की ही चलती थी। सब कुछ उन से पूछ कर होता था। एक तो मनोहर बड़े थे, दूसरे, वे एक अच्छी कंपनी में अच्छे पद पर थे। उन की शादी भी पैसे वाले घर में हुई थी जबकि रमन न सिर्फ छोटा था बल्कि एक छोटी सी दुकान चलाता था। उस की शादी एक साधारण घर में हुई थी। उस की घरेलू स्थिति ठीक नहीं थी। रमन को इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था, वह न सिर्फ अपने बड़े भाई को बहुत प्यार करता था बल्कि उन की हर बात को मानना अपना कर्तव्य भी समझता था। मनोहर अपने छोटे भाई को वह प्यार नहीं देते थे जिस का वह हकदार था, बल्कि हमेशा उस की बेइज्जती करने के बहाने ढूंढ़ते रहते।

वे हमेशा यह जतलाना चाहते थे कि घर में सिर्फ वे ही श्रेष्ठ हैं और बाकी सब बेवकूफ हैं। नीलम, कहां खो गईं। चलो, भैया का सामान पैक करो, इन को हम अपने साथ ले जाएंगे, रमन की आवाज सुन कर नीलम वापस वर्तमान में आ गई। भैया, प्रिया नहीं आती क्या आप से मिलने? नीलम ने पूछा। आती है कभी-कभी, लेकिन वह भी क्या करे। उस की अपनी गृहस्थी है। हमेशा तो मेरे पास नहीं रह सकती न, भैया रुक-रुक कर बोल रहे थे। और राजू और पल्लवी कहां हैं? नीलम ने पूछा। राजू तो ऑफिस गया होगा और पल्लवी शायद किसी किटी पार्टी में गई होगी, भैया शर्मिंदा से लग रहे थे। नीलम को इसी तरह के किसी जवाब की उम्मीद थी। उसे अच्छी तरह याद है वह दिन जब उस की छोटी बहन सीढ़ियों से गिर गई थी तो वह हड़बड़ाहट में बिना किसी को बताए अपनी मां के घर चली गई थी। बस, इतनी सी बात पर मनोहर भैया ने बखेड़ा खड़ा कर दिया था कि ऐसा भी किसी भले घर की बहू करती है क्या कि किसी को बगैर बताए मायके चली जाए। उन दिनों भैया ही सारा घर संभालते थे। रमन भी अपनी सारी कमाई भैया के हाथ में दे देता था और कभी भी नहीं पूछता था कि भैया उन पैसों का क्या करते हैं जबकि भैया सब से यही कहते फिरते थे कि छोटे का खर्च तो वही चलाते हैं। छोटे की तो बिलकुल भी कमाई नहीं है। नीलम की सारी

तुझे एक वकील लाना पड़ेगा क्योंकि मैं यह बंगला तेरे नाम करना चाहता हूं जो धोखे से मैं ने अपने नाम करवा लिया था, मनोहर ने कहा। लेकिन मुझे यह घर नहीं चाहिए भैया, मेरे पास सब कुछ है, रमन ने कहा। मैं जानता हूं छोटे, तेरे पास सब कुछ है लेकिन जिंदगी ने मुझे यह सबक सिखाया है कि किसी से भी धोखे से ली हुई कोई भी वस्तु सदैव दुख ही देती है। मैं इतने सालों तक चैन से नहीं सो पाया और अब चैन से सोना चाहता हूं इसलिए मुझे मना मत कर और अपना हक वापस ले ले।

अच्छाइयां, सारी पढ़ाई-लिखाई, सारे गुण सिर्फ एक कमी के नीचे दब कर रह गए कि एक तो उस का मायका गरीब था दूसरे, पति की कमाई भी साधारण थी। सारे रिश्तेदारों, दोस्तों में शालू और मनोहर नीलम और रमन को नीचा दिखाने का प्रयास करते। नीलम को अपनी इस स्थिति से बहुत कोफ्त होती पर वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सकती थी क्योंकि रमन उसे कुछ भी बोलने नहीं देता था। एक बड़े पेड़ के नीचे जिस तरह एक छोटा पौधा पनप नहीं सकता वैसी ही कुछ स्थिति रमन की थी। पिता की मृत्यु के बाद मनोहर घर के मुखिया तो बन गए लेकिन उन्होंने रमन को सिर्फ छोटा भाई समझा, बेटा नहीं। बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति जो फर्ज होता है वह उन्होंने कभी नहीं निभाया। नीलम समझ नहीं पाती थी कि क्या करे? वैसे वह बहुत समझदार और शांत स्वभाव की थी, लेकिन कभी-कभी शालू और मनोहर के तानों से इतनी दुखी हो जाती कि उसे लगता कि वह रमन को ही छोड़ दे। रमन का चुप रहना उसे और परेशान कर जाता, लेकिन रमन को छोड़ना तो इस समस्या का हल नहीं था। रमन तो बहुत अच्छा था। बस, उस की एक ही कमजोरी थी कि वह बड़े भाई की हर अच्छी या बुरी बात मानता था और आंख बंद कर उन पर विश्वास भी करता था।

रमन के इसी विश्वास का मनोहर ने हमेशा फायदा उठाया। उस ने पुश्तैनी मकान भी अपने नाम करवा लिया और एक दिन नीलम और रमन को अपने ही घर से जाने को कह दिया। इतना कुछ होने पर भी रमन कुछ नहीं बोला और अपनी 4 साल की बेटी और पत्नी को ले कर चुपचाप घर से निकल पड़ा। उस दिन नीलम को अपने पति की कायरता पर बहुत गुस्सा आया, लेकिन जब रमन ही कुछ करने को तैयार नहीं था तो वह क्या कर सकती थी, पर मन ही मन उस ने सोच लिया था कि वह इस घर में अब कभी वापस नहीं आएगी और इस घर से बाहर रह कर ही अपनी और अपने परिवार की एक पहचान बनाएगी। अब नीलम की अग्निपरीक्षा शुरू हो गई थी। घर में पैसों की तंगी बनी रहेगी, यह तो नीलम को मालूम था क्योंकि संयुक्त परिवार में बहुत से ऐसे खर्चे होते हैं जिन का पता नहीं चलता, लेकिन एकल परिवार में उन खर्चों को निकालना मुश्किल हो जाता है। फिर भी नीलम ने हार नहीं मानी और जुट गई अपना एक समर्थ संसार बनाने में। सुबह मुंहअंधेरे उठ कर घर का कामकाज करती, उस के बाद कई बच्चों को घर पर बुला कर ट्यूशन पढ़ाती और फिर रमन के साथ दुकान पर चली जाती। नीलम के अंदर दुकान चलाने की गजब की क्षमता थी जो शायद अभी तक उस के अंदर सुप्त पड़ी थी। उस ने अपने मीठे व्यवहार, ईमानदारी और मेहनत से न सिर्फ अपनी दुकान को बढ़ाया बल्कि रमन का आत्मविश्वास बढ़ाने में भी उस का साथ दिया। बड़े भाई से अलग रह कर रमन को भी एहसास हो गया था कि वह कितना बुद्धू था और बड़े भाई ने उस का कितना फायदा उठाया। मनोहर ने सोचा था कि रमन कभी भी घर से नहीं जाएगा और अगर जाता है तो जाते वक्त उस के आगे हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाएगा या फिर नीलम ही कुछ भलाबुरा कहेगी पर वह हैरान था कि दोनों ने कुछ भी नहीं कहा बल्कि चुपचाप एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर घर से चले गए। वैसे भी वे रमन से चिढ़ते थे कि उस की पत्नी हमेशा उस का कहना मानती थी जबकि वह इतना समर्थ भी नहीं था और एक उन की पत्नी शालू है, जिस ने उन का जीना मुश्किल किया हुआ था। हर वक्त उसे कुछ न कुछ चाहिए। उस की फरमाइशें खत्म होने का नाम ही नहीं लेती थीं। मनोहर ने रमन को घर से तो निकाल दिया पर उन के अंदर आत्मग्लानि का भाव पैदा हो गया था। एक दिन रात को शराब के नशे में धुत्त हो कर मनोहर ने रमन को फोन किया, चल छोटे, घर आजा, भूल जा सब कुछ। लेकिन नीलम और रमन ने सोच लिया था कि अब उस घर में वापस नहीं जाना है। अब मनोहर को एक नया बहाना मिल गया था अपनेआप को बहलाने का कि उस ने तो उन दोनों को वापस बुलाया था पर वे ही वापस नहीं आए और गाहेबगाहे वे अपने रिश्तेदारों को कहने लगे कि वे दोनों अपनी मरजी से घर छोड़ कर गए हैं। नीलम तो हमेशा से ही रमन को उन से दूर करना चाहती थी, पर अंदर की बात तो कोई भी नहीं जानता था कि यह सब किया धरा मनोहर का ही है। रमन और नीलम ने दिनरात मेहनत की।

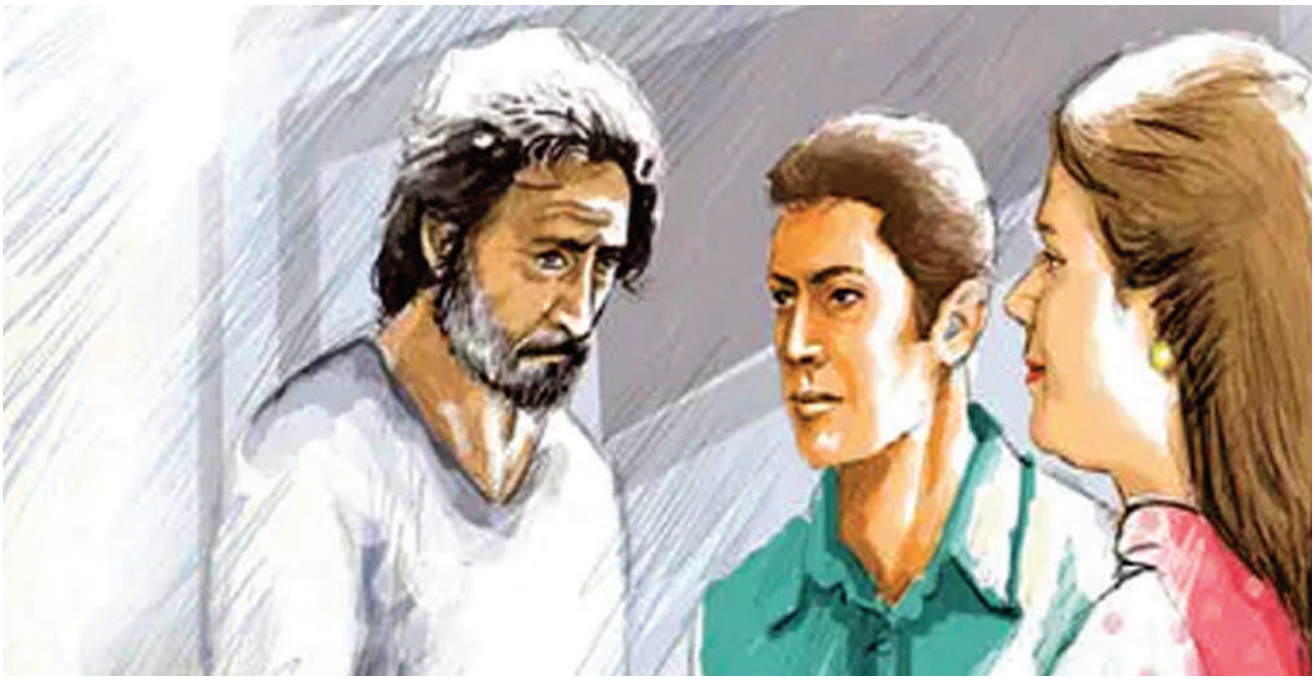

धीरे-धीरे उन की दुकान एक अच्छे स्टोर में बदल गई थी। अब उस स्टोर की शहर में एक पहचान बन गई थी। रमन और नीलम का जीवनस्तर भी ऊंचा हो गया था। उन के बच्चे शहर के अच्छे स्कूलों में पढ़ने लगे थे। अब मनोहर उन से नजदीकियां बढ़ाने की कोशिश करते पर वे दोनों तटस्थ रहते। रमन के घर छोड़ने के बाद दोनों भाइयों का आमना-सामना बहुत ही कम हुआ था। एक बार मनोहर के बेटे राजू की शादी में वे मिले थे, तब रमन ने महसूस किया था कि बड़े भाई की अब घर में बिलकुल भी नहीं चलती है। जो कुछ भी हो रहा था, वह बच्चों की मरजी से ही हो रहा था। बड़े भाई के बच्चे भी उन पर ही गए थे। वे बिलकुल ही स्वार्थी निकले थे। दूसरी मुलाकात मनोहर की बेटी प्रिया की शादी में हुई थी। बड़े भैया को अनेक रोगों ने घेर लिया था। वे बहुत ही कमजोर हो गए थे। तब भी उन को देख कर रमन को बहुत दुख हुआ था पर उस वक्त वह कुछ नहीं बोला था, लेकिन शालू भाभी के जाने के बाद तो जैसे भैया बिलकुल ही अकेले पड़ गए थे। उन का खयाल रखने वाला कोई भी नहीं था। शालू जैसी भी थी, पर अपने पति का तो खयाल रखती ही थी। राजू को अपने काम और क्लबों से ही फुरसत नहीं थी। वैसे भी उसे पिता के पास बैठ कर उन का हाल जानने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। अगर वह अपने पिता का ध्यान नहीं रख सकता था तो पल्लवी को क्या पड़ी थी इन सब बातों में पड़ने की? वह भी ससुर का बिलकुल ध्यान नहीं रखती थी। एक-एक बात रमन के दिमाग में चलचित्र की तरह घूम रही थी। पुरानी घटनाओं का क्रम जैसे ही खत्म हुआ तो रमन बोला, बड़े भैया, कल ही किसी से पता चला था कि आप गुसलखाने में गिर गए हैं। मुझसे रहा नहीं गया और आप का हाल पूछने चला आया। रमन का दिल रोने लगा कि खामखां ही वह इतने दिनों तक भैया से नाराज रहा और उन की खबर नहीं ली, लेकिन अब वह उन को अपने साथ जरूर ले जाएगा, लेकिन बड़े भैया ने जाने से इनकार कर दिया, मुझे माफ कर दे छोटे, सारी जिंदगी मैं ने सिर्फ तेरा मजाक उड़ाया है और अब जब मैं बिलकुल ही मोहताज हो चुका हूं और मेरे अपने मुझे बोझ समझने लगे हैं, इस वक्त मैं तेरे ऊपर बोझ नहीं बनना चाहता। नहीं भैया, ऐसा मत कहो। क्या मैं आप का अपना नहीं, मैं ने आप को अपना भाई नहीं बल्कि पिता माना है और एक बेटे का कर्तव्य है कि वह अपने पिता की सेवा करे, इसलिए आप को मेरे साथ चलना ही पड़ेगा, रमन ने विनती की। तभी नीलम भी बोल पड़ी, भैया, आप को हमारे साथ चलना ही पड़ेगा, हम आप को इस तरह छोड़ कर नहीं जा सकते। अब तक पल्लवी भी घर पहुंच चुकी थी। उस ने चाचा और चाची को देख कर इस तरह व्यवहार किया जैसे वह उन दोनों को जानती ही नहीं।

उस को इस बात की भी चिंता नहीं थी कि दुनियादारी के लिए ही कुछ दिखावा कर दे। उस का व्यवहार इस बात की गवाही दे रहा था कि अगर मनोहर को कोई अपने साथ ले जाता है तो उसे कोई परवा नहीं है। अभी तक मनोहर को आशा थी कि शायद पल्लवी उसे कहीं भी जाने नहीं देगी और उसे रोक लेगी, पर उस की बेरुखी देख कर मनोहर भैया उठ खड़े हुए, चल छोटे, मैं तेरे साथ ही चलता हूं, लेकिन उस से पहले तुझे मेरा एक काम करना पड़ेगा। वह क्या, भैया? रमन ने पूछा। तुझे एक वकील लाना पड़ेगा क्योंकि मैं यह बंगला तेरे नाम करना चाहता हूं जो धोखे से मैं ने अपने नाम करवा लिया था, मनोहर ने कहा। लेकिन मुझे यह घर नहीं चाहिए भैया, मेरे पास सब कुछ है, रमन ने कहा। मैं जानता हूं छोटे, तेरे पास सब कुछ है लेकिन जिंदगी ने मुझे यह सबक सिखाया है कि किसी से भी धोखे से ली हुई कोई भी वस्तु सदैव दुख ही देती है। मैं इतने सालों तक चैन से नहीं सो पाया और अब चैन से सोना चाहता हूं इसलिए मुझे मना मत कर और अपना हक वापस ले ले। यह सब सुन कर पल्लवी के तो होश उड़ गए। उसे लगता था कि उस के ससुर का तो कोई अपना है ही नहीं, जो उन्हें अपने साथ ले जाएगा, और इतना बड़ा बंगला सिर्फ उस के हिस्से ही आएगा। लेकिन ससुर की बात सुन कर उसे लगा कि इतना बड़ा घर उस के हाथ से निकल गया है। उस ने फटाफट बहू होने का फर्ज निभाया। उस ने मनोहर को रोकने की कोशिश की, पर मनोहर ने कहा, नहीं बहू, अब नहीं, अब मैं नहीं रुक सकता। तुम ने और मेरे बेटे ने मुझे बिलकुल ही पराया कर दिया है। इस बूढ़े और लाचार इंसान को अब अपने मतलब के लिए इस घर में रखना चाहते हो। नहीं, इस घर में तड़पतड़प कर मरने से अच्छा है मैं अपने भाई के साथ कुछ दिन जी लूं, लेकिन फिर भी मैं कहता हूं कि इस में तुम्हारी गलती कम है क्योंकि मैं ने ही बबूल का पेड़ बोया है तो आम की उम्मीद कहां से करूं। कुछ देर बाद नीलम और रमन मनोहर को ले कर अपने घर जा रहे थे और पल्लवी पछता रही थी कि उस ने अपने ससुर को नहीं रोका जिन के जाने से इतना बड़ा घर हाथ से निकल गया। ■

पर्यावरण की महान चिंता

पर्यावरण सुधारने के लिए जो भी सोचेंगे लकड़ी की पुरानी आरामदायक कुर्सी पर बैठकर भी सोचेंगे और संकल्प लिया कि कुर्सी पर विराजने के बाद आंख मींच कर कभी सोच विचार नहीं करेंगे बल्कि पूरी आंखें खोलकर ही सोचेंगे।

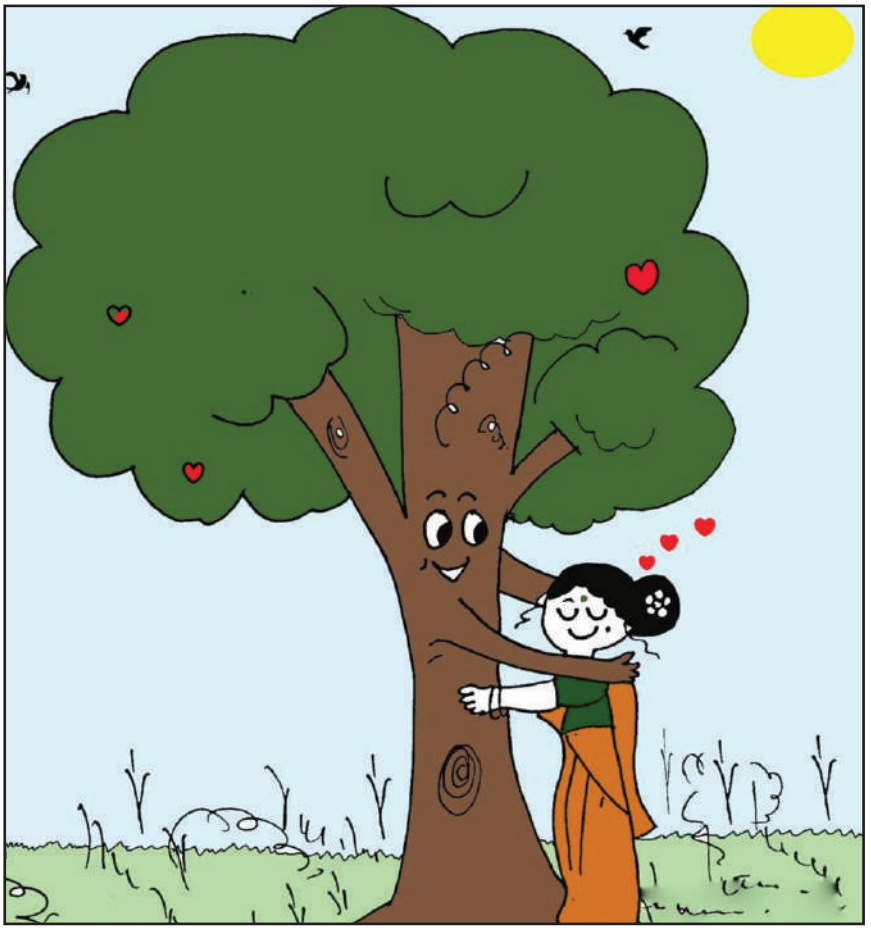

संतोष उत्सुक

बहुत जतन किए लेकिन पर्यावरण को फायदा नहीं हुआ। गुलदस्ते, प्रतियोगिताएं, रैलियां, भाषण, पुरुस्कार, वृक्षारोपण, सेल्फियां, खबरें और भी न जाने क्या क्या उपायों में शामिल हुए लेकिन कुल मिलाकर बात बन नहीं रही थी। सार्वजनिक रूप से वह यही कहते रहे कि पर्यावरण रक्षा की हर दिशा में विकास हुआ है लेकिन उन्हें पता था कि हुआ क्या है और क्या नहीं हुआ। चुनाव कभी भी आ सकते हैं इस बात का उन्हें संजीदा एहसास था इसलिए भी उनकी चिंता बढ़ती जा रही थी। उन्हें यह भी पता था कि चुनाव में पर्यावरण नाम की कोई चीज मुद्दा नहीं होती लेकिन इस बार की चिंता में उनकी पवित्र आत्मा भी शामिल थी इसलिए अब उन्हें नए ढंग से चिंता करनी ही थी। पर्यावरण को कुछ संजीदा फायदा हो इसलिए उन्होंने निश्चय लिया कि वे जीवन शैली ही बदल डालेंगे। कल से रोज जमीन पर बिछाई दरी पर बैठकर कुछ मिनट तक आंखें वाकई बंदकर चिंतन करेंगे। आज तक उन्होंने कोई भी कार्य ध्यान से नहीं किया लेकिन अब रोज ध्यान लगाया करेंगे ताकि उनके विचार शुद्ध हों उनमें आत्मिक शक्ति बढ़े। यह शुभ कार्य घर में नहीं हो पाएगा यह मानकर उन्होंने निर्णय लिया कि पडोस के पार्क में करेंगे वही पार्क जिसे एक बार बनाने के बाद बिलकुल भुला दिया गया। उन्होंने अगला संकल्प लिया कि अपना पहनावा भी बदल देंगे और रोज नीला या हरा ही पहना करेंगे। हर रविवार को सिर्फ सफेद वस्त्र ही धारण करेंगे ताकि शांति स्थापित रहे और उनके व्यक्तित्व से शांति का ही सम्प्रेषण हो। पर्यावरण सुधारने के लिए जो भी सोचेंगे लकड़ी की पुरानी आरामदायक कुर्सी पर बैठकर भी सोचेंगे और संकल्प लिया कि कुर्सी पर विराजने के बाद आंख मींच कर कभी सोच विचार नहीं करेंगे बल्कि पूरी आंखें खोलकर ही सोचेंगे। गहन सोच के लिए बार बार ठोड़ी के नीचे उंगलियां चिपकाकर सोचा करेंगे, सिर पर हाथ रखकर कभी न सोचेंगे क्यूंकि इससे गलत सन्देश अपने आप ही प्रेषित हो जाता है कि बंदा परेशान है। उन्होंने जीन्स पहनकर काफी मंथन किया और करवाया भी लेकिन बात नहीं बनी। इस बार फिर से बढ़िया ब्रांड की नीले रंग की नेकर पहनकर, सफेद रंग की टी शर्ट जिस पर एक चिड़िया की तस्वीर और लव नेचर भी छपा था कई बार पहनी। हरे रंग की कैप लगाकर भाषण सुने और दिए और हाथ में सफेद दस्ताने पहनकर समाज व प्रशासन के जिम्मेदार लोगों के साथ दौड़ लगाई। लेकिन अगली ही सुबह फिर लगने लगा कि कुछ ठोस नहीं हुआ। दिमाग फिर कहने लगा कि कुछ और सोचो। फिर एक दिन प्लास्टिक का सामान निजी तौर पर घर से बाहर करने के लिए लिस्ट बनाई लेकिन इतने सालों से व्यवहारिक उपयोगिता व पत्नी की डांट के कारण लिस्ट फाड़नी पड़ी। पत्नी ने कहा मैं प्लास्टिक का सारा सामान जोकि मुझे बहुत प्रिय है घर से बाहर करने के लिए तैयार हूं ताकि पर्यावरण जल्दी सुधर जाए लेकिन धातुओं का नया सामान लाने के लिए बजट कहां से आएगा। घर का वातावरण ठीक रखने के लिए पहले यह बताइए। फिलहाल आप कल मेरे साथ मॉल चलें ताकि शौपिंग हो सके। मुझे काफी सामान खरीदना है। यह बात रात के वक़्त हुई थी, सोते हुए उन्होंने आज से योग का सहारा लेने का निश्चय किया। अपनी सेहत को ठीक रखने के लिए हलके फुलके व्यायाम करने के बाद रोजाना शवासन करने का निर्णय किया ताकि पहले अपना और घर का स्वास्थ्य ठीक रहे और जीवन में शान्ति रहे। बदली हुई परिस्थितियों के कारण पर्यावरण सुधार के लिए उनका महत्वपूर्ण निर्णय फिर से स्थगित हो गया। ■

मेरे गाँव की लड़कियाँ...

गाँव की छाती पर पैर रखकर सरपट दौड़ती जा रही हैं
मेरे गाँव की लड़कियाँ
हाँफती-काँपती, सिर पर पैर रखकर भागती जा रही हैं ये नन्हीं किशोरियाँ
घर लीपतीं, चूल्हा-जोड़तीं, बासन माँजती, घर का सौदा-सुलुफ लातीं, गाली खातीं
कब बन गईं ये अदद जीवित मनुष्य!

बभनटोले से लेकर जुलहाटोल तक टुनटुना रहा है नए समय का औजार!
गालियों के स्वस्तिवाचन से आकाश कट कर गिर रहा
सूर्य की तरफ मुँह करके दैव को अरोगती ये मातायें
उनके पैदा होते ही मर जाने का अरण्य श्राप जाप रहीं
दबी फुसफुसाहटों में इन अभागिनों के उरहर जाने की कथाएँ
प्रागैतिहासिक काल से सुन रहा है स्तब्ध गाँव

एक तरफ बेमेल विवाह का गड्ढा है दूजी तरफ कमउम्र का मातृत्व
निशीथ-रात्रि या सुनसान दुपहरों में कौन दैत्य इन बालिकाओं को गायब कर रहा
कौन बरगला रहा है इन सिया-सुकुमारियों को
हर छमाहे, साल बीतते कोई न कोई लड़की भाग जाती है
इस विकट दुष्चक्र को तोड़ना क्या संविधान में लिखना भूल गए थे मेरे पूर्वज
और उनके माताओं-पिताओं ने उन्हें बस समझा जाँघ पर बिठाकर पुण्य अर्जने का सामान

-उपासना झा

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India
NOVA®
DAIRY PRODUCTS
Serving since 1991
Fresh Dahi
Ghee
Plain Chach
घी, दूध, दही, छाछ,
पनीर और डेयरी व्हाईटनर
STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.
E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com
Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)
For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050